

ST. JOSEPH'S COLLEGE  
NAINTIAL

COLLEGE EXHIBITION  
1998

# **COLLEGE REVIEW**

## **1998**



**ST. JOSEPH'S COLLEGE,  
NAINITAL**

**CONDUCTED BY CHRISTIAN BROTHERS**

---

## FAREWELL

---



Mrs. Pam Medley or better known to a multitude of ex-students as class 1 teacher, has left St. Joseph's to join her husband, Mr. Paul Medley, Principal of St. Andrew's School, Bhowali. Before starting his own school in Bhowali five years ago, Paul was a valued member of the staff at Sem. Pam was an excellent teacher, an outstanding but fair disciplinarian throughout her long span of 27 years of dedicated service in St. Joseph's. It was she who guided the first faltering steps of all newcomers to class 1 and to her, hundreds of young students attribute their success in studies during their years in Sem. We, at St. Joseph's would like to thank her very sincerely for her years of excellent work and to tell her how much she will be missed by the Staff and students alike. We wish her continued success in the teaching profession, happiness and God's blessings in her new endeavours for many years to come.

## अलगदर अनुवाद वा लाभात्मी



भूत्य, जोने का सम्बान न कुई मानो छोड़ सकता। तुमनियी ने सबसे पुरी गीज़ भूत्य ही है। भूत्य फिटाने के लिए पता नहीं, कान-कणा भानड़ केलाने पड़ते हैं। अगले भूत्य न लगे तो जल्ही पर कर्णी जलव आए। यह मानव कार्य से भी चुताने वाली न है। उनके लिए हो वह सबसे रवर्षिम वाह होते हैं। कामसोर व्यक्तियों के लिए हो कोई लमस्या ही उत्पन्न नहीं होती।

परन्तु, वास्तव में वन्धीर होकर इस विकाय में लोचा जाए तो यह निष्ठव्य निकलता कि भूत्य में जो सुख है, वह कुछन्है। वास्तव में भूत्य न होती सी परही पर नारक घटत आता। यदि भूत्य जान हो तो तादनी कुछ भी कार्य न करता। कर्वन न करने से उस जागृत तंदरी एवं दर्शिता का रखा होता।

भूत्य जाहाज में एक समस्या है। इस समस्या को कूर करने के लिए हमें उसके लिए नह-नए तरहों खोजनी है। भूत्य डनों जो न उत्पन्न, बोला है। भूत्या व्यक्ति हर तरह के कार्य करने को शीखत हो जाता है। तुमनियी में सब कार्य भूत्य फिटाने के लिए ही लिए जाते हैं। भूत्य फिटाने के लिए ही आनन्दी कार्य करता है।

अगर भूत्य न लगती हो, वह हम द्रुतता विकास कर पाते ? यह एक विद्यारथीय प्रश्न है। यदि भूत्य न लगती तो कोई रामबाला उत्पन्न नहीं होती। यदि रामबाला जानना नहीं होती, तो अदिष्मार नहीं होते। यदि अदिष्मार नहीं होते सी विकास नहीं होता। कर्मोंकि रामबाला के सम्बान ऐसु ही आविष्मार होते हैं और विकास के लघ में जापते आते हैं। अन्ततः विकास नहीं होता, तो गानव जीवन की नहता नहीं रहती। पृथ्वी का विकास वह गानवा ही जाता। न जान की जानव एवं पशु ने कोई अन्तर नहीं रखता।

अतः समस्याएं मानव के विकास का प्रसिद्धिकेन उत्पत्ती है। हर समस्या के बीचे कोई न कोई सार्थकता अवश्य होती है। सिवलों के दो पहलुओं की तरफ़।

## मेरे सपनों तभा आरतवर्ण



राजस्व विषय में भारत की गहरा, प्राचीनी गहरान् व बदल संस्कृति के बारा है। सच्चाय, हमारा देश किसना बदला है। यहीं क्या है यहीं को प्रकृति ! किसना गीरजमय है पहाड़ के इतिहास ! हमारा देश वह देश है, जहाँ ज्ञानीनामाल मैं, सर्वज्ञम्, भावन् रम्भता ने जन्म दिया था। यद्यपि कुछ हमें तक हमारे राष्ट्र पर पराधीनता के काले ऐसे बैठकाये हों परन्तु आज हमें, अरोहण के रूप में प्राच इन्हाँसे इस स्वर्णवता की रक्षा पूर्ण निष्ठा व लगान के लक्ष्यी होनी व राष्ट्र के हित में ऐसी कार्य करने होनी दिनसे कि भारत की इतिहास, भाव व मन्मान बढ़े।

मेरे हुए वे भी भारत की सेवक, जीवनगत व्यवहार में उत्तमी प्रबलों के लिए शानका स्वाम उत्तमन खोते हैं जिनके द्वारा इनका राष्ट्र बफलता तथा उन्नति की उत्क्राम लोटि अर्थित कर ताके तथा लक्ष्यहात् एक सशक्त व परिवर्तयन राष्ट्र में चरित्वीत हो जाते। आज हम एक वर्लंड राष्ट्र रक्षा विषय के प्रियालयम् लोकतंत्र के नामरिक हैं। यदि जनतंत्र के बाद की सिद्धियों का नहुन अध्ययन किया जाए तो यह सुर्दियोचन है कि भारत ने विद्वान् वर्णीय पद्धति वर्षी में, सन्मय प्रतीक होते हैं अद्वैतव्य प्रवासि का परिषद दिया है।

वे अपने सपनों पर भारत ऐसा छालता हूँ जहाँ कि सनुषित ग्रहिभाजी को उभरते के पूर्ण अवसर प्राप्त हो रखा भरत के भावी कर्त्तव्यार्थी को दिला दीसे भन के आनन्द को भोगने से विभिन्न न रक्षा जाए। यद्यपि आजादी के कुछ कर्म बाद तक हमारे देश में अविद्या का बोलबाला ज्ञानन्तु आज हमारी अभी भी अधिक जनता समावृत्त है। परन्तु अभी भी हमें शिक्षा के प्रधार व व्रतान् में काई छापर नहीं छोड़नी है। हमें कुछ के अनुरूप, गए तरीके अपनाने हैं एवं गहीनतान् लुप्ति उत्करणी व दीनों का उत्पादन करना है। इससे हमारी ज्ञानान् रिक्षिति में बहुआर आएगा। हमें औद्योगिकता के द्वेष से ग्रान्तिकारी परिवर्तन लाना है रक्षा रक्षा के द्वेष में भी आद्यनिकताम् हृषीकाशी से जात, ज्ञान व ज्ञान दोनों ज्ञानवत्ता करना है जिससे कि भारत की सुरक्षा व्यवस्था बहुदृढ़ रहे। हमें इत्येक देश में नवीन लोकों कर, अपना सर्वोत्तम ज्ञानी भावभूमि के लिए व्यापार करना है।

यदि हम हुवा जल्लेजनीय प्रगति को ही पर्याप्त नानकर रुक जाएं तो हम पुनः भद्रानता के अंकार में बहुत जाएंगे और भद्रानता व अंकार के इस मुग से निकल पाएँ असंभव होगा अर्थात् एक शिखित राष्ट्र की प्रगति असम्भव है।

## समय का सदृश्योग



“अब क्या प्रश्नाएँ होते, जब चिंहिता मुन गई थीं।”  
एकटील लोकोंकि इसी सर्वोत्तम पर प्रकाश आतही है कि वो जैसे समय का शिरस्यार बनता है। समय भी उसका बादव नहीं बनता और उसका अस्तित्व कानूनाद्वय के लिए बाल के पन्नी में तृप्ता ही जाता है। नानाय जीवन बहुत लम्बा होता है। हस्त वाण्मंगुर जीवन में जो मनुष्य समय की नहुआ छोड़नानी से बचत बन जाता है। वह कभी सकान नहीं हो पाता। समय का दुरुपयोग लालके मनुष्य को न कैवल धीरा और परालय मान होती है अपितु ऐसा कहने से उसको अन्दर एक चिंहित मुदा में डिया आलगा का दैत्य अधिरूप होकर जगत की समझ आ जाता है और उसका वह मात्र बोलार में जीर्ण मात्र बनाकर ही रह जाता है।

इतिहास लाई रहा है कि नानाय ने जब-जब समय के दिशुद्ध बनवार, उसे उपने अपीकूल करने का प्रयत्न किया है, तब-तब वही गृह जी खानी पड़ी है। ऐसी चिंहितनी प्रवलित है कि नेपोलियन ने चाटरलू के गुह में चुनौती का सदृश्योग नहीं किया था और परिषामस्वकर रहा जैसे अतीव गुम की जीवाज्ञा का गृह देखना बदा था वही दूसरी और महात्मा गांधी ने उपने जीवन में सकृतता के शिखार जो मात्र समय का सदृश्योग करने पर मुझ था।

काल की आत वही तीव होती है जो जीव द्वारा दृश्यों द्वारा बनने में विफल हो जाता है। उसी जीवन में कभी राजनेता प्राप्त नहीं हो सकती। जात से यारी पूर्व दोस्रे ने अपने जीवन में युक्तमें देते हुए कहा था। “जीवों कि जात का दिन दिन नहीं आएगा।” वर्षमान मुन झे गांधी में इत्युक्तमें की महाता और भी बहु जाती है। जात जब इन दृष्टि लक्ष्यकर अपने राजन की जीवाज्ञा करते हैं, जो हमें जारी और जात अदिसात ही बनव जाती है। रामायन में राजा दशरथ गतिहास का मार्जन हम जेवल समय का सदृश्योग बनके ही बन बदलते हैं। इसके अलादा हमारे जास घोड़े दूसरा जात नहीं है। हम चाहि रामय का सदृश्योग वातावरिक रूप में बनना चाहते हैं, तो हमें प्रत्येक जात को बढ़ावना चाहिए। जीवोंकि एक-एक पल के गांधीय ने ही जीवन बनाता है। जब तक हमारी अभिलाषा हम जीव मुकु राकारात्मक दृष्टि सुखनारम्भ करने वाली नहीं होती, तब तक हम जीवन में प्राप्ति नहीं कर सकते और देसे पर्व में पहुँ रहने वाली शशानकता और अनगिहता के हृष में मनुष्य की अवधा अधिक नहीं दिखता तथा वह जियती फे दाढ़ी का विश्वास बन बनकर रह जाता है। यदि हम जीवना भवित्वा दंसार के बदलकर नहीं लाप्त करने वाली अपनी से लिखने की विश्वास बनते हैं, तो उनका इसे उठाकर प्रत्येक वीर्ते हुए दृष्टि का अवलम्बन सदृश्योग बनना चाहिए।

जीवन की हम जटिल बातों में कुछ लोग भ्रमित संतोष को आलसद का पर्याप्त मान रखते हैं और वह गलत भावणा बनाकर निश्चिय हो जाती है ये भूल जाती है कि यह धारणा उन्हें नाज़ अकर्त्ती के पथ पर से ज्ञा सकती है। उन्हें को पथ पर नहीं। अब वह समय आ गया है, जब ऐसे लोगों को समाज के उत्तरों के लिए लंबोप और आलसद के बीच मेट सीखना ही होना और यह तथ्य समझना होना कि जीवन की गतिशीलता पर पूर्ण विश्व लगानी का अर्थ यात्रा नहीं है और बुझ भी नहीं।

**अंतः:** मैं कहना चाहता हूँ कि समय बढ़ा ही झूलकर होता है और अब वह बहता आ गया है जब हमें हमके भूल का उपित आकर्त्तन वह इसकी नहता और शरीर को समझना होगा। हम दिखते पर लड़ियर मारामताल पशुओं ने उपित ही कहा है—

‘समय जगात है हम सबको, छाटपट जग जाना ही होगा।

देख रिह-सिद्धान्त, लार्ट में लिखते लग जाना ही होगा।’

देख रिह-सिद्धान्त

10 n

## एक विद्यार्थी के जीवन में अध्यापक राज महान्

विद्यार्थन सर्व इन: प्रायान्



विद्या राजी इन को सर्वश्रेष्ठ जन की संज्ञा देकर भास्तीव भनीपिंडी ने विद्या के नाम से अति प्राचीन काल में ही रक्षीकार कर लिया था। एक वशु दण्ड मनुष्य की कथा जो अंतर है, वह तात्पत्ति में दृष्टि न विदा ही है। तत्पत्ति: हँसवर में जनन य वशु के कथा विद्या रुपी एक देसी तदनन्दन-देशा बनाई है, विद्याके न रहने पर मनुष्य तथा पशु में कोई भी विनाश नहीं होती। वास्तव में हमारी वह दृष्टि जन तक सुषुप्तावस्था में रहती है जब तक कि इस पर गुरु के मार्गदर्शन की छज्जा न पहे। तुलजाने द्वारा विद्या नाम नार्गिदर्शन अमृत की दूरी का जारी कर इस दृष्टि को गतिशीलता बढ़ान करता है।

एक व्यक्ति के जीवन में उसके गुरु का अवर्जनीय योगदान होता है। विना गुरु का आलसद तथा मार्गदर्शन के साथरे जो व्यक्ति अपे छड़ने ली जाता है, उसकी कथा जीवन में देखिलक सफलता नहीं मिल पहती है। आज से ही नहीं बरन आदिकाल से ही भास्तीव विद्यार्थी ने गुरु की महत्ता को प्रतीक्षित करते हुए गुरु को सफलता के लिखार पर पहुँचाने वाली तीरी माना है। भास्तीव देवो भक्त' कहकर भास्तीव विद्यार्थी ने गुरु के पद की गतिरेखा का पूर्ण कारोन दिल्लूत दिल्लैलन कर दिया था। वह गुरु ही है, विद्याके गार्गदर्शन से व्यक्ति हँसवर की पहचान कर पाता है। अतः गुरु के विना रबपं हँसवर की उरिताल्ला भी खाले में पढ़ सकती है।

वास्तव में ये शब्द 'अध्यापक' अर्थात् 'गुरु' शब्द में एक दृढ़द, ऊर्ध्व समाजिक लिंग है। मात्र शैक्षिक योग्यता होने के कारण ही कोई व्यक्ति तुल की पदवी प्राप्त नहीं कर सकता। अध्यापक में जो सर्वोच्च गुण होना चाहिए, वह है अपने छात्रों के समस्त गुण-दोषों को समझना। जो व्यक्ति अपने छात्रों के गुण-दोषों को पहचान सकता है वह अपने अध्यापन करने की कुशलतापूर्वक निम्ना सकता है। छात्रों के तुर्पों को जानकर वह उनसे भीतर सुनी प्रतीका को बाहर लाने में उनके लिए अल्पतत सहायता रिक्त हो सकता है। प्रतिक्रिया के दूसरी ओर में गुरु अपने लिखित के लिए आगे बढ़ने की सीढ़ी बन सकता है। अतः वो रिक्षक अपने कानों को पूरी गिराव व समर्पण मात्र से करता है, उसे सही आदर व सम्मान प्राप्त होता है। अध्यापक लिंगी निष्ठा य परिव्रक्ष से छात्रों को पढ़ा रहा है, इसका अनुसार तो विद्यार्थी भी लगा ही सकते हैं। अतः एक अध्यापक का लादैय प्रधान रहना चाहिए कि वह दस्तों को एक आदर्श व्यक्तिगत के रूप में अपने छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत कर सके।

एक अध्यापक का जाती अल्पता ही समर्पण वाला कार्य है। यह दुरुपय है कि आज के अधिकारी नौजवान इस दोनों में आने के बजाए ही इन्हें छोटी होती है। जन्य घर का चीय याने होती के सम्मुख ये इसे फीका समझते हैं। परन्तु यास्तव में यह ऊर्ध्व अल्पता गुण्ड का कार्य है। अतः नौजवानी को इस दोनों में आकर इस पुण्य कार्य में अनन्त तृप्ति लाहरीय प्रदान करना चाहिए।

लेखक कुलदीप

108

*Memories  
are made of  
this*

*Best wishes*

*from*

*The Staff*



**1993**

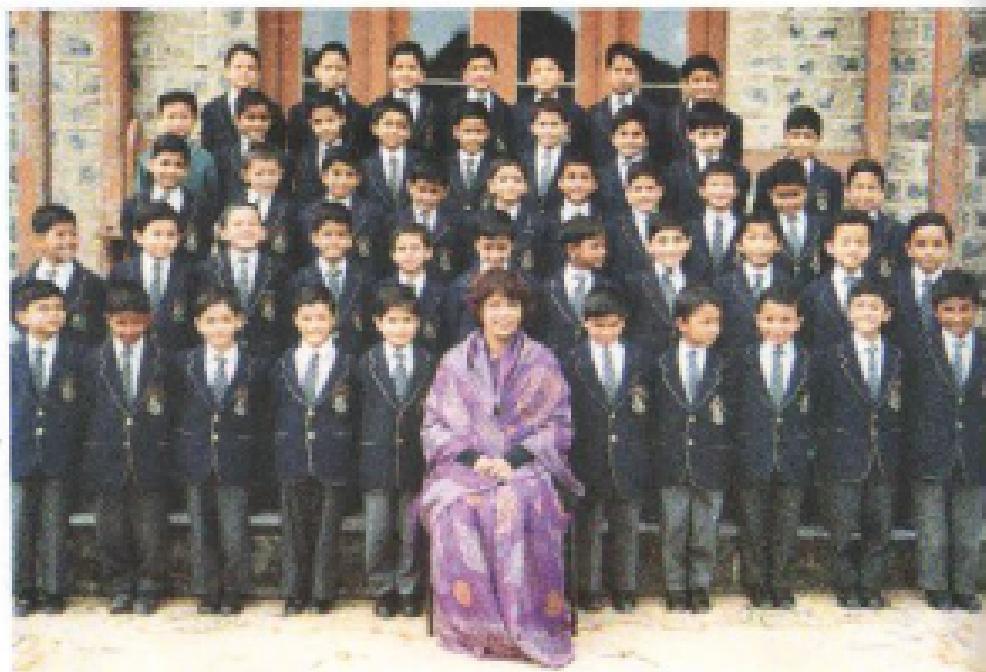
## STAFF



(L to R)

- 1st Row : Mrs. C. Palmet, Mrs. A. Menezes, Mrs. Y. Tahir, Dr. L. P. Fitzpatrick, Mr. N. R. Beddoe (Principal), Dr. I. P. Murray, Mrs. P. Midley, Mrs. K. Past, Dr. G. P. Bela, Dr. C. A. Ballantyne.
- 2nd Row : Ms. N. Rana, Mrs. P. Joshi, Mrs. J. Mukashy, Ms. D. Shah, Mrs. M. Bhut, Mrs. S. Pramila, Mrs. L. Sab, Mrs. J. Chapman, Mrs. J. S. Gill, Mrs. J. Stephens.
- 3rd Row : Mrs. L. Somer, Ms. N. Rowat, Mrs. A. D'Rozario, Mrs. B. Jain, Mrs. S. Paul, Mrs. M. C. Fernandes, Mrs. P. Barbara.
- 4th Row : Mrs. R. Past, Mrs. J. Irwin, Mrs. R. Jagati, Mr. M. D. Palmer.
- 5th Row : Mr. D. Simon, Mr. M. Bernard, Mr. R. Shankar, Mr. V. D'Gama, Mr. J. Menezes, Mr. N. L. Sehgal, Mr. J. P. Sab.
- 6th Row : Mr. M. Joshi, Mr. H. S. Joshi, Mr. D. Paul, Mr. P. A. Khan, Mr. S. Chakraborty, Mr. R. D'Menezes, Mr. D. Path, Mr. M. C. Parda.

## CLASS - I



(L to R)

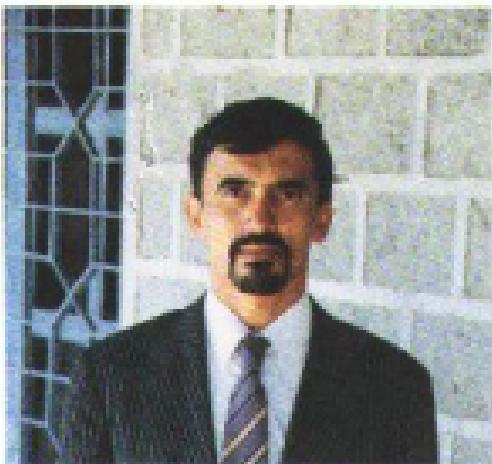
- 1st Row : N. Bhatriyar, S. Phartiyal, K. A. Khan, M. S. Rawat, H. Pandey, Mrs. P. J. Molley, N. Pandey, S. Rohan, P. Samant, K. Joshi and C. Irwin.
- 2nd Row : T. K. Sharma, A. Virmani, H. Sab, A. Sab, A. Nehra, N. Bhatt, A. J. Massey, Z. Ahmed, H. Sab, A. Joshi and A. Aggarwal.
- 3rd Row : P. Pandit, A. Chandra, S. Shah, A. R. Bishi, A. Fallawal, T. Tripathi, V. Sajwan, D. Joshi, A. Nehra and S. Sab.
- 4th Row : N. C. P. Singh, U. Gangwan, K. Sab, A. Kartik, A. Bishi, S. U. H. Nagvi, R. Jethi, R. Jalal and K. Mandla.
- 5th Row : J. Varma, D. S. Bishi, M. Sarwai, N. Pathak, N. Pandey, A. Patel and V. Shah.
- Absent : A. Bhatt.

## CLASS - II

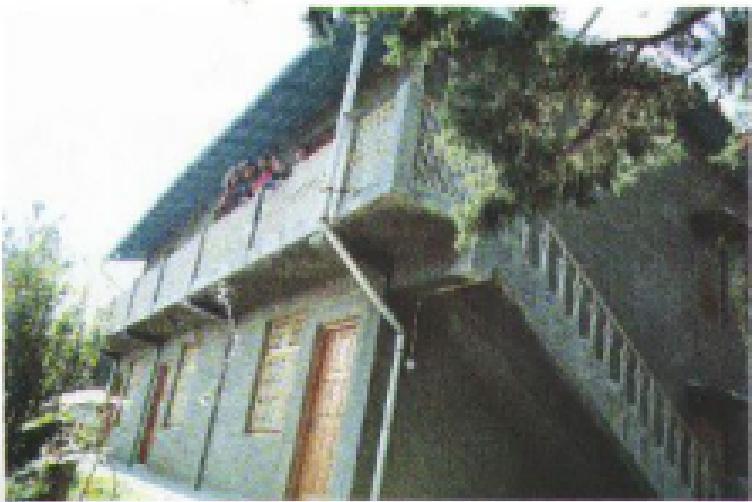


(L to R)

- 1st Row : R. Seth, V. Sab, C. Bangyal, A. Pareek, D. Patel, Mrs. A. D'Rozario, K. Galati, A. Bopa, S. Lohani, V. Pandey, A. Gurumai.
- 2nd Row : C. Pandit, A. Patel, S. Joshi, A. Pande, R. Bisheti, P. Agarwal, S. Shah, S. Joshi, T. Patel, R. Joshi.
- 3rd Row : P. Gangola, R. Seth, N. Pandit, N. Joshi, K. Maweri, A. Sab, D. Mehra, S. Gururam, P. Busch, A. Pathak, A. Bharti(1).
- 4th Row : D. Pandit, A. Nanda, S. Misra, S. Mianal, A. Rahman, S. Ahmed, S. Sab, A. Patwa, A. Kavdip, C. Dharmashikha.
- 5th Row : M. Sab, T. Sab, A. Bharti(2), M. Bisheti, U. Bisheti, M. K. Sab, H. Sharma, S. Thussu, M. Shastri, S. Jagati.
- Absent : P. Pandey, N. Singh.

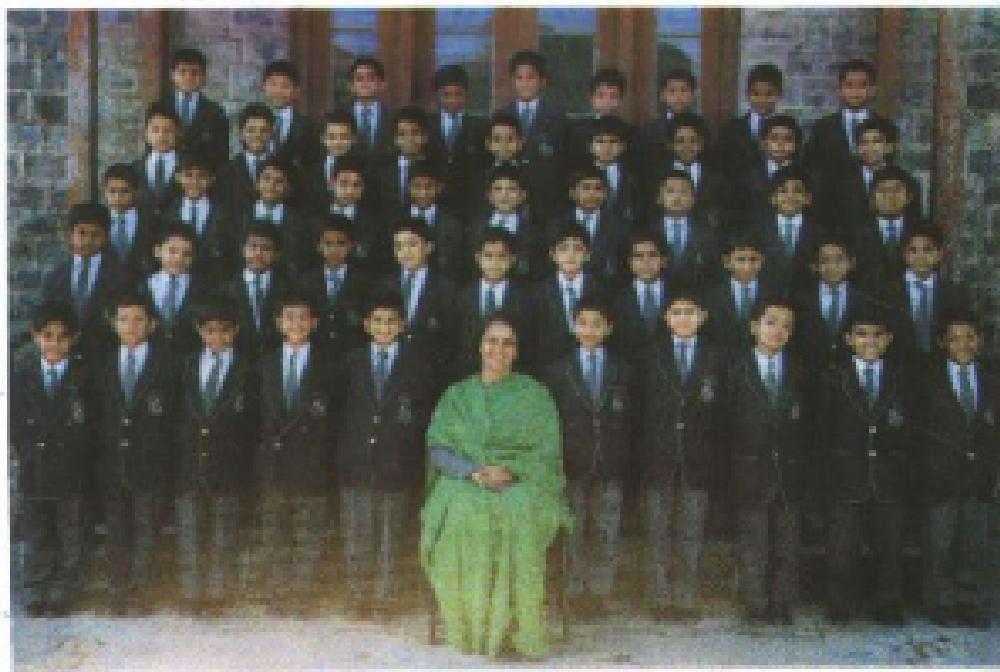


Mr. R. D'Souza was appointed The Supervisor,  
Junior School at Sem. congratulations!



The New Staff Quarters

### CLASS - III (A)



(L to R)

- 1st Row : Q. Asir, K. Sah, A. Mongia, N. Tewari, A. Tewari, Mrs. Latika Sah, A. Negi, P. Sah, N. Samanil, K. Dodeja, S. Chaudhary.
- 2nd Row : S. Sewak, D. Dongwal, K. Gupta, A. Shazma, J. Chaddi, S. Harsh, N. Chahra, A. Chawla, V. Sah, I. Sah, C. Sharma.
- 3rd Row : N. Pant, M. Agarwal, S. Kumar, D. Shah, S. Joshi, B. Boodha, S. D'Souza, A. V. Joshi, A. Khan, S. Rohit.
- 4th Row : N. Shrestha, P. Chitrangad, T. Bhatt, A.D.S. Thandi, A. Phartiyal, R. Utreja, R. Kumar, S. Gupta, N. Yadav.
- 5th Row : S. Behl, C. Ira, A. Joshi, S. Tewari, A. Shah, D.S. Pathani, T. Kavildayal, M. Azim, A. Pratap.

**CLASS - III (B)**



(L to R)

- 1st Row : N. Shah, S. Tewari, P. Kandpal, P. Nagpal, N. Kohli, Mrs. B. Jain, S. Bhut, N. Paul, P. Mungak, N. Negi, G. Nayal.
- 2nd Row : D. Singh, M. Soad, P. Gurjyal, A. Hyanki, T. Bhartiya, D. P. Singh, H. Utreja, K. Kaushik, K. Behrwal, A. Bahl, R. Sindra.
- 3rd Row : G. Sah, M. Pande, R. Kandpal, A. Pant, P. Deolakot, S. Tewari, A. Bahl, S. Gurjyal, A. Khanna, N. Negi, P. Banswal.
- 4th Row : V. Seod, A. Sah, A. Gangola, S. Bahl, A. Bahl, K. Arora, M. Tilak, A. Gururani, A. Sah, T. Dori, V. Samwal.
- 5th Row : H. Sah, A. Sah, R. Bhawna, J. Ahluwalia, A. Goel, A. Kumar, M. Bhandarkar, B. Seth.

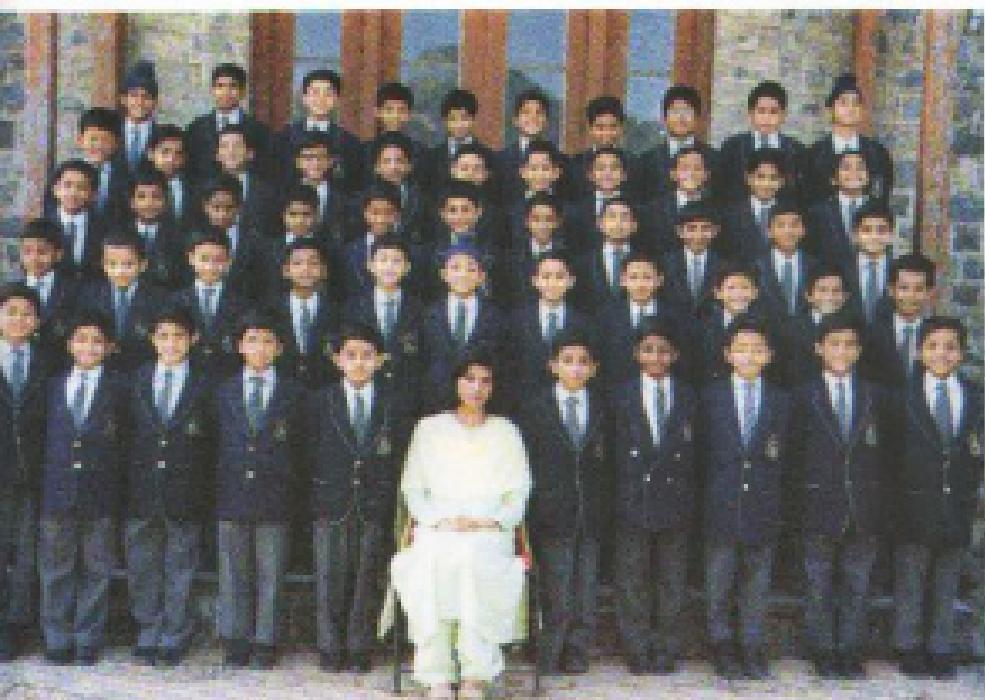
## CLASS - IV (A)



(L to R)

- 1st Row : Meenakshi, A. Kothiyal, A. Haq, S. Lala, K. Mangalam, Miss. N. Rana, J. Rao, M. Karki, K. Bhart, U. Sab, A. Reutela.
- 2nd Row : R. Misra, V. Mehta, V. Bhakuri, H. Garibyal, P. Chaddha, S. Chethal, B. Malik, P. Chaudhary, A. Singh, A. Kandpal, R. K. Raj.
- 3rd Row : A. Pai, V. Joshi, G. Mehta, M. Kansiyal, R. Bharti, C. Sinha, P. Sandhu, D. Ahmed, V. Sehgal, A. Joshi, A. Kishore.
- 4th Row : V. Chancholi, T. Nisarai, N. Sait, J. Sonali, S. Tandon, Rajendra, M. Ahuja, N. Khanda, S. Sharma, A. Ali, P. Chaudhary.
- 5th Row : R. C. Kumalyan, J. P. Sandhya, V. Raigh, R. Patodia, M. Richt, A. Cawlam, E. Gangwar, Chaudhary.
- 6th Row : A. Kumar, D. Joshi, A. Singh, A. Gupta, P. S. Dhaliwali, N. Siddiqui, P. Joshi.

## CLASS - IV (B)



to R)

- Row : A. Sab, N. Arora, A. Bhatt, U. Joshi, A. Khetia, Miss N. Rawat, S. Sab, H. Jain, P. Verma, M. Kandpal, P. Pant.
- nd Row : R. Sharma, S. Kabadiwal, A. Shah, M. Agarwal, P. S. Bahl, C. Singh, K. Dobal, D. Sharma, P. Bahl, B. Bhansali, S. Rawat.
- 3 Row : J. P. Shahi, P. Khanda, L. Tripathi, A. Jindal, A. Karki, D. Pant, S. Arya, M. Jevlani, A. Bhatt, A. Karki, A. Bhansali.
- 4 Row : L. Dorjeet, H. Tomy, R. Bahl, S. Sab, V. Sharma, K. Negi, S. Mehta, S. Joshi, S. Shah, A. Abuja, A. Grewal.
- 5 Row : A. Chadda, R. Chaudhary, M. Iqbal, S. Ahmad, S. Soyal, T. Sharma, M. Dixit, S. Parriyal, A. Kumar, H. Chadda.

## CLASS - V (A)



(L to R)

- 1st Row : T. Palheral, A. Sab, P. Sab, N. Jolly, B. Upadhy, Mrs. C. D. Palmer, R. Joshi, S. Bhavin, S. Gangola, A. Sharma, K. Srivastav.
- 2nd Row : A. Karnatak, P. Tripathi, M. Arifah, R. Chanda, S. Bhavin, N. Singh, S. Karnatak, A. Renu, V. Sab, P. Sab, V. Kumar.
- 3rd Row : V. Sab, P. Negi, H. Pandey, N. Deep, R. Rawat, A. Juneja, I. Hazra, S. Dhawan, V. Bhakuni, P. Shah, V. Negi.
- 4th Row : A. Dahani, A. Kapoor, A. Joshi, N. Joshi, A. Bhawna, G. Kang, A. Bhett, P. Chaudhary, T. Kapoor, S. Mansuri, N. Mehta.
- 5th Row : S. Rawat, G. Chattha, V. Bhett, A. Shah, A. Bajpayi, A. Vyas, A. Albus, S. Pandade, A. Chaudhary, K. Agarwal, K. Kamalpur.
- 6th Row : S. Ahmed, A. Sanguri, M. Pal, R. Kumar, V. Sharma, S. Agarwal, K. Gangola.

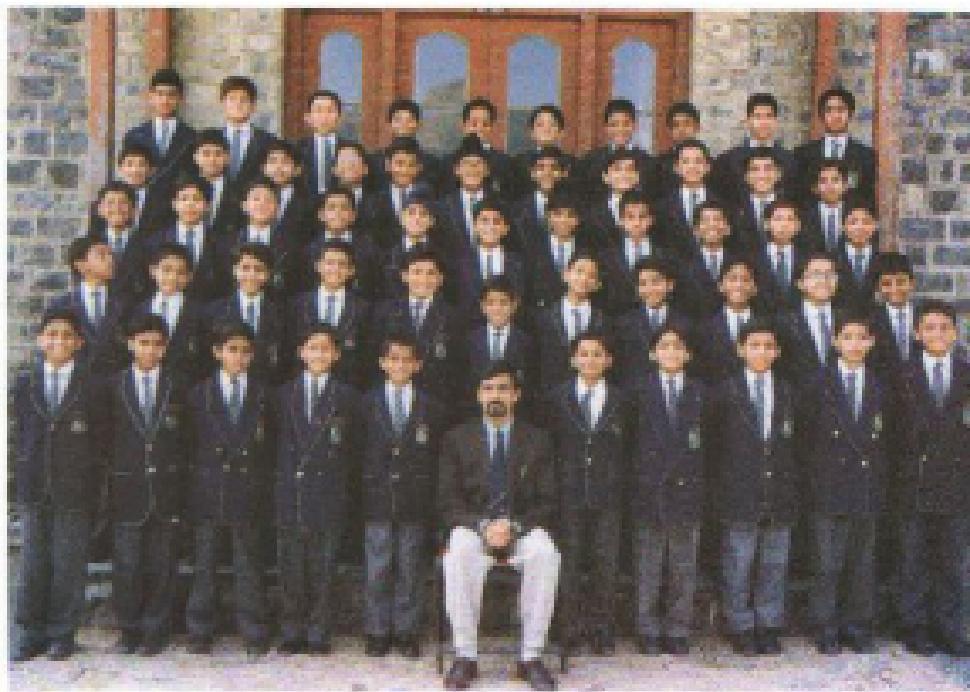
## CLASS - V (B)



(II to II)

- 1st Row : K. Bish, R. Kapoor, P. Sah, A. Jagati, P. Gurjriyal, Mrs. A. Menon, V. Sah, P. Sharma, D. Joshi, K. Pande, R. Dangaral.
- 2nd Row : P. K. Soodra, H. Sharma, P. Agarwal, P. Chaurasia, S. Agarwal, M. Singh, H. Agarwal, P. Pandey, R. Pant, J. Bohra, M. Chaudhary.
- 3rd Row : R. Mishra, S. Bohra, S. Bhandula, A. Soh, A. Krish, A. Hyank, C. Joshi, A. Mehta, R. Baid, D. Hyanki, R. Verma
- 4th Row : A. Anand, A. Grewal, A. Soh, G. Kangot, M. Ahmad, V. Sah, V. Upadhyaya, A. Sah, S. Dutta, A. Hira, N. Motney.
- 5th Row : K. Chaturvedi, M. Khan, G. Sah, D. Samwal, S. Kumar, A. Banerjee, R. Prasad, G. Grewal.

## CLASS - VI (A)



C. to D.

- 1st Row : A. Chouhan, A. Gupta, V. Goel, H. Surya, A. Joshi, Mr. R. D. Rawalji, S. Bhartiya, R. Ahluwalia, M. Tripathi, R. Soli, J. Tewari.
- 2nd Row : A. Jainwal, R. Kumar, Y. Ahuja, J. Rawat, S. Shah, M. Shah, A. Shah, K. Joshi, M. Goyal, B. Pandey, S. Kandpal.
- 3rd Row : A. Rawat, K. Trehan, H. Puri, P. Shah, J. Pal, R. Ahluwalia, G. Singh, K. Pandey, S. Patel, P. Dube, S. Massey.
- 4th Row : E. Lal, F. Khan, F. Mirzaab, A. Singh, D. Rawat, B. Sachdeva, S. Kaushik, R. Puri, A. C. A. Tandon, A. Chiller.
- 5th Row : S. Rehni, K. Arora, K. Shah, A. Shah, C. Shah, A. Tengri, A. Jha, A. Rawat, K. Bhawani, M. Verma.

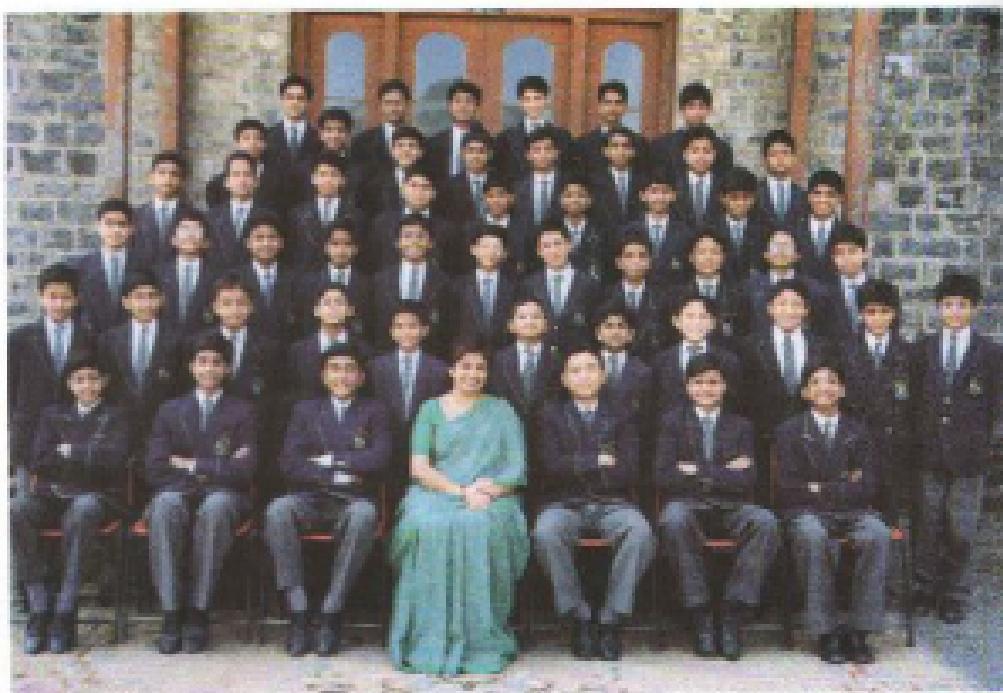
## CLASS - VI (B)



(I to II)

1st Row :	C. Tewari, V. Narinsal, D. Saini, L. Wu, A. Srivastava, Mrs. R. Jagati, Y. Kothiyal, A. Joshi, A. Phartiyal, A. Rawat, V. Gupta.
2nd Row :	S. Sah, S. Joshi, P. Bhanderi, D. Saini, S. Akbarad, R. Pan, P. Sehm, H. Kabejal, C. Balengana, H. Sawat, P. Pandu.
3rd Row :	D. Bhatt, U. Dhama, D. Pan, V. Sah, A. Akshet, M. Bhatt, T. Sonwal, Rohit Sah, R. Lohani, C. Jagat, A. Sah.
4th Row :	R. Kishan, N. Aswari, N. Doyal, S. Dalakoti, A. Singhvi, A. Makhija, J. Augustine, A. Singh, A. Soh, I. Dua, P. Pandu.
5th Row :	J. Mendonca, G. Adikari, T. Singh, M. Chodha, C. Pathak, S. Sandhu, G. Gill, A. Joshi.
6th Row :	Azeem, R. Liu, D. Khatri, P. Dalakoti, V. Shethi, A. Chandel.
Absent :	S. Rathore.

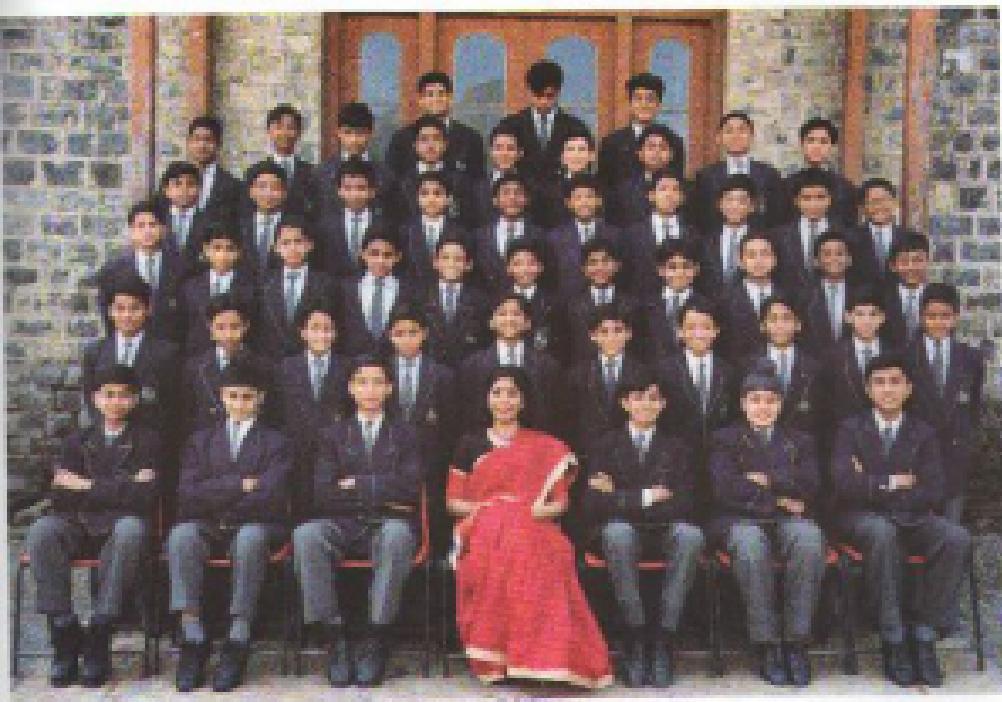
## CLASS -VII (A)



(L to R)

- 1st Row : J. C. LaPorte, M. Shabib, A. Bhatt, Mrs. P. Rathore, L. Tenzin, V. Upadhyay, A. Kujur.
- 2nd Row : A. Kandpal, R. Bhatt, S. Moriha, Y. Kafidha, M. Bhatt, P. Tewari, M. George, S. Chait, P. Samwala, A. Nayal, U. Malhotra.
- 3rd Row : A. Pandit, M. Sati, A. Shah, A. Bansal, A. Verma, S. Chhinawal, C. Patel, R. J. Spike, S. K. Adwani, S. Zubair, R. Path.
- 4th Row : A. Tewari, P. Mehta, R. W. D'Souza, T. Jagat, K. Singh, N. P. D'Mello, S. Kabaddiwal, K. Palwari, A. Tamkin.
- 5th Row : R. Tandon, A. Behman, A. Bhadia, A. S. Bear, A. Ahluwalia, I. Behman, V. Talwar, M. Singh.
- 6th Row : K. Batra, A. Malik, M. Z. Y. Khan, A. Malhotra, S. Rai, C. Baywa.
- Absent : G. Singh.

## CLASS - VII (B)

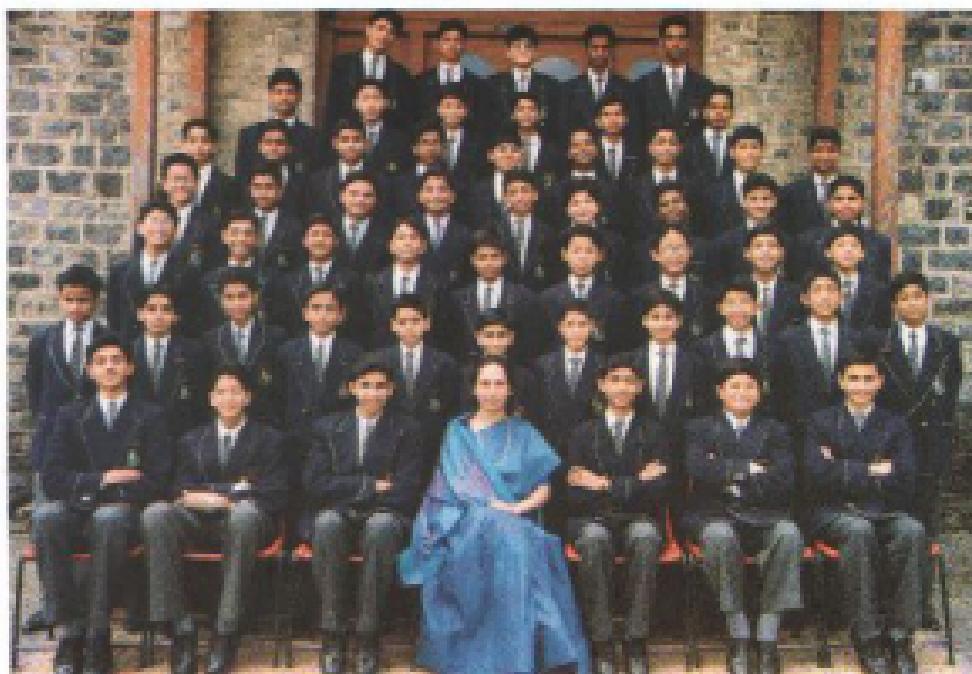


CL. to PG

- 1st Row : P. Sabu, I. Oberoi, R. Bahl, Mrs. S. Pall, V. Dassi, H. S. Bindra, D. Shah.
- 2nd Row : J. Jethi, V. Sab, V. Sab, R. Pandit, A. Malik, A. Tandon, D. Brar, P. Tripathi, C. Ahuja, V. Khokha.
- 3rd Row : V. Joshi, A. Kansiyal, N. Pandit, N. Goswami, V. Tewari, S. Phartiyal, T. Bhargava, R. Arun, M. Mehra, V. Pandit, S. Kaur.
- 4th Row : N. K. Rai, D. Soh, N. Tyagi, K. Tiwari, A. Jainwal, U. R. S. Bahl, S. Shah, K. Naresh, D. Singh, A. Sharma.
- 5th Row : T. Joshi, S. Shah, J. Tewari, A. Khan, G. Karki, G. Joshi, S. Singh, V. Upadhyay, H. Soh.
- 6th Row : A. Kohli, R. Kumar, B. Virk.
- Absent : A. Goel, K. Arya, S. Punetha, S. Rehti.



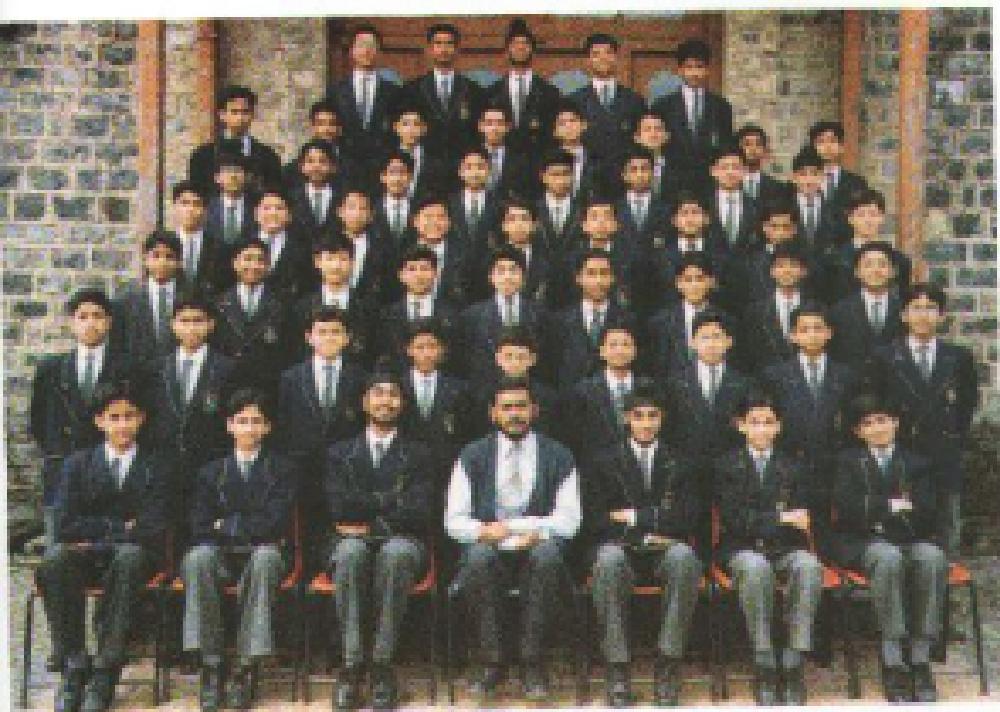
## CLASS - VIII (A)



1st to 10th

1st Row :	S. Choudhary, H. Chawla, S. Dua, Mrs. J. S. Gill, K. S. Negi, I. Joshi, G. Dangwal.
2nd Row :	A. Agarwal, D. Sharma, A. Nainwal, V. Khatri, S. Harbhia, H. Bhatt, A. Shah, N. Ghosh, S. Singh, R. Shah, S. Yash.
3rd Row :	S. D. Bhatia, H. Gururani, H. Makarani, T. Saranay, J. Dhanda, W. Dorji, N. Patel, R. Sethi, P. Wu.
4th Row :	L. Sehgal, V. Tewari, A. Hasbola, C. Jeet, R. Srivastava, U. Rathore, V. Singh, R. Bishnoi, M. I. Ali.
5th Row :	A. Choudhary, T. John, V. Ambedkar, A. Choudhury, M. Thakur, A. Verma, N. Kalidhar, R. Stanley, S. Siddiqui.
6th Row :	S. Tewari, S. Nehru, J. Oot, A. Chhawal, D. Dube, P. Bishnoi.
7th Row :	H. Verka, G. Naigal, S. Verma, A. Singh, G. Singh.
Absent :	P. Khan.

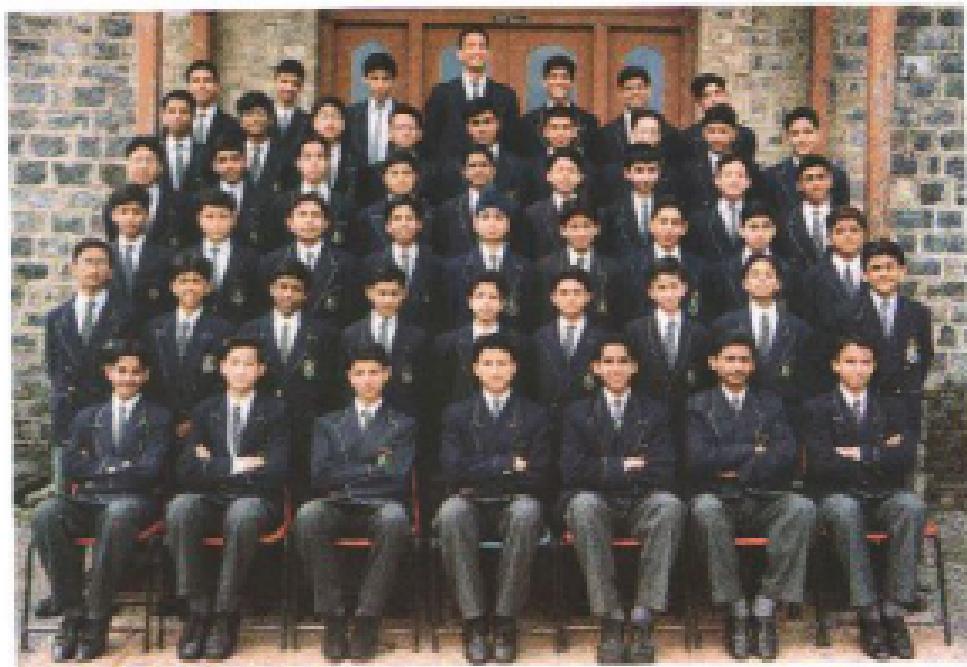
## CLASS - VIII (B)



(1. to 10)

1st Row :	S. Thandi, P. Puri, R. P. S. Gill, Mr. Ravinder Singh, J. Goraya, J. Sab, G. Luthra.
2nd Row :	H. Joshi, J. Kothiyal, A. Jadhav, R. Sab, A. Sab, C. Rawat, A. Shah, R. Agarwal, N. Pandey.
3rd Row :	D. Joshi, A. Morey, F. Hiru, K. Malhotra, R. Azeez, E. Sab, D. Dabhi, P. Mehta, S. Kandpal.
4th Row :	P. Bhatt, A. Jaiswal, S. Sureshtha, N. Liu, A. Manjil, C. Philip, A. Zaidi, D. Bhatt, C. Palmer.
5th Row :	G. S. Chadha, N. Anand, U. Sharma, R. Bhatt, R. Syal, A. Bhati, T. Surya, A. S. Sethi.
6th Row :	J. Mehta, P. Patelwal, R. Bhatiela, P. Shah, A. Bhatt, P. Sab, S. Neeraj, A. Gupta.
7th Row :	A. Asra, S. Shah, A. Sethi, K. Sharma, P. Golati.
Absent :	D. Post.

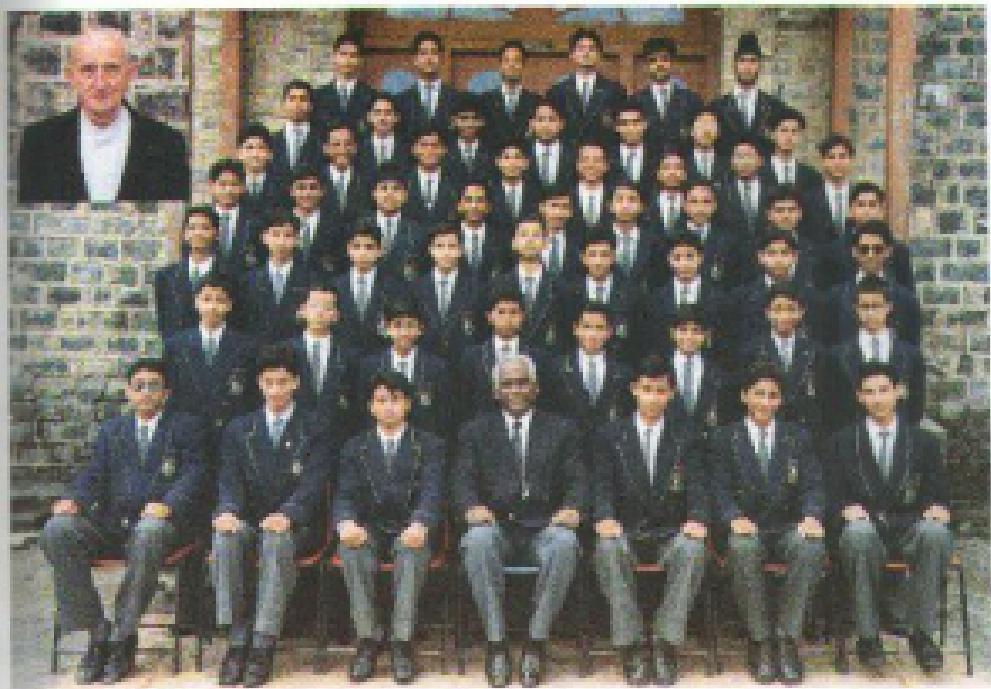
## CLASS - IX (A)



G. to B:

1st Row :	M. Kalyal, A. Shrestha, V. Prasad, B. Nayal, K. Kapoor, B. Jain, G. Malhotra.
2nd Row :	R. Tiwari, M. Mittal, M. Maheshwari, N. Manglik, S. Joshi, P. Mehrotra, H. Pandey, H. Gupta, S. Kathuria.
3rd Row :	R. Sab, D. Bahl, R. Sharzar, G. Pant, C. Chahar, R. Doyal, V. Tandna, P. Pant, C. Gehwan.
4th Row :	M. Tiwari, M. Manglik, V. Kumar, J. Shah, R. Bhuri, A. Jyoti, A. Prakash, A. Shah, U. Vardhan.
5th Row :	A. Sab, H. Rawat, S. Nagla, A. Dossal, Z. Khan, K. Bhuri, N. Sab, V. Rawat, N. Sab.
6th Row :	R. Malhotra, S. Kokoreti, M. Bahl, H. Bajwani, P. Yadav, A. Nagla, Alyreen.
Absent :	S. Verma.
Inset :	Dr. J. P. Murray.

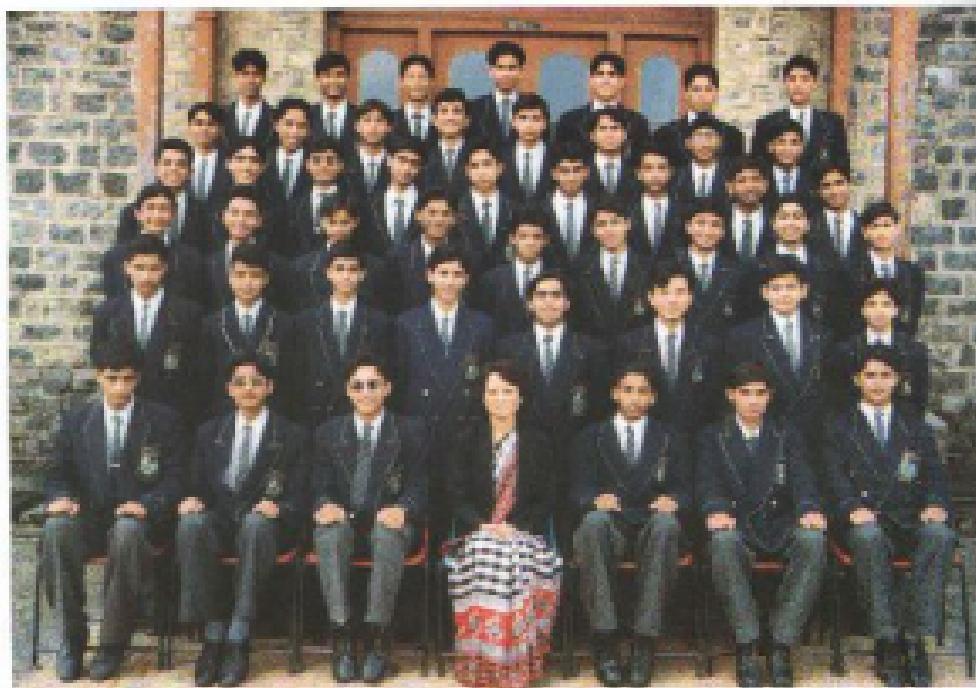
## CLASS - IX (B)



(L to R)

- 1st Row : Neekya Pandey, Harish Bahl, Shanti Singh, Br. O. A. Ballamryne, Vikrant Sah, Sudhanshu Kothia, Ashvani Khinda.
- 2nd Row : Chetan Sah, Sambath Kati, Karan Jain, Mohit Maheria, Sumit Sah, Mayank Kandpal, Neetish Tewari, Rukit Gupta.
- 3rd Row : Ravie Charles, Parveen Joshi, Pankaj Pant, Vaibhav Lenden, Chinmay Lahoti, Vikas Joshi, Sameer Sah, Fahd Mofizab, Sunny Narang.
- 4th Row : Ankit Singh, Ankit Khanna, Manpreet Anand, S. Shekhar, Kailash Chandra, Vikas Sah, Neeruji Mehra, Adnan Ahamed, Rohan Gupta.
- 5th Row : Upal Pandey, Jason D'Silva, Colin M. Coelho, Gaurav Duggal, Vikrant Bahl, Chetan Bahl, Leesh Tewari, Sheetal Prakash.
- 6th Row : Sochin Megi, Parkaj Megi, Edwig Fernandes, Saket Bahl, Abhay Tewari, Arun Bahl, Yogesh Sah.
- 7th Row : Mayank Mehta, Nitin Sah, Sharad Bahl, Dhruv Singh Chowdhary, Anurag Anand, Suikdeep Anand.

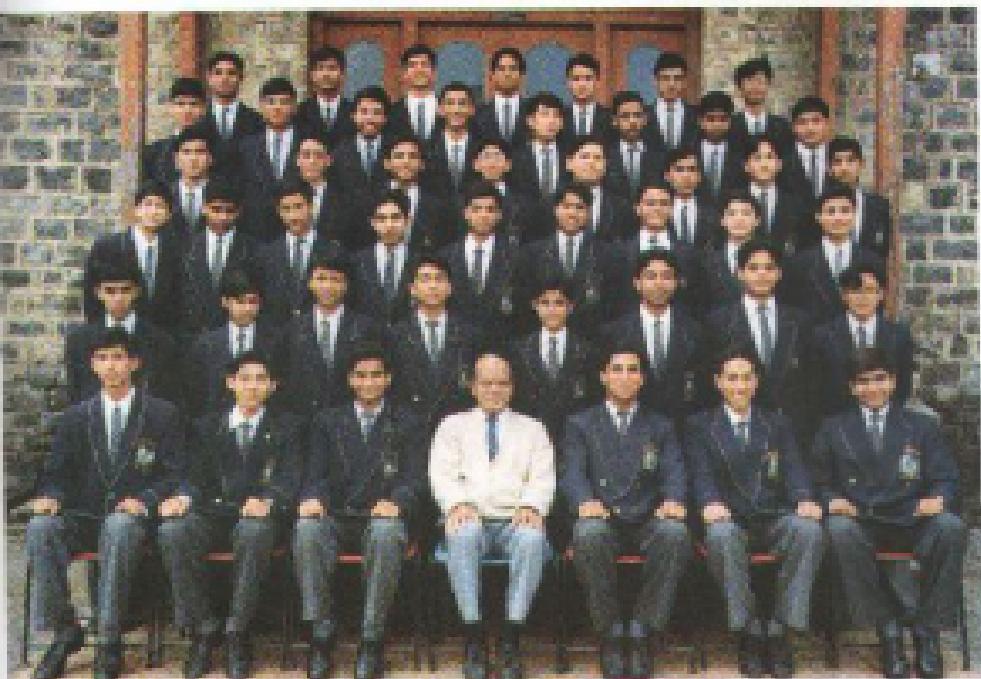
## CLASS - X (A)



(J. to R)

- 1st Row : P. P. Krishnam, D. Chhajed, H. Sab, M. D. Shah, I. Alavi, P. Wadhera, A. Rour.
- 2nd Row : A. Kaushal, A. Komatzik, P. Panek, M. Kishan, M. Kumar, F. Chora, D. Bhatt, J. Patel.
- 3rd Row : P. Verma, M. Pedi, A. Sab, S. Seod, A. Gargala, A. Jayati, A. Chauhan, K. Jain, R. Patel.
- 4th Row : M. Khan, N. Negi, Saini, A. Kumar, V. Seod, S. A. Rishi, P. Agarwal, S. Singh, J. Oberoi.
- 5th Row : H. Dhama, R. Lila, S. Khan, R. Malik, M. Mehrotra, I. Richardson, A. Sethi, A. Tewari.
- 6th Row : M. Bearded, Y. Recht, U. R. Kawoti, M. Virk, M. Gill, H. Chaturvedi, R. Tandon.

**CLASS - X (B)**



G. to R:

- 1st Row : V. Kumar, P. Wu, D. Patlak, Mr. J. Menon, N. Boddle, D. Sharma, A. Miral.  
2nd Row : S. Bahl, R. Patel, S. Gupta, S. Ahmed, R. K. Pant, H. Wheeler, S. Gandhi, A. K. Almeil.  
3rd Row : H. Tripathi, S. Chandi, H. Kondpal, V. Tandale, S. Kaur, S. Arsi, R. Sanguri, P. Sab, A. Pandit.  
4th Row : C. S. Desha, K. S. Kawwal, K. Prasad, M. Kumar, G. Mehra, N. Yadav, M. Khurki, P. Sharma.  
5th Row : D. P. S. Nijpe, G. Mehta, D. S. Gogar, Y. Palwal, N. A. Singh, A. Melkani, A. Sab, R. Budiyal,  
Z. Y. Khan, R. Prasad, G. Behwal, D. S. Virk, H. Sab, G. Tectia, H. Upadhyay.  
Absent : S. Pukaria, P. Shah, D. S. Rawat

**NEHRU HOUSE**

**Mohit Kumar**  
Captain



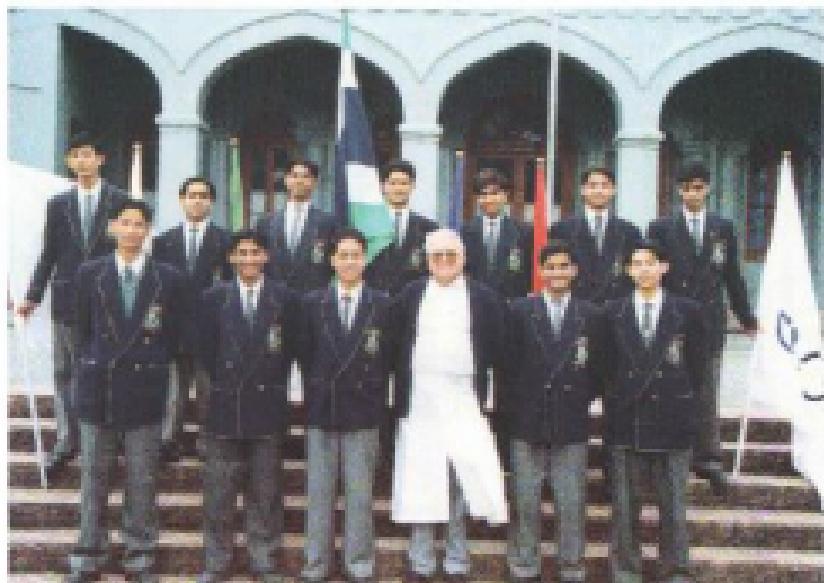
**Utkarsh Singh**  
Vice-Captain

**PANT HOUSE**

**Aditya Sehgal**  
Captain



**Harpreet Dhillon**  
Vice-Captain

**TAGORE HOUSE**

**Leo Sathyanandan**  
Captain



**Peter Wu**  
Vice-Captain

**GANDHI HOUSE**

**Akin Zillibasi**  
Captain



**Dhvya Deshpande**  
Vice-Captain



Sardal  
Junior Prefect

# PREFECTS



Sudhoni  
Vice-Junior Prefect



Kamlesh Karwal  
Day Scholar Prefect



Cheena Pathak  
Junior Day Scholar  
Prefect



Padaampal Krishnani  
Day Scholar Prefect

## EDITORIAL BOARD

Br. T. F. Fitzpatrick, Mrs. J. Stephens, Mrs. P. Rathore,  
Mrs. J. Gill and Mr. D. Nath.

A Special "THANK YOU" to Mrs. A. Menezes, Miss D. Shah,  
Mr. E. D'Gama, Mr. R. Shanker for their contributions. We also thank  
Padaampal Krishnani for his assistance.

**FOOTBALL : MINIS TEAM**

(L to R)

1st Row :  
B. Suri, A. Chahal,  
V. Kathayat, J. Tewari,  
M. Arish, K. Joshi.

2nd Row :  
M. Phull, M. Grewal,  
D. Saini, V. Saini,  
Mr. M. D. Palmer.

3rd Row :  
L. Dori, K. Pandey,  
A. Hyreki.

4th Row :  
A. Sehgal.

**FOOTBALL :  
'A'  
TEAM  
JUVENILES**



(L to R) 1st Row : T. Bhargava, A. Singh.

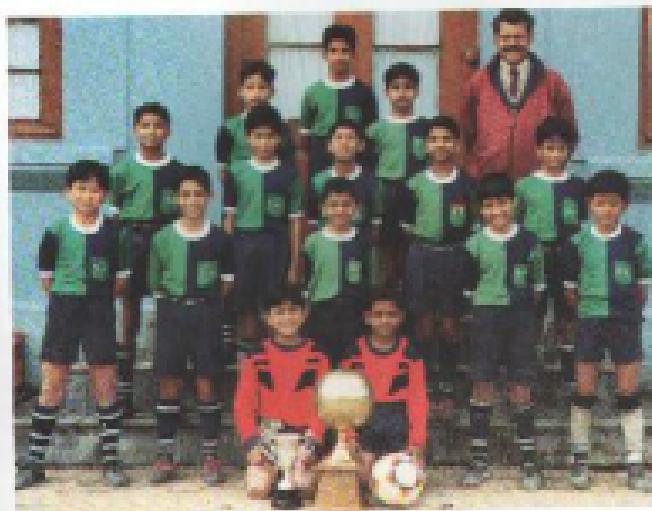
2nd Row : V. Tewari, S. Saini, R. Saini, A. Tandon, A. Hizah.

3rd Row : A. Chahal, A. Hyreki, N. Saini, A. Saini, Mr. M.D. Palmer.

4th Row : D. Sharma, A. Bawali.

5th Row : S. Atwal.

## 'B' TEAM JUVENILES



(L to R)

1st Row :  
A. Saha, S. Ahmed

2nd Row :  
S. Chait, B. Suri,  
T. Kathayat, R. Riwat,  
L. Deep.

3rd Row :  
S. Massey, S. Rathore,  
Y. Katalayya, S. Senai,  
V. Saha.

4th Row :  
K. Gangala, N. Oberoi,  
Mr. M. D. Palmer.

5th Row :  
A. Dhillion.

## FOOTBALL WINNERS

of The Education Day Tournament Held At St. Columba's School, Delhi



(L to R)

1st Row :  
V. Saha, S. Noyal, S. Bajwa, A. Bajwa,  
S. Kauria.

2nd Row :  
C. Bajwa, H. Fernandes, S. Tewari,  
A. Dossal, H. Singh.

3rd Row :  
S. Balaji, J.S. Bajwa, S. Negi.

4th Row :  
Dr. G. A. Ballantyne, S. S. Anand,  
K. Sharma.

## SACRAMENT OF CONFIRMATION

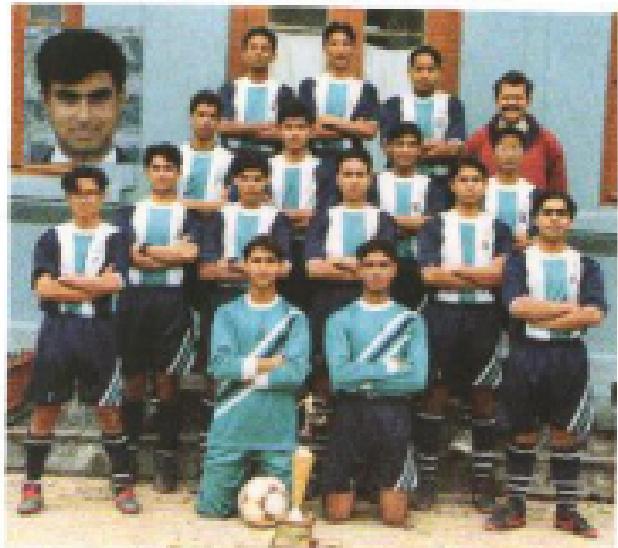


On Sunday, October 4th, the following boys were confirmed in the College chapel by His Lordship, Bishop Anthony Fernandes, Bishop of Bareilly: Ian Mark Richardson, Samir Kujur, Fredrick Chain, Clifford Galstaun, Edwig Fernandes, Colin Coelho, Jason D'Silva.

The boys were prepared for the reception of this sacrament over a period of several months and we were very happy to have parents of these boys present for the occasion. As it was a very special day in the lives of these seven boys, the College chapel was tastefully decorated for the Mass at which the boys and staff were in attendance. Afterwards the seven boys, their parents, some staff members and Brothers were invited to a very special lunch which was presided over by the Bishop and the College Chaplain, Fr. Richard, O.F.M.Cap.

Clifford Galstaun  
Class - 9 A

## COLLEGE FOOTBALL 'A' TEAM



(L to R)

1st Row :  
S. Khan, Z. Khan.

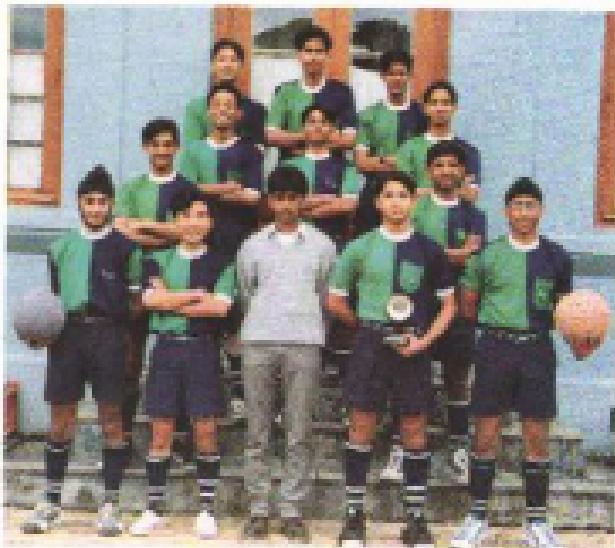
2nd Row :  
A. Ajmal, A. Saeed,  
F. Wazirza, D. Sainyha,  
I. M. Richardson, M. Kumar.

3rd Row :  
S. Nagi, R. Badrial, A. Tewari,  
A. Bahl.

4th Row :  
S. Bahl, U. R. S. Kapoor,  
R. Bahl, Mr. M. D. Tolani.

Inset :  
Z. Khan.

## COLLEGE BASKETBALL TEAM



(L to R)

1st Row :  
J. Gargia, P. Chahal,  
Mr. P. A. Khan,  
I. M. Richardson, A. Sohail.

2nd Row :  
Y. S. Bahl, S. K. Singh.

3rd Row :  
S. Bahl, H. Dhindsa,  
U. S. Virk.

4th Row :  
U. R. S. Bahl, M. Virk,  
M. Haider.

COLLEGE CRICKET TEAM



(L to R)

1st Row : V. Soh, A. Bahl, A. Tewari, Mr. M. C. Pandey, H. Dhankar, A. Bodhi, J. Chessa.  
2nd Row : S. A. Rabi, M. Khan, L.M. Richardson, D. Chinnaswamy, C. S. Dasar, A. Soh, T. Alam, Z. Khan.  
3rd Row : S. Negi, P. Wadhwani.

**TABLE TENNIS WINNERS  
AT NEW DELHI**



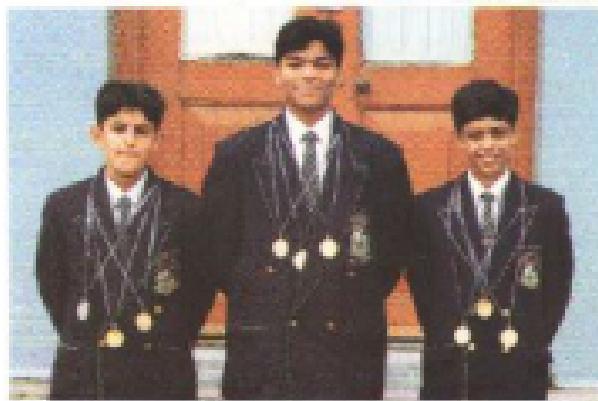
S. Verma, C. Chauhan, A. Anand,  
Br. O. A. Ballantyne.

**BADMINTON WINNERS  
AT NEW DELHI**



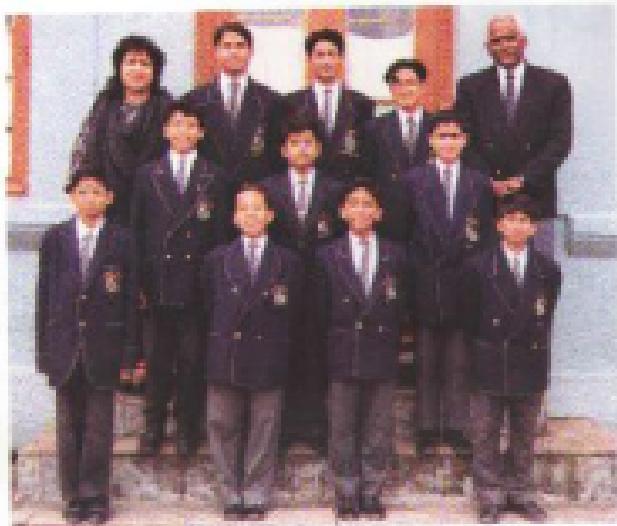
G. Saighal, H. V. Singh, S. Bahl,  
Br. O. A. Ballantyne.

**SWIMMING WINNERS**



G. Goyal, C. Coelho, J. LaPorte

## SINGING WINNERS



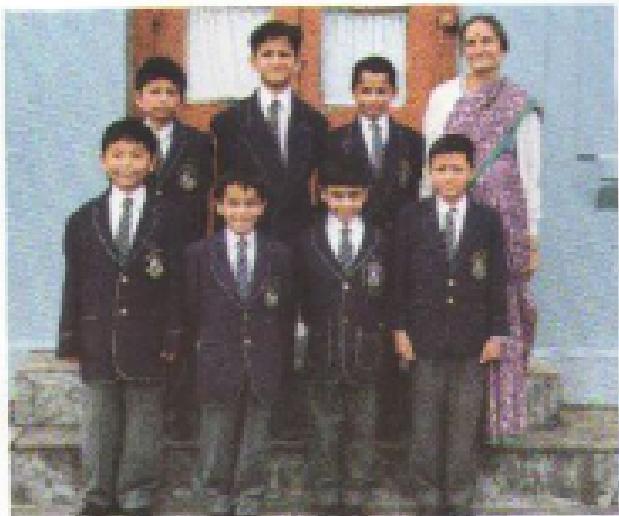
(L to R)

1st Row :  
D. Sawhney, H. Nahiyal,  
M. Gorain, A. Srivastava.

2nd Row :  
R. O'Rourke, J. Joshi,  
A. Pandit.

3rd Row :  
Mrs. J. Stevens, I. Richardson,  
A. Saha, A. Ahirel,  
Br. U.A. Ballantyne.

## HINDI ELOCUTION WINNERS



(L to R)

1st Row :  
C. Lulu, S. Lohani, K. Kaushik,  
D. Sharma.

2nd Row :  
R. Bhakti, S. Agarwal, P. Pandit,  
Mrs. K. Pant.

## ART COMPETITION WINNERS



(L to R)

1st Row :  
 A. Sangwan, S. Seth,  
 P. K. Chaturvedi, V. Koh,  
 M. Sandip.

2nd Row :  
 Mrs. V. Tahir, S. Kapoor,  
 P. Pandey, H. Surya,  
 D. R. S. Bahl, Mr. D. Nath.

3rd Row :  
 S. Khan, D. Chaudhary,  
 R. Malhotra, Y. N. K. Kaur.

## NATIONAL COMPUTER FAIR AND SEMINAR, COFAS '98 (LUCKNOW) ALL INDIA : 3RD ST. JOSEPH'S COLLEGE



(L to R)

1st Row :  
 M. Singh, K. Jain, Mr.  
 S. Chakrabarty, A. Chakraborty,  
 S. Faloria.

2nd Row :  
 P. Kishore, D. Umasankar,  
 D. Pathak, R. Tolia.

3rd Row :  
 Y. Palwal.

## ELOCUTION WINNERS



(L-R)

M. Sati, D. Dhawani.  
Absent : S. Phartipal



R. Joshi, A. Patel, A. Jagotit

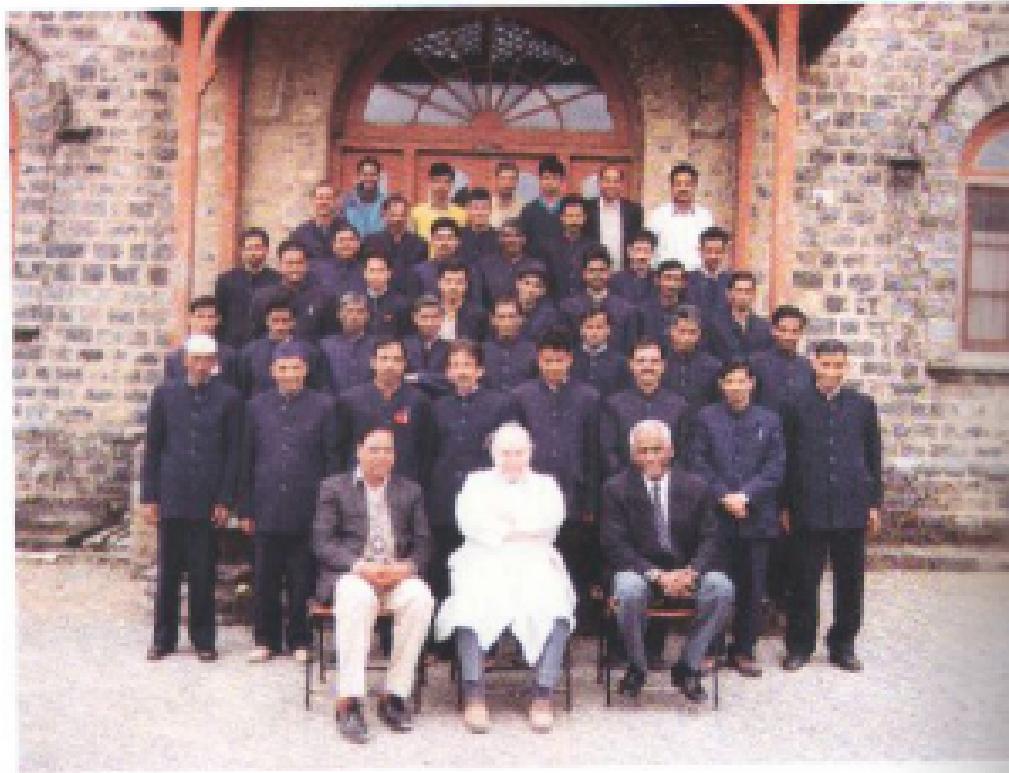


A. Pandir, A. Bhati, S. Chaudhary



(L-R)

T. Savarkar, N. Shah, C. Galbhava.



We Thank you for serving us

## ATHLETICS (INTER HOUSE)

### BEST MAN

A DIV	A. Sain	B DIV	M. Tewari
C DIV	G. Dangwal	D DIV	K. Dhawansal
E DIV	S. Massey	F DIV	J. P. Saw
Best Gymnast	S. Aneel	Best Athlete	A. Sain
Marching Shield	Puri House	Winning House	Nehru House
Huz Special	R. Pandey & S. Aneel	College Colours	A. Sain

## HOCKEY (INTER HOUSE)

## FOOTBALL (INTER HOUSE)

	WINNERS	RUNNERS UP	WINNERS	RUNNERS UP
First	Gandhi	Tagore	Tagore	Gandhi
Second Field	Mixed Teams	Mixed Teams	Nehru	Gandhi
Third Field	Puri	Gandhi	Nehru	Gandhi
Fourth Field	Puri	Nehru	Puri	Nehru
Winning House	Puri		Winning House	Nehru
			College Colours	A. Tewari

## CRICKET

College Colours : M. Khan

## SQUASH

College Colours : Z. Khan

### GYMNASIACS

College Colours : S. Aneel

## TOURNAMENTS IN TOWN

### MINIS TEAM :

Finals with : Azad's Public School

Winning Team : Azad Winners (Score : 5 - 0)

Best Player : Lopamudra Dasji

### JUVENILE 'A' TEAM :

Finals with : Azad's Public School

Winning Team : St. Joseph's College (Score : 1-0)

Best Player : Sanil Aneel

## LAWN TENNIS (INTER HOUSE)

### SINGLES

	WINNER	RUNNER UP
A DIV	Z. Khan	D. Shrestha
B DIV	A. Saha	Z. Khan
C DIV	A. Khan	S. Neeraj
D DIV	A. Riazat	R. Agarwal

### DOUBLES

A DIV	Z. Khan & H. Chaturvedi	B. P. S. Gill & D. Shrestha
B DIV	A. Saha & V. Prasad	S. Arif & A. Khan
C DIV	A. Khan & S. Neeraj	J. Dhuria & T. John
D DIV	R. Agarwal & S. Arif	A. Singhvi & A. Riazat

**OPEN**

Singles

Z. Khan

B.P. S. Gill

Doublets

Z. Khan &amp; D. Sheethu

B.P.S. Gill &amp; H. Chaturvedi

Winning House : Gaudhi

College Colours : Z. Khan

**TABLE TENNIS (INTER HOUSE)****SINGLES****WINNERS****BUNNERS UP**

A. DIV

A. Ansari

D. Sheethu

B. DIV

S. Verma

C. Chaudhary

C. DIV

M. Maheshwari

T. John

D. DIV

R. Rati

A. Rayat

**DOUBLES**

A. DIV

D. Sheethu &amp; H. Sali

R. Lala &amp; A. Ansari

B. DIV

S. Verma &amp; S. Sheethu

S. Ansari &amp; C. Chaudhary

C. DIV

A. Rayat &amp; R. Panj

R. Arora &amp; R. Agarwal

**OPEN**

Singles

S. Verma

D. Sheethu

Doublets

D. Sheethu &amp; S. Verma

R. Lala &amp; A. Ansari

Winning House : Gaudhi

College Colours : S. Verma

Dus Special : D. Sharma &amp; R. Sali

**SWIMMING (INTER HOUSE)****BEST MAN**

A. DIV

C. Coelho

B. DIV

G. Grewal

C. DIV

J. La Rose

Dus Special

A. Grewal

Winning House : Panj House

College Colours : C. Coelho

**BADMINTION (INTER HOUSE)****SINGLES****WINNERS****BUNNERS UP**

A. DIV

A. Saini

R. Lala

B. DIV

H. Singh

G. Singh

C. DIV

M. Maheshwari

T. John

D. DIV

K. Arora

A. Rayat

**DOUBLES**

A. DIV

A. Saini &amp; R. Lala

S. Sead &amp; P. Wallace

B. DIV

A. Arora &amp; E. Fernandes

S. Dohm &amp; S. Kadia

OPEN SINGLES :

A. Saini

S. Sead

OPEN DOUBLES :

A. Saini &amp; R. Lala

H. Chaturvedi &amp; S. Bains

Dus Special :

F. Khan

Winning House : Tagore House

College Colours :

A. Saini

## BILLIARDS

### FIRST TABLE

	WINNER	RUNNER UP
Singles	N. Negi	J. Patel
Doubles	L. Richardson & G. Mehta	F. Chait & A. Alwal

### SECOND TABLE

Singles	C. Cordeiro	G. Galibar
Doubles	C. Cordeiro & R. Charles	G. Galibar & S. Nidhi

### THIRD TABLE

Singles	R.P. S. Gill	S. Thandi
Doubles	T. Sweeney & R. Agarwal	W. Derga & T. John
College Colours :	N. Negi	

## BASKETBALL (INTER HOUSE)

Winning House	:	Neena	College Colours :	L. Richardson
---------------	---	-------	-------------------	---------------

## INDOOR GAMES

### CHINESE CHECKERS

	Winner	Runner Up
Group A	C. Cordeiro	D. Chhavval
Group B	A. Mehta	S. Shrestha
Group C	L. Augustine	K. Khan

### CARROM

Group A		
Singles	R. Lala	L. R. S. Ravat
Doubles	R. Bodhyal & A. Alwal	L. R. S. Ravat & R. Lala
Group B		
Singles	D. Pant	R. Neelam
Doubles	A. Gupta & S. Shrestha	N. D' Mello & T. Lader
Group C		
Singles	A. Ravat	S. Behra
Doubles	R. Sethi & A. Hyanki	S. Dalakoti & P. Raj Pant

### CHESS

Group A	D. Shrestha	P. Shah
Group B	S. Behra	R.P. S. Virk
Group C	R. Ravat	A. Chaurasi

### SUBRABBLE

Group A	P. Krishnam	A. Kaur
Group B	S. Shrestha	N. Malhotra

# Class 1<sup>o</sup>



KARAN  
JOSHI

CAKEY is a small shop near my school.



ZAIN  
AHMED

The shop sells a lot of items.



HARSHAVARDHAN  
PANT

Cakey sells fresh yummy pastries and patties.



RAJAT JALAL

I have biscuits and chocolates.



ANUJ JOSHI

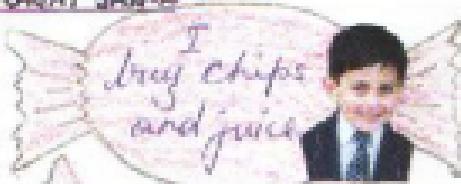
## Most popular and Visited Corner



KUNAL  
SAH



toffee yum!



AMAN VIJAYANI



ANKUR PANT

**VOLLEYBALL**

	<b>WINNER</b>	<b>RUNNER UP</b>
First Field	Puri	Nehru
Second Field	Nehru	Puri
Winning House	Puri & Nehru	

**SOFT BALL**

	<b>WINNER</b>	<b>RUNNER UP</b>
Tiger	Tiger	Gandhi
Nehru	Nehru	Puri
Winning House	Winning House	Tiger

**MARATHON**

<b>DIVISION</b>	<b>FIRST</b>	<b>SECOND</b>	<b>THIRD</b>
A DIV	P. Krishnan (Nehru)	L. Richardson (Tiger)	D. Shrestha (Gandhi)
B DIV	A. Datta (Tiger)	M. Asya (Gandhi)	A. Alvi (Nehru)
C DIV	G. Deshpande (Nehru)	R. Syal (Gandhi)	K. Charche (Nehru)
Arora Cup Marathon	P. Krishnan		

**INTER CLASS ELOCUTION****JUNIOR 2 - 5**

	<b>FIRST</b>	<b>SECOND</b>	<b>THIRD</b>
Choral	3B	2	3A
Choral	5B	4A	5A
Individual:	A. Pandit 2	A. Bhattacharyya 1B	S. Chatterjee 3A
Individual	R. Jaiswal 5A	A. Pal 4A	A. Bagchi 3B
<b>JUNIOR 6 - 9</b>			
Overall	3B	3A	6B
Choral	6A & 9A		9B
Individual:	M. Saha 7A	S. Bhattacharyya 7B	D. Bhattacharya 6B
Individual	T. Sweeney 8A		M. Saha 9B
	8		
	C. Chakraborty 9A		

**JUNIOR ELOCUTION (HINDI)**  
**INTER CLASS CHORAL WINNERS****CLASSES 2 & 3**

First	3B
Second	3A
Third	2

**CLASSES 4 & 5**

First	5B
Second	4B
Third	3A

**INDIVIDUAL****CLASSES 2 & 3**

First	E. Kaurik	3B
Second	S. Tolani	2
Third	C. Das	3A

**CLASSES 4 & 5**

First	S. Agarwal	5A
Second	P. Pandit	5B
Third	R. Bhattacharya & D. Sharma 4B	

## COMPUTER EXHIBITION 1998

**CLASSES 6 To 8**

First Prize	:	S. Neetu, N. Malhotra & R. Agarwal
Second Prize	:	A. Joshi
Third Prize	:	S. Mangali & D. Patel

**CLASS 9**

First Prize	:	S. Nagla, S. Kalra, H. Drijveal, A. Nagla, M. Mehta & J.
Second Prize	:	S. R. Singh, K. Pandey & P. Joshi
Third Prize	:	R. Tewari, N. Mangali, P. Yadav & S. Kathayat

## SINGING COMPETITION

**CLASS 5 & 6**

First	:	M. Gurram	6A
Second	:	H. Nabipuri	6B
Third	:	D. Sarawal	5D &
		A. Shrivastava	6B

**CLASS 7 & 8**

First	:	J. Jethi
Second	:	A. Pande
Third	:	R. D' Rose

**CLASS 9 & 10**

First	:	A. Saan	10A
Second	:	L. Richardson	10A
Third	:	A. Arora	10B

## SHARDA SANGH, NAINITAL : PAINTING COMPETITION

**CLASSES 1 - 2**

P. R. Gangola	:	Second Prize (Classes 1-2)	S. Chaturvedi	:	Consolation Prize
S. Sah	:	Consolation Prize (Classes 1-2)	U. Sah	:	Third Prize (Class 1)
N. Mangal	:	Second Prize (Classes 9 - 10)			

## ON THE SPOT PAINTING COMPETITION

**BOAT HOUSE CLUB LTD., NAINITAL**

S. Joshi	:	Second Prize (Class 2)
A. Paverz	:	Consolation Prize (Class 2)
P. Pande	:	First Prize (Class 5B)
M. Kandpal	:	Second Prize (Class 5A)
S. P. Singh	:	Consolation Prize (Class 5B)
A. Pande	:	Consolation Prize (Class 7A)

# ST. JOSEPH'S COLLEGE, NAINITAL

LC.S.E. : 1998

LIMITED TERM	F.H.O.	H.M.	H.C.C.	M.A.T.	S.C.I.	C.T.S.	S.C.O.	P.R.D.	A.R.T.	D.U.P.W.
00 MUSALI AND SURESH KUMAR	37%	100%		1.98	1.88	-	0.92	-	-	A
00 MUTHAIAH SUNDARANAL	6.70	8.78	1.28	3.88	3.84	-	2.48	-	-	A
00 ABRAHAM YOUSAFI	1.10	5.41	0.89	1.59	0.89	-	0.79	-	-	B
00 MOHTI AYUB KHAN	4.02	4.89	3.74	7.49	4.46	-	2.88	-	-	B
00 LALITA R. JATA	5.58	2.89	3.64	7.48	7.31	-	3.74	-	-	A
00 VENKAT K. BHATT	3.7%	1.48	1.92	1.98	1.87	-	0.88	-	-	B
00 YOGESH BHATT	3.48	2.62	4.64	3.74	3.63	-	0.78	-	-	B
00 SUJITHA K. MELLIARY	3.7%	1.42	1.46	1.97	1.38	-	0.64	-	-	B
00 ARTHUR T. LANT	2.21	2.74	2.74	2.79	2.66	-	-	0.60	-	A
00 CECILIA KARIM HUSSI	3.48	2.78	4.69	5.08	5.45	-	2.88	-	-	A
01 LALIT KUMAR GUPTA	3.04	1.78	1.98	1.99	1.82	-	0.88	-	-	B
01 MARYAM K. GUPTA	4.49	1.98	1.92	2.78	2.48	0.98	-	-	-	B
01 JASPREET KALANI	6.48	8.28	0.78	2.48	2.08	-	2.78	-	-	B
01 TERNATHA AMRITENDRA	4.44	4.42	2.78	2.78	2.42	-	1.78	-	-	B
01 GUL RAJ KUMAR	6.02	2.78	2.54	2.48	2.48	-	2.78	-	-	A
01 SANTOSH KUMARI	5.62	2.78	1.88	2.48	2.71	2.45	-	-	-	A
01 ANISHA ALIKA	2.49	2.78	2.72	1.98	1.82	0.98	-	-	-	A
01 THOMAS LIP	2.42	4.27	2.34	4.25	3.65	-	1.98	-	-	A
01 SWARNI MONICA	4.62	2.72	2.72	2.78	2.72	-	1.98	-	-	A
01 PUNEET KALAL	4.62	2.78	2.48	2.78	2.71	2.45	-	-	-	B
01 VIVEK CHANDRASEK	4.62	2.62	2.48	2.78	2.42	-	2.42	-	-	A
01 VYVYAPARAKSHI PARMAR	4.61	2.78	2.68	2.78	2.74	-	-	-	3.48	B
01 RAJESH LALU PASWARI	2.78	2.28	1.98	2.78	2.48	2.45	-	-	-	A
01 PARMAN PASI PANDEY	3.79	2.78	1.98	2.48	2.48	2.45	-	-	-	A
01 SANGITA PANDEY	3.61	2.78	2.78	2.48	2.48	-	2.48	-	-	B
01 RAJU ULAS	4.62	2.78	1.94	2.48	2.78	-	1.98	-	-	B
01 PRATYUSH PATHAK	4.62	2.72	2.68	2.48	2.78	-	2.42	-	-	A
01 AVINASH KANAK PATEL	4.62	2.78	2.78	1.98	2.48	-	2.48	-	-	B
01 RAVI PRASAD	2.08	2.74	2.72	3.08	4.52	-	1.98	-	-	A
01 ISHITA POKHARIA	4.62	2.78	2.62	2.48	2.78	-	2.48	-	-	B
01 VIKAS RAKHOL	4.62	2.42	2.68	2.78	2.78	-	2.48	-	-	A
01 ANUP BHATT	4.62	2.78	2.68	2.48	2.78	2.45	-	-	-	A
01 RAHUL KUMAR	3.78	2.68	2.48	1.98	2.42	2.45	-	-	-	A
01 SHOBHAN DASS	4.62	2.62	2.68	2.48	2.42	-	2.48	-	-	B
01 PREETAK KUMAR	2.58	2.48	2.72	2.78	2.58	-	2.48	-	-	B
01 RAHUL KUMAR	3.42	2.78	2.72	2.48	2.44	-	2.48	-	-	B
01 PUNEET KUMAR KALAI	2.68	2.78	2.72	2.78	2.42	-	2.48	-	-	A
01 GURUDEV KUMAR KALAI	2.68	2.78	2.72	2.78	2.42	-	2.48	-	-	A
01 SANJEEV KUMAR KALAI	2.78	2.78	2.72	2.78	2.42	-	2.48	-	-	A
01 KUMAR SHIVENDRA KALAI	2.68	2.72	2.78	2.78	2.42	-	2.48	-	-	B
01 RAJEEV KUMAR SHIVENDRA	2.78	2.78	2.72	2.78	2.42	-	2.48	-	-	A
01 RAHUL KUMAR SHIVENDRA	2.78	2.78	2.72	2.78	2.42	-	2.48	-	-	A
01 KUMAR SHIVENDRA KALAI	2.68	2.72	2.78	2.78	2.42	-	2.48	-	-	B
01 RAHUL KUMAR SHIVENDRA	2.78	2.78	2.72	2.78	2.42	-	2.48	-	-	A
01 RAHUL KUMAR SHIVENDRA	2.68	2.72	2.78	2.78	2.42	-	2.48	-	-	B
01 RAHUL KUMAR SHIVENDRA	2.78	2.78	2.72	2.78	2.42	-	2.48	-	-	A
01 RAHUL KUMAR SHIVENDRA	2.78	2.78	2.72	2.78	2.42	-	2.48	-	-	A
01 RAHUL KUMAR SHIVENDRA	2.68	2.72	2.78	2.78	2.42	-	2.48	-	-	B
01 RAHUL KUMAR SHIVENDRA	2.78	2.78	2.72	2.78	2.42	-	2.48	-	-	A

CENTRE ID/NAME	ENG	BBM	HOD	MAT	SCI	CTS	ECO	PER	ART	SUPW
<b>SECTION - B</b>										
001 SHOBHADARSHINI KUMARI	4.60	4.60	3.74	4.44	5.62	-	3.63	-	-	A
002 GURPREET AGRAWAL	5.60	3.79	3.73	3.95	4.69	3.86	-	-	-	A
003 RAJESH AGARWAL	5.60	3.79	4.66	3.78	4.62	-	3.78	-	-	A
004 TULSI DATTAGAR	3.79	3.60	3.74	4.66	4.62	3.80	-	-	-	B
005 TANVEER KHAN	3.79	3.79	3.60	3.66	3.60	3.84	-	-	-	A
006 DEEPAK KUMAR	3.79	3.79	3.60	3.78	4.64	-	3.66	-	-	A
007 RAKHI SUDHIBALA	3.69	3.69	3.70	3.79	3.69	3.86	-	-	-	A
008 RAKHI SUDHIBALA	3.69	3.69	3.70	3.67	3.69	3.86	-	-	-	A
009 GAURAV CHAUHAN	3.69	3.69	3.69	3.67	3.69	3.86	-	-	-	A
010 ROMIL CHANDRALEY	3.67	3.71	4.62	3.69	3.62	-	4.66	-	-	B
011 VAIBHAV CHANDRAL	3.69	3.66	3.60	3.69	3.74	-	3.66	-	-	A
012 AKEEM K DOTT	4.60	3.78	4.62	3.60	5.30	-	5.58	-	-	C
013 HARSHIT K GUPTA	3.79	3.60	3.70	3.68	3.73	-	3.69	-	-	A
014 QUAYAM HABIB	3.79	3.69	3.66	3.64	3.69	-	3.69	-	-	A
015 KUNAL YADAV	3.66	3.79	3.66	3.64	3.74	-	3.66	-	-	A
017 HERMAN KALPAL	3.60	3.69	3.69	3.60	3.60	3.66	-	-	-	A
018 ZAHEER KHAN	4.60	3.66	3.60	3.66	3.64	-	3.68	-	-	B
019 KUNWAR HOSSEL	3.79	3.60	3.70	3.69	4.62	-	3.76	-	-	A
020 KULDIPKIRAN LALWAL	3.79	3.69	3.62	3.69	4.62	-	3.62	-	-	A
021 CAUDEV MANDEEPKAHL	3.79	3.79	3.66	3.69	3.60	-	3.60	-	-	A
022 NEVINN MICHAEL	3.51	3.62	3.60	3.65	3.60	3.60	-	-	-	A
023 RAMBIRCHAND MUNDALL	3.79	3.69	3.66	3.69	3.64	3.66	-	-	-	A
024 ALBERT KUMAR	4.60	3.79	3.60	3.66	4.69	-	4.62	-	-	A
025 AARAV PREET S CHAUH	3.69	3.79	3.62	3.68	3.62	-	3.62	-	-	B
026 ERANZO FATIMA	3.79	3.69	3.78	3.71	3.62	-	3.63	-	-	A
027 PRAVESH PAINT	3.62	3.60	3.62	3.67	3.65	3.65	-	-	-	A
028 YASHVIR PAINT	3.60	3.79	3.76	3.64	3.76	-	4.69	-	-	A
029 VIKASH PAUL	3.69	3.79	3.60	3.66	3.79	-	3.60	-	-	A
030 MUNIR PATHAK	3.79	3.69	3.66	3.63	3.66	3.66	-	-	-	A
031 ASHISH KHANNA CHETAN	4.60	3.69	3.66	3.64	3.68	-	-	-	360	A
032 MOHIT SIV KANA	3.69	3.69	3.71	3.60	3.65	-	3.76	-	-	A
033 ANKIT KAH	3.69	3.79	3.61	3.61	3.60	-	3.74	-	-	A
034 KULDEEP KHANNA	3.69	3.69	3.69	3.71	3.69	-	3.76	-	-	A
035 MOHIT SALT	3.69	3.66	3.64	3.62	3.69	-	3.66	-	-	B
036 FAIZ AY SHAH	3.79	3.79	3.68	3.68	3.68	3.68	-	-	-	A
037 RUCHIR KHALI	3.62	3.64	3.74	3.60	3.68	-	3.72	-	-	A
038 VIJAYANATH SHAH	3.69	3.79	3.63	3.66	3.68	-	3.65	-	-	A
039 AARSHI KARLI	3.79	3.60	3.66	3.78	3.74	3.66	-	-	-	A
040 RAMADEV S SODHA	3.69	3.69	3.74	3.69	3.66	-	3.62	-	-	A
041 CAUDEV SAW	3.69	3.79	3.69	3.69	3.68	-	-	5.80	-	B
042 GAURAV SINGH	3.69	3.60	3.71	3.69	3.64	-	3.63	-	-	A
043 RAHUL SINGH	3.69	3.68	3.72	3.69	3.74	-	-	4.69	-	A
044 RAHUL SINGH	3.69	3.68	3.72	3.69	3.68	-	-	-	-	A
045 RAHUL SINGH	3.69	3.68	3.72	3.69	3.68	-	-	-	-	A
046 SEBASTIAN RIVAL	3.62	3.68	3.60	3.69	3.62	-	3.76	-	-	B
047 VIKASH TANWAR	3.69	3.60	3.78	3.69	4.66	-	-	4.94	-	B
048 KALPESH TIRAKI	3.69	3.66	3.66	3.65	3.69	3.68	-	-	-	A
049 CHIRAJ TYALI	3.79	3.60	3.69	3.66	3.69	-	3.69	-	-	A
050 VINAYAK YENDKAR	3.79	3.79	3.62	3.65	3.69	-	3.69	-	-	A

---

---

## ST. JOSEPH'S COLLEGE ANTHEM

---



1. You've heard of many a school I know  
And many a college too  
But there is one that always is  
The best for me and you!  
Tis perched o'er Bairin's lovely lake  
And our chads were there of old  
(For a century and more 'tis known  
As the home of the true and bold!)
2. 'Twas called at first 'the good old Sem'  
And later S.J.C.  
And a dearer place cannot be found  
At least for you and me!  
Its boys are hard to beat my friends  
In classroom, field or game  
(Their motto down the years has been  
Make sure to play the game!)
3. And here's to the boys of S.J.C.  
To her children, every man.  
And pass the word to those who'll come  
Give the motto of the clan—  
Adown the years to fight life's fight  
To fight it clean and fair  
Among the boys who have kept the bridge  
At dear old S.J.C.

My favourite is candy



Chrion I rwin

RHABIR KHAN

The  
pocket of  
Sweet planets  
are best



ASHAY SAH

Lakay is  
an honest  
kind man.

I wish  
I could eat  
everything from  
the shop!

DHIRAJ JOSHI



I wish  
papa would  
give me more  
money to  
spend at Lakay's

KAVI NAWADA

Kakei  
I  
LOVE  
YOU  
are  
100



CAKER'S SONS :  
carrying on the  
business.

BAGH RAMBSON

JAYANT SINGH : 74 yrs

Dedicated service at  
St Joseph's College  
from 1944.



*Caker's*



Exercises keep our bodies fit. We learn exercises for sports day. We do it to music on the field.

P.T. means PHYSICAL TRAINING. We feel fresh and healthy after doing exercises.



FAIZAN BUSCH



We play football, basketball, tennis and badminton. We have running races sometimes.



Nitin Pande  
We play games and have different races.

# AH! PT. CL 2.

MR. PALMER  
IS OUR PT  
SIR. HE  
JOKES WITH US

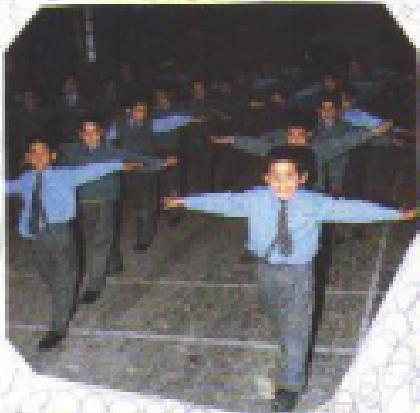
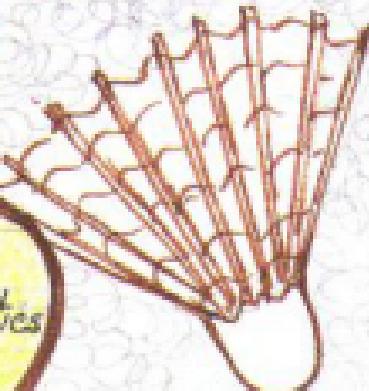
HE  
TEACHES  
US  
BOXING  
AND  
SWIMMING

SHIVAM SHAH

We  
enjoy  
our  
PT  
periods  
very  
much.

ABHIJIT PANT

We  
learn  
gymnastics  
and  
how to  
march



# CLASS

# 3



It's a joy to read good books. We improve our English and General Knowledge.

**ROHAN BHASHI**



I learn new and interesting things from books. I love reading funny stories.

**MARIA PARVEEN**



I love my hobby which is thumb, thumbscrew, thumbscrews and little red riding hood.

**DIL THAKKAR**

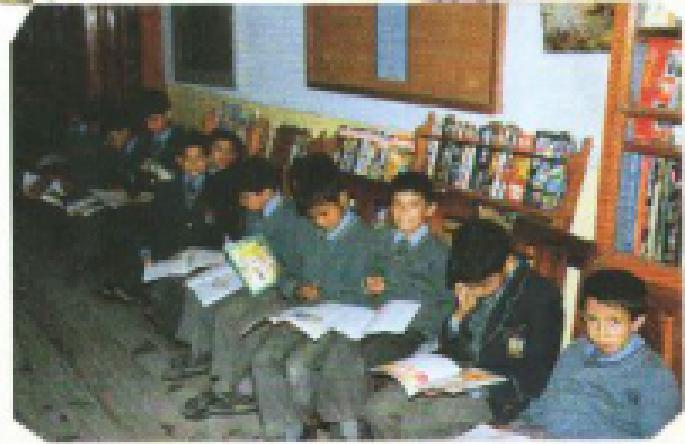
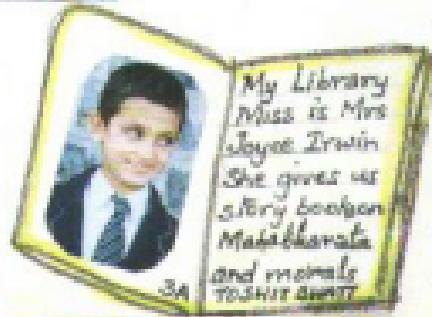
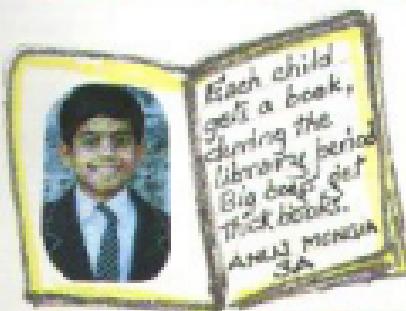


The Library also explains meanings of hard words. I like my library period.

**JASMIT TIWARI**



# READING IS FUN



ANUJ MEHTA  
TOUSHI GUPTA  
HARSH

---

## FOREWORD

---

A year passes by so soon and we look forward to the new. By nature we like things different. But are we open to the new challenges in our lives or in the lives of nations?

One can gauge the progress of a nation by looking at its youth. To-day they have access to much more knowledge and material things as never before though a section do not have the basic minimum. They see and hear about the progress man has made on Mars, the changes in the field of communications and the research for the cure of cancer and aids. They also read about the killings, corruption, craze for power and the latest the nuclear explosions by India and Pakistan.

If there is any hope in this modern and high tech world of ours it is from our younger generation. They have always been thought of as a resource rather than a source. We must never forget that the youth of to-day are the leaders of to-morrow. A nation is rich or poor according to the living standard and the opportunities our young people have for their all round development.

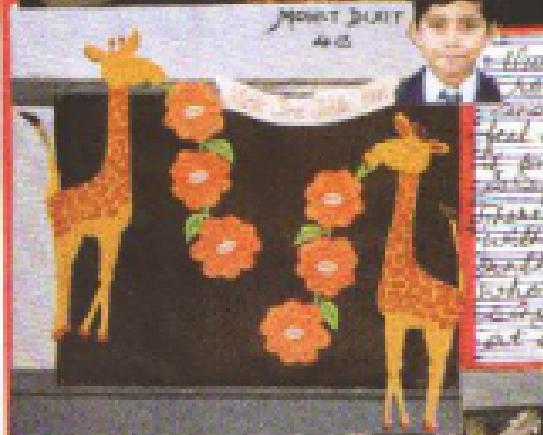
On reading through the College Review one realizes their potential. A place like Sem tries its best to give them enough for a life time. Such temples of learning are a great hope for mankind!



The music room  
is in the new  
building. We  
sing happy  
songs about  
love, marriage  
and God.

**J - D**

**SUMIT KUMAR**  
**4A**

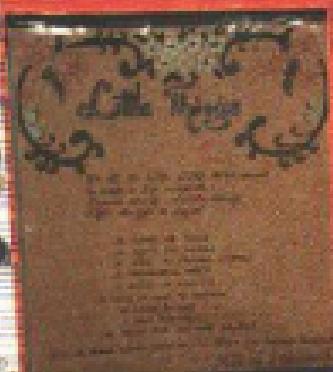


by Learn many  
color songs  
of Indian  
culture.  
The main  
was taken  
as a result  
of the  
Ganesh  
also to teach us  
to sing happy  
songs about  
love, marriage  
and God.



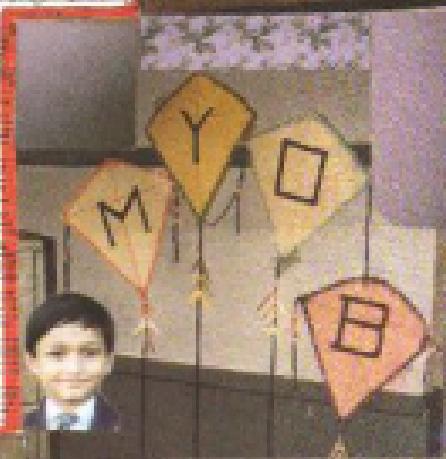
# My music CLASS 4

I love music lessons very much we have lots of fun and sing and dance. We wish we can have singing everyday.



We watch & review the music room is video's full of charts. It also sometimes shows has a black and white photo board on which there are words which are pronounced wrong. There are different kinds of the songs and dances from it which we enjoy.

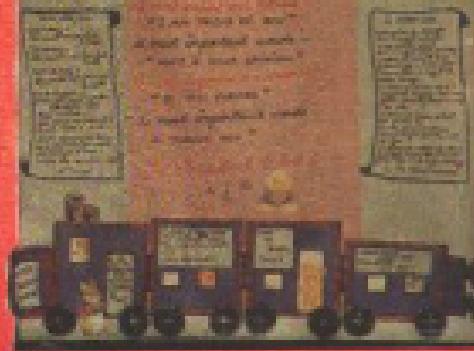
4A



YASHIET JOSEPH

## The Value of words

"The value of words  
is not measured by  
the most important words -  
but by the ones you say."  
"The value of words  
is not measured by  
the most important words -  
but by the ones you say."



## Lifelong Manners



## **WINNER OF THE BHARGAVA TROPHY**

**1998**



**Marhsai Pant.**

### **First place in the College in the I.C.S.E.**

English	90%	Mathematics	97%
Hindi	90%	Science	95%
History, Civics, Geog.	92%	Computer Sc.	95%

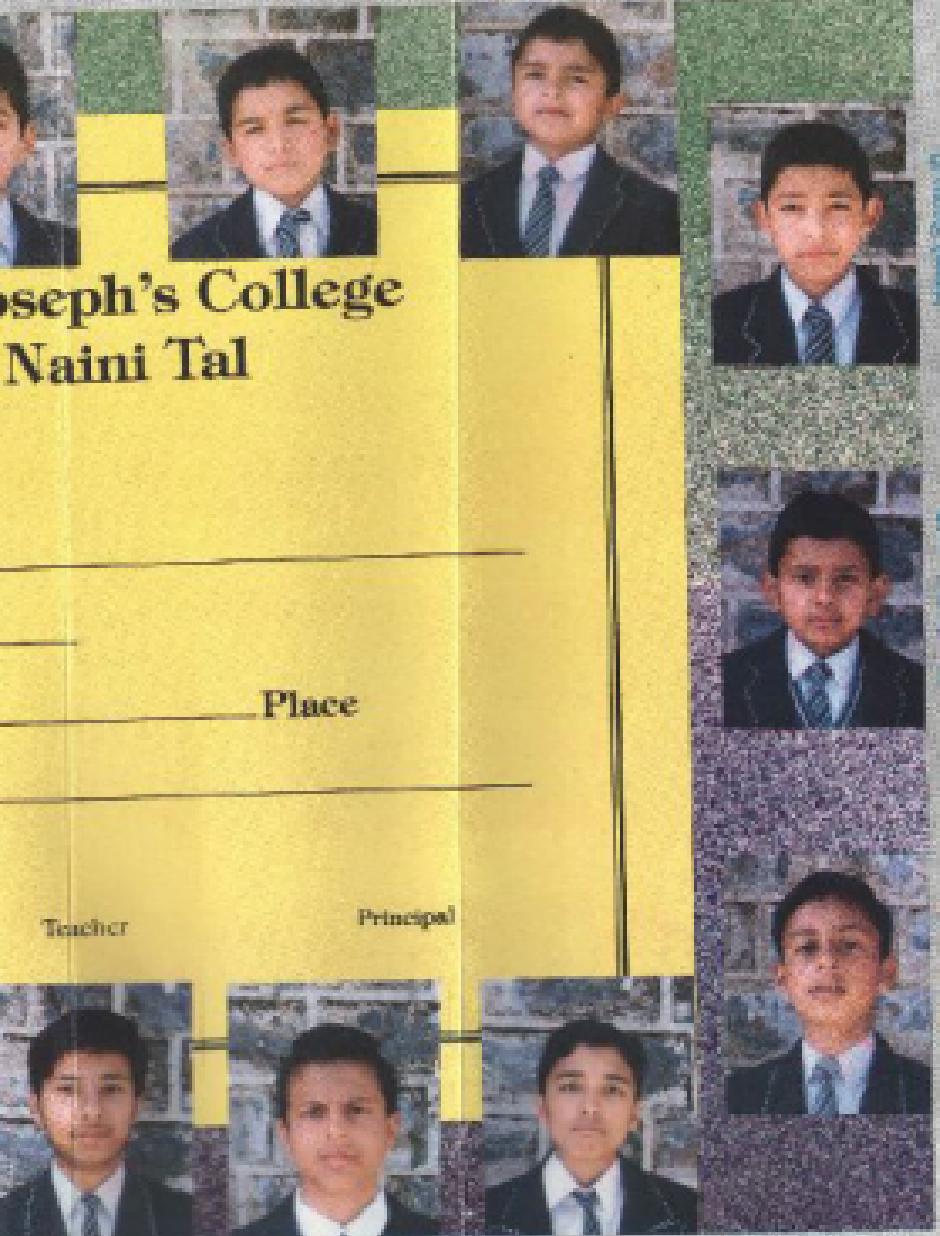


## St. Jose N

Awarded to \_\_\_\_\_  
of Class \_\_\_\_\_  
for securing \_\_\_\_\_  
in \_\_\_\_\_

Date

To



# St. Joseph's College Naini Tal

Place

Teacher

Principal



**CLASS - 1**

1. HARSHUL SHARMA
2. SAGAR LOHANI
3. ABHAY PAILEY  
BEST WORKER  
ANILKISHAN SAH

**CLASS - 2**

1. NAVEEN KUMAR JAMMAL
2. ABRINAV SAH - 1
3. TARUN KAVIDAYAL  
BEST WORKER  
NIRNIL SAH

**CLASS - 3A**

1. ANKIT SAH / RITU BHATT
2. ANKIT KANDPAL  
BEST WORKER  
PRATEEK CHAUDHARY

**CLASS - 3B**

1. SREHLI DEBNI
2. SAMEER DAURIAHAL
3. TUSHAR SHARMA  
BEST WORKER  
ROHIT CHAUDHARY

**CLASS - 4A**

1. MOHIT KANDPAL
2. KASHYAP AGARWAL
3. VINAY NEGI  
BEST WORKER  
VAISHY KUMAR

**CLASS - 4B**

1. HITANK SHARMA
2. ABITYA ZADATI
3. ANKIT KOKH  
BEST WORKER  
PELVUSH PANDAY

**CLASS - 5A**

1. BHASKAR PANDAY
2. KABAN DODHI
3. DHIRAJ KAWAT  
BEST WORKER  
KABIL SIGHT

**CLASS - 5B**

1. YOGENDRA KATHAYAT
2. SADAF AHMED
3. PUSKAR PANDAY  
BEST WORKER  
LENNON WU

CLASS - 6A

1. AVNEESH MAHAL
2. MUKUL SATI
3. SYED ZUBAIR NAQVI  
BEST WORKER
- ADHISH VERMA

CLASS - 6B

1. VIVEK PANDE
2. RAHUL BISHT
3. ABHISHEK ANAND  
BEST WORKER
- VINAY JOSHI

CLASS - 7A

1. ABHISHTA VERMA
2. LOKESH JOSHI
3. FAIZ ALI KHAN  
BEST WORKER
- SUMIT SINGH DORNA

CLASS - 7B

1. DILTAJEN PANT
2. ADIL ZAID ABDUL
3. HIMANSHU PANDRAY  
BEST WORKER
- PARAS BHATT

CLASS - 8A

1. AMIT SINGH
2. ROHIT TEWARI
3. MAYANK KATRAL  
BEST WORKER
- SHASHANK KUKREJI

CLASS - 8B

1. VIKRANT BISHT
2. VIKRANT SAM
3. ASHRAF KHINDA  
BEST WORKER
- MILAYA PANDAY

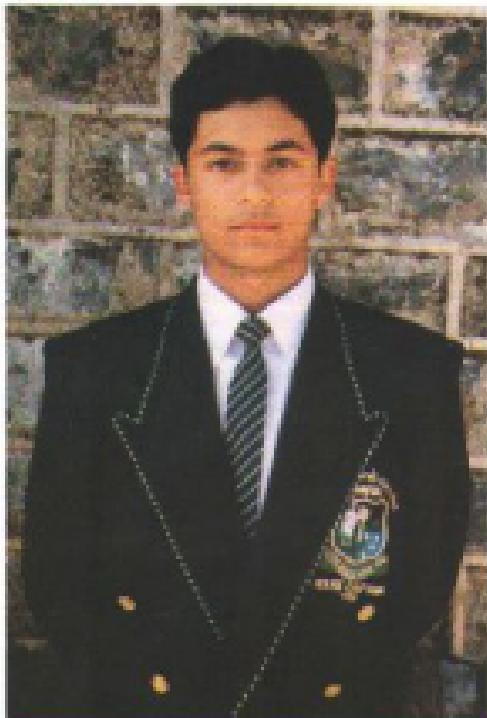
CLASS - 9A

1. SARAL
2. FARAH RATT KRISHNANI
3. MANISHA JAIN

CLASS - 9B

1. DHANAL S- QUREAIN
2. AMIT MAURANI
3. SHAILENDRA PULORIA  
BEST WORKER
- ANIL ATTAUL

**BEST ALL ROUNDER  
FOR  
1998**



Aditya Saus

## JOTTINGS 1998

- March 1st : The I.C.S.E. boys returned to College for a 'rehearsal' prior to the start of the examinations. Old Jesus is two-faced; but while he looks back compositely at the year that is gone, he cannot tell us anything of the one that is about to start. It depends on ourselves.
- March 4th : The full master returned this afternoon to a very chilly welcome from the weatherman.
- March 5th : Assembly this morning, the first of the year. The college prefects and captains for the year were installed.
- March 12th : Cold, chilly and there was a fall of hail. Chillykins are appearing to worry some of the younger folk.
- March 14th : Holi; full school holiday.
- March 16th : For better or for worse the I.C.S.E. examinations commence.
- March 18th : Three Brothers arrive from St. Columba's School, New Delhi to sample the cold of Naini Tal.
- March 20th : The visitors from Delhi leave.
- March 21st : No I.C.S.E. examination to-day as it was a full holiday in honour of the College patron, St. Joseph. A lunch was hosted to bid farewell to Mr. S.C. Shah who has retired from the teaching staff. The boarders dedicated the day-scholars in a friendly cricket match.
- March 24th : Br. Cumber, accompanied by Br. Ward arrived back from Delhi.
- March 26th : I.C.S.E. examinations are proceeding smoothly; the physics paper was a cause of anxiety for some.
- March 27th : The weather is turning warmer and the I.C.S.R. students are smiling now again after the Chemistry paper. Just one more paper left to complete before going-home day.
- March 29th : Arctic weather conditions once again.
- March 30th : The I.C.S.E. examinations terminate and the class ten boys left for home immediately at the conclusion of their biology examination. We wish them well in all their future undertakings.
- April 2nd : Very remote preparations commence for the annual sports.
- April 4th : Town walks for the senior classes.
- April 7th : The College closed this afternoon for the Easter recess. Only about fifty boarders remained back.
- April 9th : A very severe hailstorm struck Naini Tal this evening; much damage caused to fruit blossoms and flowers.
- April 10th : Weather has turned beautiful once again and the temperature is beginning to move upwards.
- April 12th : Easter Sunday. The boarders who did not go home for the break went on an excursion to Mukteshwar; they had a very enjoyable outing.
- April 14th : Boarders return.
- April 15th : Class-work resumes; The Principal leaves for Meerut. The weather is just lovely.

- April 16th : Monthly tests begin for all classes.
- April 18th : Weather still beautiful. Town walks.
- April 24th : Sports practice intensifies; weather very fine and warm.
- April 25th : The senior and middle school boys stayed up late last night to watch the cricket final between India and Australia. Brs. D'Souza and Christopher arrived to-day.
- April 26th : Heavy rain, wind and cold during the morning and afternoon. Electric power failure for most of the day.
- April 27th : The cold, wet spell has passed, and we are glad to see the sunshine once again. Brs. D'Souza and Christopher left for Delhi.
- May 1st : Rehearsal for the singing contest this evening. The girls of classes nine and ten of St. Mary's Convent attended.
- May 2nd : Final singing contest held this evening; no Town walks. Weather is rather warm.
- May 4th : Opening ceremony of the 111th Annual athletic sports. Some St. Mary's girls attended. The members of the Staff attended a tea party prior to the opening ceremony.
- May 5th : Founder's Day. The boys attended the Founder's Mass in the College chapel.
- May 7th : This morning there was a bad storm of unprecedented ferocity; thousands of panes of glass were smashed, electricity failed and consequently there was no water supply. Much damage was done in the Naini Tal area. We cannot expect many flowers or fruit in the district this year.
- May 8th : It was decided that the boys be sent home. Parents were contacted and by evening time over two hundred boys had left.
- May 9th : Fewer than thirty boarders in the College.
- May 10th : All boarders had left by this evening and the irony of the situation was that the electricity and water supply were restored by evening time.
- May 11th : Repair work commenced. It will take several weeks to have the damaged portions of the buildings restored. Fortunately the weather is fine and sunny.
- May 13th : Work is going ahead at a hectic pace to repair all the damage to the building. Fortunately the weather remains very fine.
- May 15th : Sports and drill display at St. Mary's Convent, Rambagh Park. A very pleasing display to watch.
- May 17th : Dr. S. Walsh arrived from Asuncion.
- May 18th : Another severe storm in the evening but not as damaging as the one of ten days ago. Repairs are continuing.
- May 19th : The Governor arrived in Naini Tal; his helicopter landed on the first field.
- May 21st : The Governor left for Lucknow.
- May 22nd : 25 C. Repair work continues.
- May 23rd : Full summer repair work continues.
- May 24th : Dr. Fitzpatrick departs for Ireland.
- May 25th : Br. Usha returns from Delhi. Repair work continues.
- May 26th : Routine procedure repair work continuing.
- May 27th : Boarders return.
- May 28th : Normal School day. Monday's programme.



- May 29th : School Assembly. Principal emphasises studies.
- May 30th : Senior School attended a Concert at Sherwood College.
- May 31st : Mr. T. M. McCann arrives.
- June 1st : Staff meeting.
- June 3rd : The senior boys attend the drill display at Sherwood College.
- June 4th : The staff members attend Sherwood College drill display.
- June 5th : I.Q. tests conducted for the senior school by a team from Coombe Psychological Institute, Haldwani.
- June 6th : The hot spell still continues and the temperature reaches a high of 27 degrees.
- June 17th : The I.C.S.E. results arrive; all except one candidate were successful.
- June 18th : At the morning Assembly the Principal congratulates the concerned staff and the students on the I.C.S.E. results.
- June 16th : The onset of the monsoon rains- gale force winds and 1.2 ins rain tell their own tale.
- June 19th : The 1991 I.C.S.E. batch play St. Joseph's in a friendly football game. Semis won 3-0.
- June 20th : At the morning assembly the Principal presented the Bhargava Memorial prize to Harshad Patel for standing first in the College in the I.C.S.E.
- June 25th : First term-examinations commence. A time for serious work! Mr. Myles Symes, an exchange student from England, leaves for home after a stint of four months here in '90.
- June 27th : Feast of Our Lady of Perpetual Succour: special chapel service.
- July 1st : No mistake about it; the Monsoon has really arrived in Naini Tal.
- July 2nd : Kosten Ram, a long serving becar in the College collapsed and died this morning while on his way to the College. We extend our sincere sympathy to his family. May he rest in peace.
- July 6th : Dr. Walsh, from St. Patrick's School, Asuncion, left this evening after a stay of two months here.
- July 7th : Bishop Rodriguez of Jamshedpur arrived to-day.
- July 11th : All examinations terminate. Deepavali ! Hoses leave granted until July 13th.
- July 12th : The World Cup football final viewed on T.V.
- July 21st : All results submitted to the Office; Some feeling anxious of the outcome!
- July 23rd : Heavy rain. The main road to the town from the College is washed away; it's feared that repair work will take ages to complete. Some day scholars will have to take a long route to College daily, as the road is closed to traffic and pedestrians.
- July 24th : Memorial service for Mr. Noronha, an old boy of the forties.
- July 25th : Parent - teacher meeting.
- July 26th : Minims football tournament commence. Semis defeated Samwal School.
- July 27th : Birthday celebration for Mrs. Palmer, Class teacher class 7.
- July 31st : In the minims football tournament Semis defeats Dolly House 3-0
- August 1st : College closed to-day because of a豪atal. The boys were fully occupied all day at indoor games and field games.
- August 3rd : Justice School election contest. Very enjoyable.
- August 4th : Final of the Minims football tournament between Semis and St. Austin's. The game ended in a draw so the trophy was shared, six months each.

- August 6th : The juvenile football tournament for the Independence Day Cup kicked off today with Sem B. team defeating Birla College 3-0.
- August 8th : Raksha Bandhan; full school holiday. Sem A. team defeated Birla College 3-1.
- August 10th : Sem A. team defeated Barwala School 3-0. In the Independence Day football Tournament.
- August 12th : Football Tournament; Sem A. defeated Saraswati Vihar 4-1.
- August 13th : Middle and Senior School elocution contest. A very good standard achieved.
- August 15th : Independence Day celebrations held in the College Auditorium because of the inclement weather. The juvenile football tournament final had to be postponed because of the incessant downpour.
- August 19th : Archbishop A. D. Lestic, Archbishop of Delhi, arrived for a short stay. The heavy rain persists.
- August 23rd : The juvenile football final goes ahead. In a very exciting game Sem. defeated St. Anselm's on the score 1-0.
- August 25th : Archbishop D' Lestic and Dr. Comber depart for New Delhi.
- August 26th : Table tennis finals were held this evening in the College gymnasium.
- August 27th : B.L. Sah Memorial football tournament commences with C.R.S.T. College defeating Sem on the score 3-1.
- August 29th : Probably owing to the very damp weather many boarders are in the College infirmary suffering with viral fever.
- Sept. 2nd : Tests commence for classes IX and X.
- Sept. 4th : B. L. Sah Football Tournament; under 18 Sem 4 Saraswati Vihar 0.
- Sept. 5th : Teachers' Day celebrated in the College. Special Staff lunch. The annual Aquatic meet was held to-day. A very enjoyable function. Football final, under 18, ended in a draw. In the penalty shoot-out St. Anselm's emerged winners by one goal.
- Sept. 8th : The boys attended the annual fete at St. Mary's Convent.
- Sept. 10th : Junior School Hindi elocution contest.
- Sept. 11th : Football, table tennis and badminton teams leave for Delhi to participate in the Edmund Rice tournaments. The Class X boys also leave this evening for the annual excursion to Agra and Jaipur, accompanied by Mr. M. Chanda and Mr. M. Joshi.
- Sept. 12th : Br. Fitzpatrick returns from his holiday in Ireland. School holiday to celebrate the football victories.
- Sept. 14th : Class work resumes for all classes except the I.C.S.E. class which is still on tour. Word received from Delhi that the Sem teams were victorious in the Delhi games having won the football and table tennis tournaments and being runners up in the badminton tournament so they were declared the over-all winners of the contests.
- Sept. 15th : The mornings still longer; cold and very damp weather.
- Sept. 16th : The victorious teams, football, table tennis and badminton teams return from New Delhi carrying the three trophies. Great excitement in the College. The class ten boys return from the trip to Agra and Jaipur; all tired but happy with the outing.
- Sept. 20th : Brs. Alvarez and Cole arrived here on inspection. The computer team returned from Lucknow where they participated in a symposium which was attended

- by forty-five schools. In the overall result Sem took third place. Rain this evening—maybe the last volley before the monsoons draw to a close.
- Sept. 22nd : St. Alvarez addressed the assembled Staff.
- Sept. 23rd : The monsoon still lingers and makes its dying presence felt with heavy rain this morning. Mrs. Alvarez and Gale left for New Delhi this evening. All the Staff members assembled for tea before their departure.
- Sept. 24th : Cold, damp, wet and windy.
- Sept. 25th : Concert for the junior school.
- Sept. 26th : The middle school boys attended the fete at St. Amtul's. Concert for the senior school. Town walks.
- Sept. 27th : Mr. Coaster returned from Delhi this afternoon. The girls from St. Mary's attended the concert this evening.
- Sept. 28th : Concert for the local schools, Sherwood College, all Sales College and St. Amtul's.
- Sept. 29th : Final showing of the concert for a big gathering of parents and friends. About two hundred boarders availed of leave.
- October 1st : Very monsoonal weather. Very quiet on the campus.
- October 4th : Bishop Pernarik of Ranchi administered confirmation in the College Chapel. Lunch for all afterwards. The boarders returned this evening.
- October 5th : Class work resumes. Students are not at their best as yet.
- October 7th : The junior boys attended the concert at St. Mary's and they were very pleased with the performance.
- October 10th : The first games in the inter-school basketball tournament on The Flats were played to-day. Sem beat C.R.S.T. College on the score 22-20.
- October 11th : Tests for the class three entrants were held to-day. Over 30 boys attended the Lake Chapel Church festival. In the basketball tournament Sem was given a walk-over by St. Paul's School, Kathgodam.
- October 12th : Class photographs for the College magazine were taken. In the basketball tournament St. Amtul's defeated Sem 45-24.
- October 13th : Biria College, Naini Tal defeated Sem in the semi-final of the basketball tournament, by three baskets.
- October 14th : Glorious weather. Preparations for the postponed Annual Sports going ahead as scheduled.
- October 16th : Principal's birthday; a party hosted by the class ten boys in the evening. Naini Tal was struck by a severe cyclone to-day; heavy rain all day.
- October 17th : The cyclone continues unabated. The College closes for the Diwali break at mid-day. About two hundred boys availed of the leave.
- October 19th : Diwali; the weather put a damper on the celebrations but still Naini Tal looked resplendent in its myriad of lights; those boys who did not go home for the occasion enjoyed themselves after dinner on the sacred field.
- October 20th : Boarders returned.
- October 22nd : Mr. Alvarez and five other Brothers arrived from Delhi for a one day visit.
- October 23rd : All sixteen visitors, from Ireland, Australia and New Delhi have left.
- October 25th : The marathon races were run all this morning for each of the athletic divisions A, B, C. Afterwards muscles showed signs of aches and stiffness!

## EASTER PICNIC TO MUKTESHWAR



On the 12th of April, the boarders in STM awoke earlier than usual. We were going for a picnic to Mukteshwar!

We had bought a lot of eatables on our town walks the previous day - all in preparation for the picnic!

As we trooped to the St. Joseph's Boat House at 9 A.M., we were in high spirits. The senior boys got into one bus, while we got into another one, with Sr. Beddoe.

We reached Mukteshwar at 11:30 A.M. All of us rushed out of our buses and we were welcomed by the magnificent Himalayan view. We were held spell-bound for a moment by the sheer beauty of the snow clad Himalayas.

All the boys dispersed in groups to explore the area. The walk into the forest proved to be very interesting. We came upon a huge rock which jutted into the valley and looked exactly like the one, the Lion King-Mufasa, had stood on. A group of boys discovered a monkey tied up in a sack!

After coming back to the rest house we had a hearty meal. We played games, sang songs and danced to our hearts' content.

We were taken to the spot where the Kumaoni Vikings Mandal is planning to build an area for hand gliding. Our imagination went wild trying to visualise gliding down the beautiful valley.

We reached Naini Tal at 5:30 P.M. exhausted, hot and sleepy.

We ended a very enjoyable Easter Picnic.

Deeray Singh

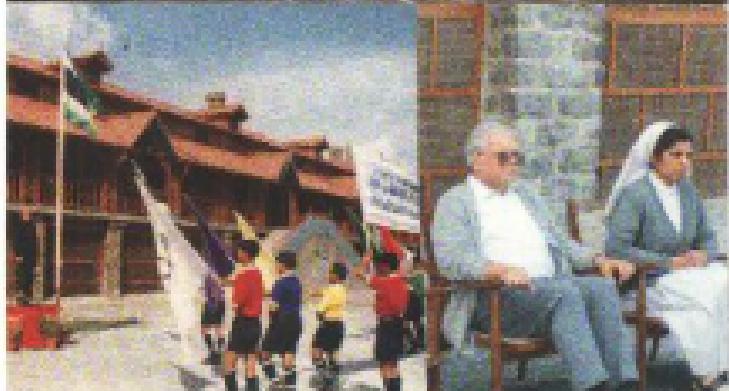
6 B



## THE ANNUAL SPORTS DAY 1998. OPENING CEREMONY

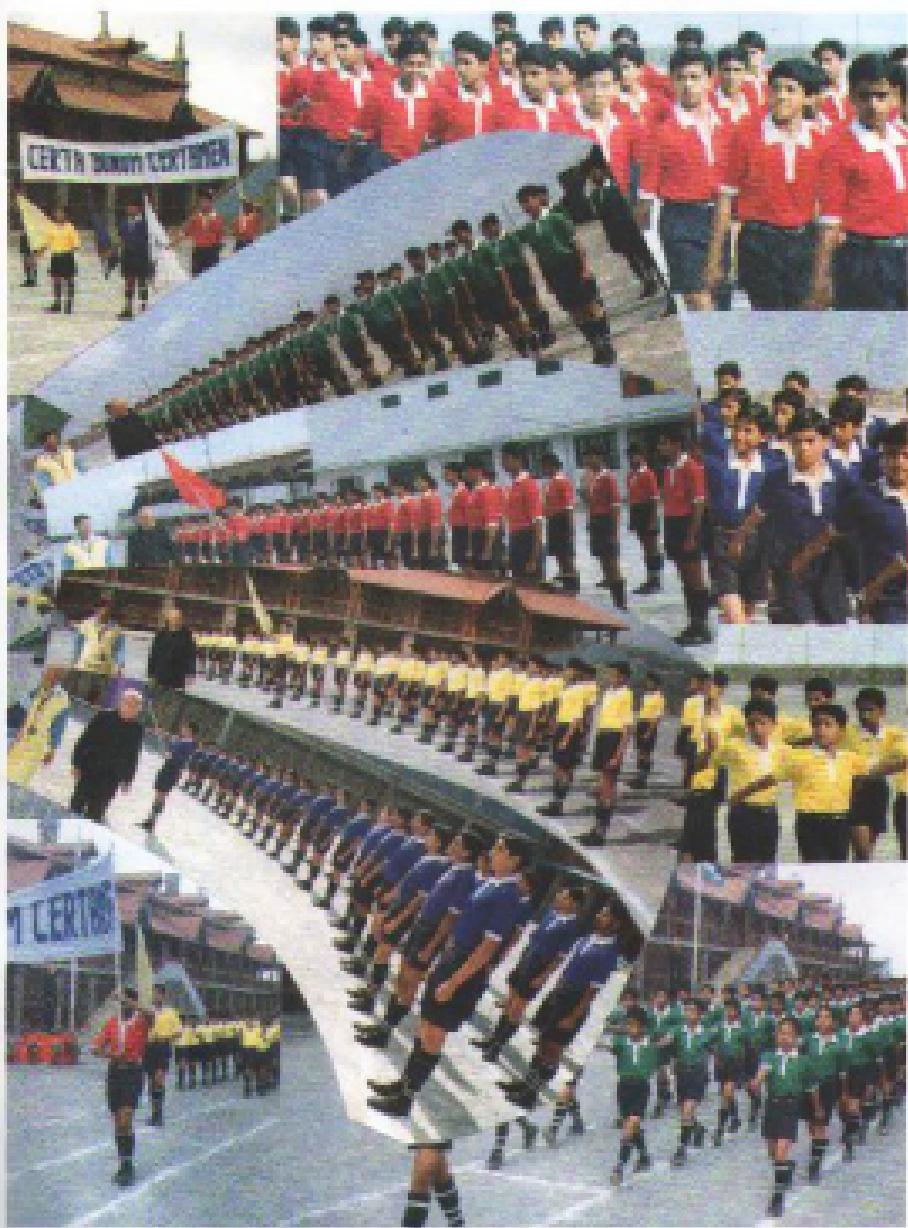


The opening ceremony of the 1998 annual sports meet and drill display took place on the 4th May. Mr. T. P. Fitzpatrick was the chief guest for the occasion.



The ceremony commenced at 3.30 P.M. The four College Houses, resplendent in their new uniforms were positioned on the running track in the main playing field. The chief guest inspected the Houses after which the March Past took place. The Olympic torch was carried to the resting place by the respective captains and then the Olympic oath was taken by all the competitors in unison. Then the chief guest declared the 1998 annual athletic meet open. As a sequel to this opening ceremony a huge hall storm hit Nairobi, Tel three days later and owing to the severe

Credit on page No. 30



## THE ANNUAL ATHLETIC SPORTS 1998



The 111th annual athletic sports of the College were held on the 31st October. It might be recalled that this event was to have taken place in mid-May but owing to the very inclement weather at the time it was decided to postpone the meet to a later date. In spite of the lateness of the year there was a very representative gathering of parents of the students, friends of the College and contingents from the neighbouring schools, St. Mary's Convent, Aundh's Public School, All Saints College and Sherwood College.

The meet was presided over by Mr. Umesh Sinha, I.A.S., Managing Director, K.M.V.N.L. Ltd., Naini Tal. At the outset, there was an impressive and colourful march past of the four College Houses for which Mr. Sinha took the salute. Without undue delay the athletic events followed in quick succession and the spectators were treated to some very exciting finishes particularly in the relay races. Interspersed with the athletic events there were items for the smaller boys and these events were amusing and very entertaining. After the short interval the various groups performed the drill exercises with precision and smartness. The very small boys of the junior classes were resplendent as butterflies and were accorded a great round of applause. This was followed by free arm exercises by the middle school boys; this was a very worthwhile event and was adjudged the best event in the P.T. display. The final event of the display was 'Tower of Hem' by the senior section of the College. The gymnastic team, in spite of the long lay off since May, performed some very exacting exercises and they did credit to themselves and their coach. After a final march past of the Houses in order of merit, the prizes were presented to the victorious athletes. The meet came to an end with the singing of the National Anthem by the assembled Houses.

The results of the various events are to be found elsewhere in the magazine.

Kamlesh Jain

10 A

From page No. 24

Damage caused to the buildings it was necessary to declare the College closed for almost three weeks. The annual day, fixed for May 17th, had to be postponed until the end of the year. The date had been fixed for the 31st October.

Sudarshan Joshi

10 A

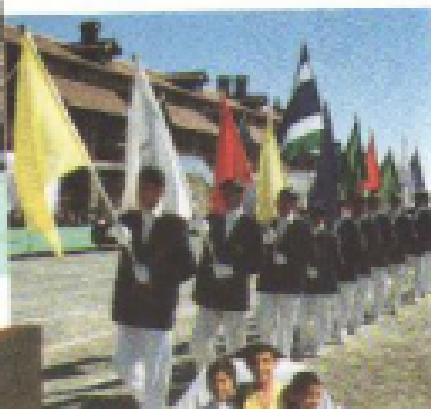


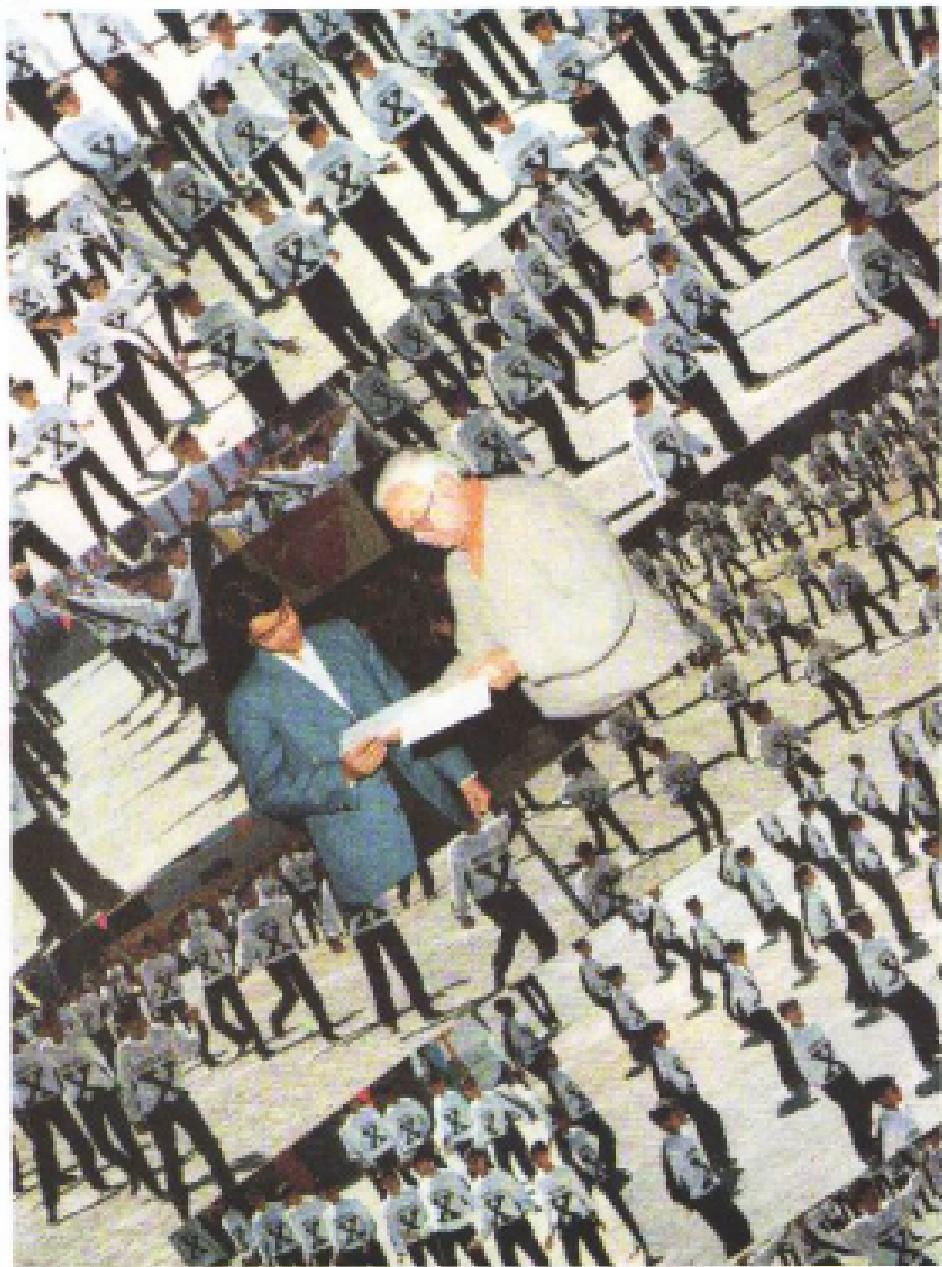
# SPORTS 1998

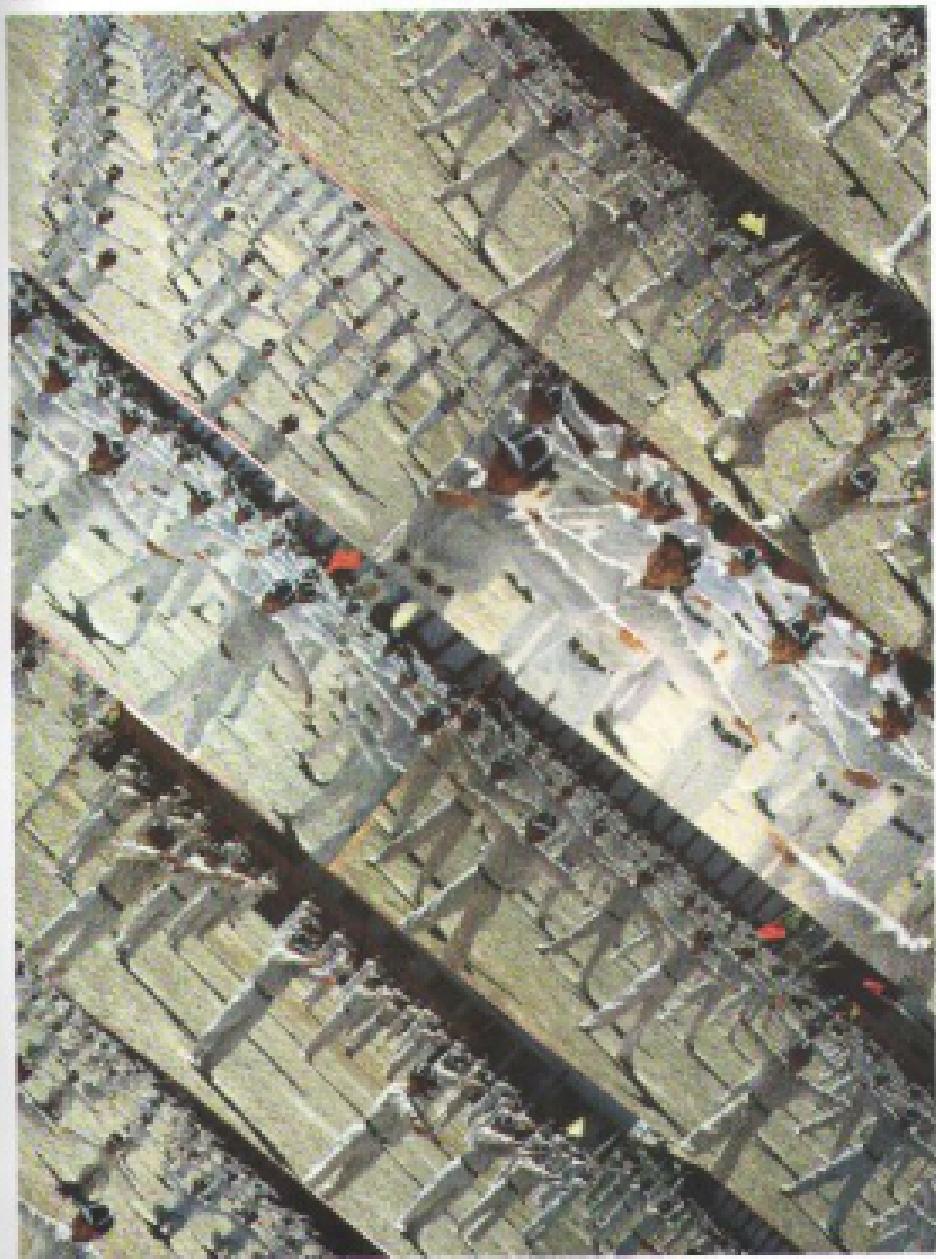
Mr. Umar Farha, I.A.S.



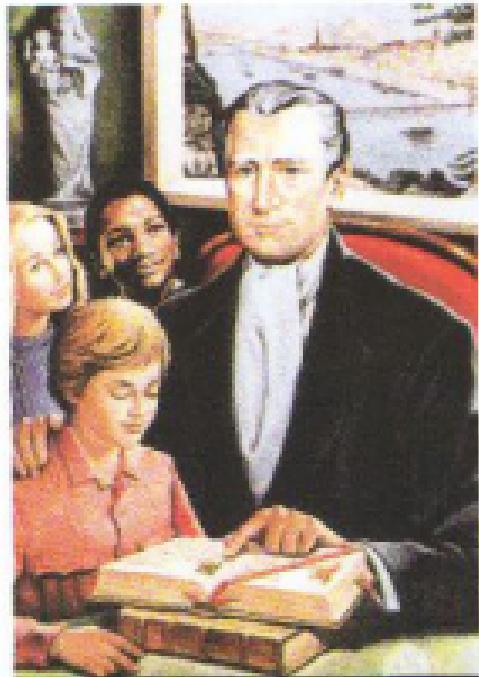
Best Athlete, A. Soun







## BLESSED EDMUND RICE PRAYER



### BLESSED EDMUND RICE

(1792-1850)

Businessman, Missioner, Founder,  
Teacher, Founder, Friend of the Poor.  
Beatiified 11 October 1990  
Feast Day: 9th May.

O God, we thank you for the life of  
Blessed Edmund Rice.

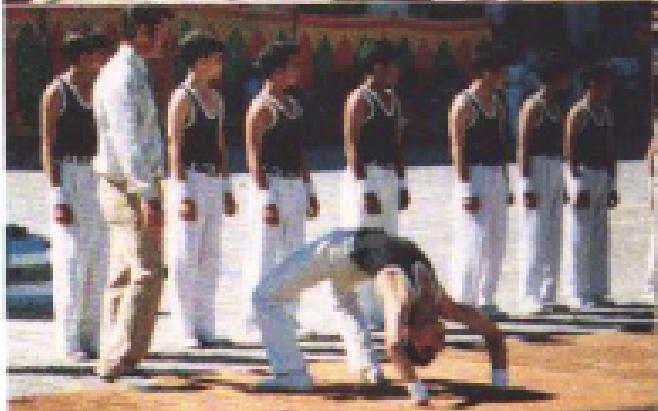
He opened his heart to Christ present in  
those oppressed by poverty and injustice.  
May we follow his example of faith  
and generosity.

Grant us the courage and compassion  
of Blessed Edmund as we seek to live  
lives of love and service.

We ask this through Christ our Lord.

Amen.



**GYMNASTICS****RACE**

## MOTHER



M is for the many things she gave me  
 O is only that she's growing old  
 T is for the tears she shed to save me  
 H is for her heart of purest gold  
 E is for her eyes of lovelight burning  
 R is for right and right she'll surely be.  
 Put them all together, they spell MOTHER  
 just the word that means the world to me.

## OUR MOTHER IN SCHOOL

Our Mother in school she is,  
 God's gift to us she is.  
 Loving and caring she is,  
 Our mother in school she is.  
 Smiling and helping she is,  
 Our Mother in school she is,  
 Mrs. Mukaiy she is.  
 Our Mother in school she is,  
 God's gift to all young Semites she is,  
 Our Mother at St. Joseph's she is.

Sister Ahmed

SA

*Three things in human life are important. The first is to be kind.  
 The second is to be kind. And the third is to be kind.*

- Henry James

## STATE OF MIND

If you think you are beaten, you are;  
If you think you dare not, you don't.  
If you like to win, but think you can't,  
It's almost a cinch you won't.  
If you think you'll lose, you're lost;  
For out in the world we find  
Success begins with a fellow's will;  
It's all in the state of mind.  
If you think you're outclassed, you are;  
You've got to think high to rise,  
You've got to be sure of yourself  
Before you can win the prize.  
Life's battles don't always go  
To the stronger or faster man,  
But sooner or later the man who wins  
Is the man who thinks he can.

Anon.

You have not lived a perfect day, even though you have earned your money, unless you have done something for someone who will never be able to repay you.

- Ruth Smeltzer

X

X

X

X

The test of courage comes when we are in a minority.

- Ralph W. Stockman

## LIBRARIES

A library is a public or private collection of books or manuscripts organized for the purpose of preserving them and making them easily accessible for reference and study.

The earliest known libraries, belonged to the Hittites, Assyrian - Babylonians, Hebrews and Egyptians.

Although whole collections of texts from Hittite and Assyrian - Babylonian libraries have survived in the form of thousands of clay tablets inscribed with cuneiform letters, very little has survived from the libraries of ancient Egypt, which consisted of fragile papyri.

It was Aristotle in the 4th century B.C. who first felt the need of collecting together the literary production of his time. In Hellenistic times the great library of Alexandria was founded, probably by Ptolemy I, and greatly increased by Ptolemy II in the 3rd century B.C.. It was said to have contained 700,000 volumes in the 1st century B.C..

During the Renaissance, libraries were available to only a small group of scholars; the type of library in which the books are principally for public use only came into being in the 16th century with the spread of printing, which meant that books could for the first time, be produced cheaply and in large numbers.

As of to day, every city, town, school and individual can boast of their own libraries and St. Joseph's College is no exception. We here at Sem strive to keep our library well stocked and up to date and manage to satisfy the staff and students.

Peter Dorey

*Maturity begins to grow when you can sense your concern for others outweighing your concern for yourself.*

- John MacNaughton

# INDEPENDENCE DAY



## INDEPENDENCE DAY AT ST. JOSEPH'S COLLEGE



Independence Day is celebrated in every village, town and city of India every year in a spirit of joy and thanksgiving; likewise the enthusiastic celebrations arranged by the class X boys in St. Joseph's were certainly a match for the rest of the nation.

Owing to the rather inclement weather the College function took place within the auditorium with the Principal, staff, students, some visitors from St. Mary's Convent being present.

"On this auspicious day, let us remember our great national leaders and freedom fighters - Mahatma Gandhi, Nehru, Lajpat Rai and others, whose sacrifices for their Motherland form a glorious chapter in Indian history". This was the theme of the majority of the speakers in their efforts to pay tribute to our beloved heroes of the independence movement. And their efforts were not confined to one language - we had speeches in Hindi, Marathi, Urdu, Punjabi, English, to highlight the special character of India, - unity in diversity. Patriotic songs were sung with great gusto adding to the enjoyment of the function.

It was very fitting that at the end of the function, Sr. Dominica from St. Mary's Convent, Narsi Tal, who looks after and cares for the material welfare of a leper colony in Halkwani, was presented with a sum of money collected over the months by the students of St. Joseph's, to help her in her very commendable work for the often forgotten section of our society.

Keral Report

9 A

*Honesty is the first chapter in the book of wisdom.*

- Thomas Jefferson

## GANDHIJI'S TALISMAN

Gandhi visualised an India that makes no distinction between man and man, based on caste, creed or religion. He gave a simple talisman to the leaders and people of his country. "Whenever you are in doubt, or when the self becomes too much with you, apply the following test: Recall the face of the poorest and the weakest man whom you may have seen and ask yourself if the step you contemplate is going to be of any use to him. Will he gain anything by it? Will it restore to him a control over his own life and destiny?

In other words, will it lead to "Swaraj" for the hungry and spiritually starving millions? Then you will find your doubts and your self melting away".

It is a pity that Gandhiji is totally forgotten in the land of his birth and both the leaders and people have only learnt to pay lip-service to the ideals of a great son of India.

Truly it is said: "The good is often interred with their bones"

Editor: John J. O'Brien

## WHAT WOULD HAPPEN IF THERE IS A THIRD WORLD WAR?



Another world war would be fatal for all of us. It would be a NUCLEAR WAR. Every country would be actively involved in this war which would only spell destruction for the world.

The world would be converted into a battlefield where millions would die and millions would be permanently injured-countries would be shattered. Nuclear bombs and ICBM missiles would destroy humanity.

We are repeatedly told we are all brothers and sisters and so we must love each other. Do brothers kill sisters? Do brothers fight among themselves? We need a LOVE which stands for EMPATHY, which stands for CARING, which stands for HELPING. Yes, it is only that LOVE which can save us from total devastation and prevent a THIRD WORLD WAR.

Student-Kavithi  
6 A

## WOULD BUDDHA HAVE REALLY SMILED?



It is one of those quirks of history that the quest for military nirvana in India is inextricably linked to a man who dedicated his life to peace.

On the 18th May, 1974 the then Prime Minister received a phone call from Pokhran reporting "The Buddha has smiled". A code meaning that India's first nuclear test had been successful.

Exactly 24 years later, Prime Minister Atal Bihari Vajpayee chose the auspicious Buddha Purnima (11th May, 1998) to trumpet India's status as the world's sixth nuclear weapon state. Three simultaneous nuclear explosions rocked the scorched desert sand of Pokhran. Two days later India conducted two more tests at the same site.

The international community criticized these tests vehemently and many protests were held against them. Australia and New Zealand were the first to react by calling back their ambassadors from Delhi. Japan stopped an aid of 380 million dollars. The World Bank postponed two loans of 116 million dollars and 134 million dollars. Many other countries including the United States, Canada, Germany, Italy and Holland stopped economic help and imposed heavy trade sanctions on India.

But the Indian spirits were not to be demoralised by these sanctions. Atal Bihari Vajpayee said India was self-sufficient to fight these sanctions and the Indian economy would not suffer. He urged the Indians to adopt 'Swadeshi' and boycott foreign goods. He further said that India had planned a rapid series of policy moves and investment clearances to counter the economic sanctions. He also said that India could not sign the Comprehensive Nuclear Test Ban Treaty (CTBT), as urged by some big nations and the Security Council itself, unless India is recognised as a nuclear weapon state; for the treaty is partial, allowing only the nuclear weapon states to conduct these tests.

The edge India gained over Pakistan proved to be transient for Pakistan conducted tests on the 28th and 30th of May, respectively. The country also had to face sanctions like India and had to undergo an Emergency.

This nuclear weapon race is taking us nowhere. In spite of money being spent to eradicate poverty, hunger and disease, it is being wasted in destructive purposes. But in a world where some countries have these catastrophic devices, it becomes a necessity for the countries to possess them. Since the five countries, United States, Russia, France, Britain, and China have tested their nuclear weapons, they have got no right to criticize our tests.

As for my opinion I would like all the countries to destroy their nuclear weapons, but if they don't India should surely arm itself with these destructive devices.

# TEACHERS' DAY



1998

I will Never Forget You!  
I have carved you  
on the palm of my  
hand. You  
are precious  
to me ....  
I love you

(Galax)

O GOD, WE THANK YOU FOR THE  
LIFE OF VENERABLE RONALD RICE.  
MOVED BY YOUR SPIRIT HE  
OPENED HIS HEART TO  
CHRIST PRESENT IN  
THE POOR. MAY WE  
FOLLOW HIS EXAMPLE

IN OUR LIVES,  
AND  
RESPOND IN  
LOVE AND SERVICE.



## TEACHERS' DAY 1998



Teachers' Day, on the 5th of September happens to coincide with the birthday of our 11th President, Dr. S. Radhakrishnan, himself an eminent scholar and an educationist par excellence. It is justly fitting that on this day teachers are felicitated by their students.

Teachers are in loco parentis and play a very vital role in the lives of their students. So it is only right and fitting that we, students, celebrate this day to honour our teachers. On the 1st September our Principal informed the class eight boys that they would be entrusted with the running of the College assembly, a very special one, on the 5th September. The students of these two classes prepared very assiduously and the assembly was a departure from the ones we were accustomed to, a great success and commended on very favourably by all the staff members. The assembly began and ended with a special prayer and as well the boys enacted a short playlet depicting the meaning of a student-teacher relationship.

Afterwards the Principal and staff members were invited to each classroom to witness the efforts of the boys in song, dance and recitation to make the day a memorable one for the teachers, who in turn thanked the boys for what they had done to make their day a happy one.

I would like to conclude with this little poem which highlights the influence of teachers on young minds:

I took a piece of living clay,  
And gently formed it day by day,  
And moulded with the power of art,  
A young child's soft and yielding heart.  
It came again when years were gone,  
It was a man I look upon,  
He still that early impress wore,  
And I change him never more.

Vikram Singh  
8 A

## WHAT I WOULD LIKE MY TEACHER TO BE



What would I like? Now, let me think!

I would like a lady teacher because only lady teachers possess that motherly love and care that we all crave for. I would like my teacher to be young, smart, loving and caring and as well she should have a nice sense of humour. I would like her to take us out for nature walks, tell us interesting stories and organise craft lessons - we all like craft work. I would like my teacher also to be interested in cartoons, just as I am and we could build funny stories about them. This would be great fun. I would not like my teacher just to talk from the text book and use chalk on the blackboard. I would like her to tell stories and pose riddles for us to solve; I would be glad also if my teacher was interested in the various games that children love. Above all, the teacher should teach us how to help the poor and to grow up to be good people and wise citizens.

Ajiva Patel

4 A

## SONG OF THE BIRD

(Be what God intended you to be)

A man found an eagle's egg and put it in the nest of a barnyard hen. The eagle hatched with the brood of chicks and grew up with them. All his life, the eagle did what the barnyard chicks did, thinking he was a barnyard chicken. He scratched the earth for worms and insects. He clucked and cackled. And he would thrash his wings and fly a few feet in the air.

Years passed and the eagle grew very old. One day he saw a magnificent bird above him in the cloudless sky. It glided in graceful majesty among powerful wind currents with scarcely a beat of its strong golden wings. The old eagle looked up in awe. "Who's that?" he asked. "That's the eagle, the king of the birds," said his neighbour. "He belongs to the sky. We belong to the earth - We're chickens" So the eagle lived and died a chicken, for that's what he thought he was.

Anthony DeMello

## OUR E.P.T. CLASSES



Our E.P.T. classes started on the 8th of March 1998, just a few days after the College had reopened. These classes were organised by Erchon Program for Thinking. The main aim of this program was to make us better thinkers, especially focusing on English essay-writing. We were introduced to Mr. Sylvester Gomes who was our facilitator and Instructor. He was a helpful teacher, and without his assistance we would not have gained as much as we did.

These classes were held in two parts, the first part from the 8th to the 28th of March and the second part from the 22nd August to the 2nd of September. Classes were held everyday except on Thursdays and were regularly attended by the enthusiastic students and our class-teacher. We were given work-booklets prepared exclusively by Erchon. These were of great utility. Our class of 58 was divided into eleven groups and each group was assigned a number. We were to work in groups and at times independently. During these classes we got many tips on influential and flawless essay writing. These were like PUPILS (people, objects, places, brand names, expressions, activities, nature and symbols associated to the essay), P.D.I (positive, negative and interesting points of a particular title) and L.C.C. (listing causes and consequences) etc, which were of great use.

The second part was as interesting as the first one and enhanced our writing skills as much as the first session. Finally on the 2nd September we received a certificate each, for participating in the "thinking revolution". We bade farewell to Mr. Gomes and thanked him for his great help and assistance for enabling us to think better.

Lokesh Joshi  
B.A.

*There are always two choices. Two paths to take, one is easy. And its only reward is that it is easy.*

- *Author unknown*

## THE ANNUAL CONCERT



This year the Senior and Middle - School boys of St. Joseph's College staged two dramatic comedies as their contribution to our Annual Concert of 1996. The Senior Classes staged "Charlie's Aunt" while the Middle School - including boys from classes eight and nine - staged "The Postesses of Isphahan". For both these plays Mrs. P. Rathore, Mrs. J. Gill & Dr. M. R. Reddick acted as directors, producers, choreographers and menders of broken lines. Their efforts achieved dramatic results.

Concert time for S.J.C. this year involved a succession of five performances. The first two performances were for the entertainment of our Seniors and Juniors. Then there followed stagings for the benefit of our neighbouring schools, St. Mary's Convent, All Saints, Austral, and Sherwood College. Finally we rang in our "Gala Night" - the evening of Sept. 30th - when our parents were with us and "every one who should be here was here". Fortunately our histrionic talent measured up to the requirements. That night the audience's reaction was one of restrained approval. Mrs. Jayanti Chandra, I.A.S., Commissioner of Kumaon Division, who was guest of honour at our final staging was most gracious in her words of appreciation.

From time to time while sets and props were being positioned and while actors were being made ready to step on stage, the College Choir took up the running. These youthful singers performed under the direction of Br. O. A. Ballantine with Mrs. J. Stephens at the piano. The rendition of "The Holy City", as concert - time moved on towards evening's ending, was particularly moving.

Now, lest we forget, let us devote a thought and a word of thanks to the people behind the scenes. These were the sound and light experts, the set and prop shifters, the make-up artists and the costume designers. These did not appear before the audience but without their efforts the shows would not have gone on. Thank you to each and every one of them.

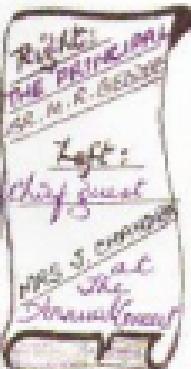
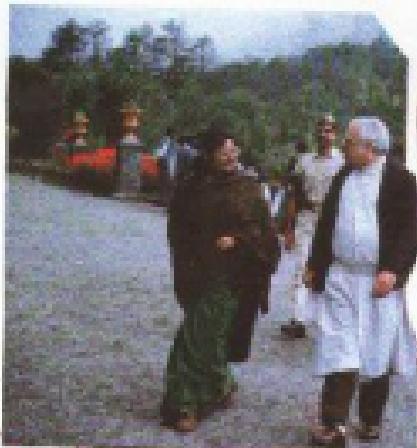
1996 concert time - here we come!

Aditya Seven

13 A

*Patience is a bitter plant, but it has sweet fruit.*

- German Proverb



### NARRATORS

RAGHAVAT KRISHNAMURTHY  
KANISHKA JAIN

*troupe*

*Our Make-up*

MRS. S. PALMER  
ANDERSON NATION



Mrs. M. Palmer / TRAVIS WHEELER

Mrs. DOTTI / BRIAN WHEELER



1 I wish to see Mr Cheaney

2 But he's an awful idiot!



3 You must be Charlotte  
aunt.

4 It's my  
washing day.

5 The Captain is about  
to leave - wouldn't  
you like to come along?



6 The girls won't remain  
without a chaperone.

7 A glass of Champagne  
and we're off.

8 I'm afraid you  
can't stay after today.

# CHARLIE'S AUNT



"SHE'S TERRIFIC!! THE PRINCIPAL, SUPERBODGE PRODUCER, DIRECTOR

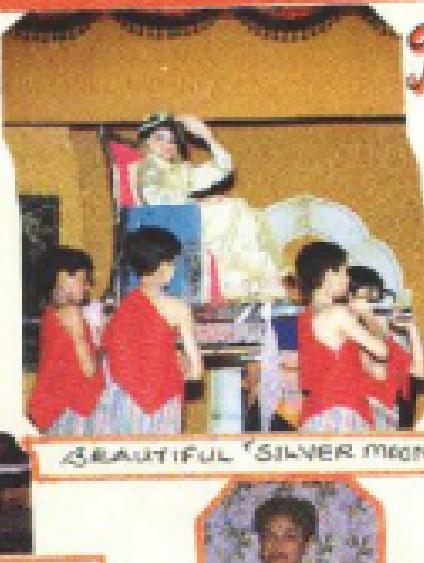


# The Poetasters

# of Isfahan



LIKE A KING BABOON ??



BEAUTIFUL 'SILVER MOON'



HANIBAL MADE THIS VERSE  
— I SWAGGED.

COON? DOON? COON? SUFFORD THE CENTURE PRIZE





ONE WORLD OF COUNTRY

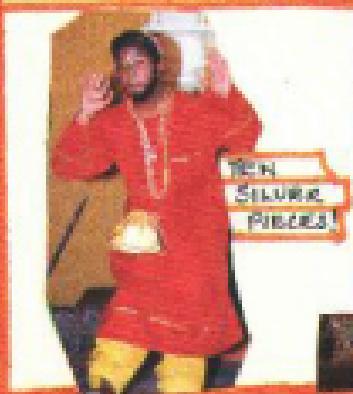


MRS J GILL  
Co-Producer - Director  
GIVE ME YOUR LOVE



MY FRIENDS ARAB PRIEST

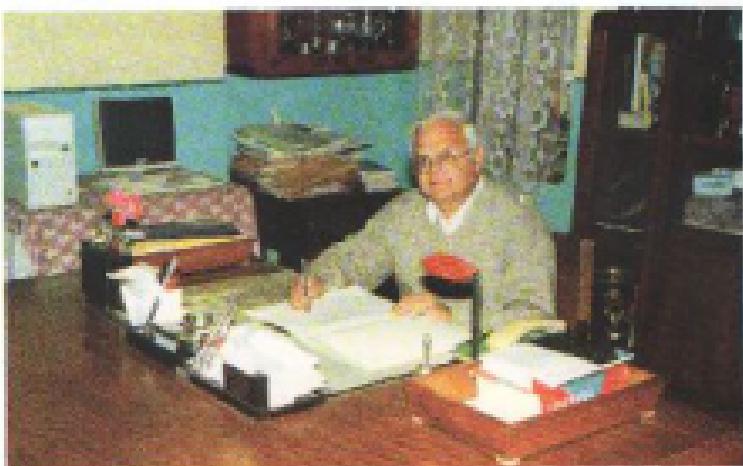
GEOFFREY HOWARD  
PAUL SHERIDAN DIRECTOR

TEN  
SILVER  
PIECES!

# Barbie and Ken



## PRINCIPAL'S MESSAGE



At the conclusion of yet another scholastic year in SPM, the obvious thing to do is to take stock of events: good, bad or indifferent and dwell on matters that are relevant and a tendency to erase from the mind anything that is trivial or of no consequence.

Perhaps high up on the list, would be the effort of our staff to maintain high standards that are expected of our boys at all levels of their development. Discipline in SPM without being too rigid is nevertheless a requirement in the College. Further, a sense of belonging and that freedom to grow in the child's experiences and activities as he is exposed to the wonderful world God has prepared for him, is top priority with Christian Brother Education.

My Prayer for each of us in SPM is best expressed in the following verses:

I do not ask to walk smooth paths  
Nor bear any easy load.  
I pray for strength and fortitude  
To climb the rock strewn road.  
Give me such courage I can scale  
The hardest peaks alone  
And transform every stumbling block  
Into a stepping stone.

(Call Brook Burke)

Cod Bless You,

(Dr. M. R. Svaldi)



## SPIRALLING PRICES (1998)

The year 1998 has been a very difficult year for the average middle class family in India. The unprecedented rise in food and grocery prices, have burdened their budgets to an unbelievable extent.

A sluggish economy, failure of crops, and the government's policies, (which lack a certain boldness), may be listed as the cause for this steep price rise.

As a sense of dismay sweeps over the country, prices of essential commodities continue soaring. Last month, the small onions, generated the biggest news in the country- with the prices shooting up to Rs. 60 a kg. With potatoes at Rs. 20, tomatoes at Rs. 32, pulses at Rs. 44, the common Indian was left with very little choice.

We do accept that the vagaries of Indian weather have played havoc with the crops. However, had the Government anticipated the shortage and reduced exports, the situation would not have been catastrophic.

However, we are also to blame for the current situation. Whenever there is an economic crisis, people go on a panic buying spree. After onions - it was SALT ! Media reports fuelled panic at the consumer level, predicting an acute shortage of salt. As the news spread like wild fire, people all over the country resorted to panic buying of salt. It is reported, salt sold at Rs. 60 a kg in New Delhi. On that particular day, hoarders had a field day putting their stocks underground !

What a contrast between our attitude and the British ! During the Second World War, following an acute shortage of eggs in Britain, Mr. Winston Churchill appealed to the people, that only expectant mothers and convalescent persons, should consume eggs. People queued up before egg stalls - not for panic buying, but to return surplus eggs which they had with them ! We lack that social sense and responsibility.

Scarcity boosts prices - hence the only remedy is curbing demand through self restraint. With the weapon of self - denial we can fight the anti - social hoarders and political exploiters who reap fortunes out of natural calamities.

Economics Class of IITM  
1998

**Folk singers, onions to lure electorate**

was promptly adopted by every "One Delhi" Government, already heralding the other political parties' machinations, on the eve of April elections, investigating another Government's vice.

But tribunals' findings have not changed the situation at all, according to OPI.

"This is a spurious story,"

said a senior official, "and for the record, no supplies do reach us."

"This is a spurious story,"

said a senior official, "and for the record, no supplies do reach us."

"This is a spurious story,"

said a senior official, "and for the record, no supplies do reach us."

"This is a spurious story,"

said a senior official, "and for the record, no supplies do reach us."

"This is a spurious story,"

said a senior official, "and for the record, no supplies do reach us."

"This is a spurious story,"

said a senior official, "and for the record, no supplies do reach us."

"This is a spurious story,"

said a senior official, "and for the record, no supplies do reach us."

"This is a spurious story,"

said a senior official, "and for the record, no supplies do reach us."

"This is a spurious story,"

said a senior official, "and for the record, no supplies do reach us."

"This is a spurious story,"

said a senior official, "and for the record, no supplies do reach us."

"This is a spurious story,"

said a senior official, "and for the record, no supplies do reach us."



in the city, the onion price in South Delhi shopped down from Rs 10 per kg to 8 per kg, the consumer who came to the store, as soon as it opened, bought the last half of the 45 kg.

Vijay Kumar Chatterjee, the Kisan Chhatra Sangathan, claimed in a letter to the minister, "The cost of onion in the market, is about Rs 10 per kg, and then there is a lot more. That is to say, less than Rs 10 per kg can buy them in large quantities. It is a big job to buy onions at such a low price in the southern markets."

A senior Delhi-based politician said that the onion price has come down to 15 rupees per kg, and that the market price of meat, mutton and fish packages without two hours of waiting. The consumers started buying onions in panic buying, by 20 rupees per kg.

In Bihar, too, the onion price has come down to 10 rupees per kg, and it will always be so, he said. His explanation began on the assumption that there were no importers from abroad. He added, "Importers will never buy onions at such low prices, because they will not be able to sell them at a profit."

The government's claim that onions are being imported at 10 rupees per kg is also untrue. The government does not buy onions at 10 rupees per kg, he said.

He further said that the government has been trying to bring down the price of onions by giving incentives to farmers. This is a good idea, but it has not worked. The government has been trying to bring down the price of onions by giving incentives to farmers. This is a good idea, but it has not worked.

He further said that the government has been trying to bring down the price of onions by giving incentives to farmers. This is a good idea, but it has not worked.

He further said that the government has been trying to bring down the price of onions by giving incentives to farmers. This is a good idea, but it has not worked.

He further said that the government has been trying to bring down the price of onions by giving incentives to farmers. This is a good idea, but it has not worked.

He further said that the government has been trying to bring down the price of onions by giving incentives to farmers. This is a good idea, but it has not worked.

He further said that the government has been trying to bring down the price of onions by giving incentives to farmers. This is a good idea, but it has not worked.

He further said that the government has been trying to bring down the price of onions by giving incentives to farmers. This is a good idea, but it has not worked.



## Onions spice up MP poll scene

**Onion import under OGL may ease shortage: Govt**

## HAIL STORM IN NAINI TAL



The 7th of May was a holiday for Muharrum. No one was aware of the terrible hail storm that was going to strike Nainital in a couple of hours. The day was dark and dreary and so were our hearts. The sky was full of dark, foreboding clouds and there was an ominous silence in the air.

After breakfast we were told to go into the study hall, as it had already started raining. Just as we had settled down in our places, our attention was drawn to loud claps of thunder followed by lightning. Then came the hail pelting down! The hail was accompanied by winds at the speed of 90 km/hr. The hail stones were the biggest I had ever seen!

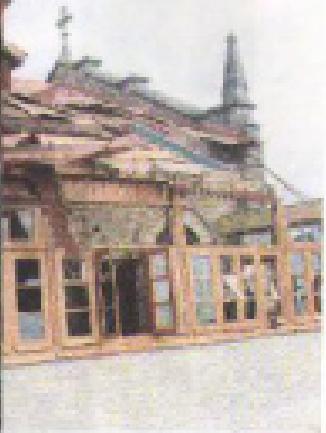
All of us sat huddled in our places with growing concern over the damage the storm wreaked outside. The study hall roof began to leak in places. The partition between the study hall and Biology Lab started shaking. We were totally unprepared for a storm of this magnitude. The outburst lasted for an hour but that hour was the longest I can ever remember. All this time the hail stones continued, speculating.

At last the storm subsided. When we went out we were surprised to see the damage caused by the hail stones. The first thing I noticed was piles of hail all around. It looked as if it had snowed. Thousands of glass panes lay shattered owing to the impact of the huge hail stones. It was dangerous walking on the splintered glass. As we walked around the College the damage done in this one hour shocked us into silence. The north side of the school took the brunt of the storm. Mr. Murray's room was a wreck. The roof had been blown off. The huge concrete cross over Class VII had been rudely pulled off by the strong winds. The big storage water tank had blown into the Government grounds. Beds in the dormitories were soaked.

Later in the evening we were permitted to go down to town, as we had been confined indoors all day. The town seemed as if it had been hit by a major calamity. The trees were shorn of their leaves and everything looked desolate and bare. Everywhere we saw the carnage - trees had been uprooted and shattered glasses lay all around. Even the vehicles parked on the road side were a sight! Wind screens were smashed into smithereens, and the impact of the hail left permanent dents on the vehicles.

The school had to be closed for three weeks to enable the authorities to repair the damage caused by this devastating hail storm. This experience made the people of Nainital aware of the forces of nature.

Mitali Suri  
TA



## LANDSLIDES IN NAINITAL.



As the monsoon reaches Naini Tal every year we hear a lot of hue and cry in the town about the danger of landslides.

Landslides are the downward movement of hill-slope masses including soil and rocks. My father told me that the hill slopes of Nainital are highly fragile and prone to landslides. In the past, many slides have taken place in the township of Nainital. It is built on debris generated by the landslides.

The Naini Peak - Snow View landslide of 1867 produced huge debris on which are situated the Break Hill and Nainital Club. The Snow View slide that took place on September 18th, 1880 was a culmination of heavy rainfall. The huge slide wiped out a part of the township including the holy temple of Naina Devi. The present Ropeway, the Modern Book Depot and the Boat House Club are located on the debris of that landslide. It was one of the most recent catastrophes in the living memory of the people. The debris avalanche killed 143 people and transformed the north western part of the lake into what is known as the 'Plato' today.

Similarly the East Legon (Raj Bhawan Road), (Phansid Gadhera) slide of July 31st, 1939 and Purbeck Lodge slide of 1958 are fresh in the minds of the people. The Kilkhan, Bela, Harwanengash slides are threatening the very existence of our Nainital. The rock falls which occur on the unstable slopes of the township pose problems to citizens as the overhanging rocks may slide down any time.

I was informed that there are natural reasons for the failure of the hill slopes of Naini Tal, as these rocks are highly fractured, folded and cut by a number of faults. The constituent slopes are highly unstable. The recent unplanned, unscientific growth of the township, ever growing traffic and increasing population have further aggravated the situation.

It was on 31st July, 1998 the East Legon (Near D.S.R. Campus) was again struck by a heavy landslide. Fortunately there was no loss of life. A part of Raj Bhawan Road and slope slipped and huge debris and vegetation plunged into the lake. The landslide completely obstructed the traffic. The slide appears as a bad scar on the face of Naini Tal. The school going children have no option but to go to school by longer and inconvenient routes.

This is the time to learn from the lessons of nature. We must take steps to control the unscientific growth of fragile Nainital. Otherwise, it will be too late and the coming generations will know about Nainital only through history books and through pictures.

Omkar Pant

7A

## A GOOD DEED



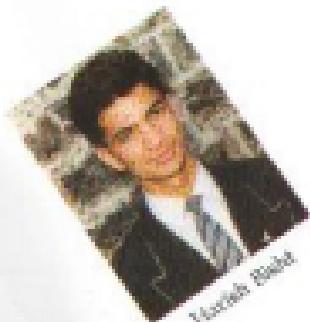
On a misty, rainy morning of Saturday, the 17th October, as Harish Bhat (9B) and Anirudha Gangola (9A) made their way up the hill to College, they noticed smoke and flames issuing from a window on one of the nearby houses. Assuming that it was merely a minor fire they continued on their way, thinking that it was already under control. An old man going in the opposite direction accosted them and exclaimed, "Oh ! that house is on fire". Immediately both Harish and Anirudha rushed back towards the house.

In the courtyard was a boy nervously pacing up and down. They shouted to him, "Do you need any help?" Immediately he replied, "Yes, Yes". Both the boys rushed to the house and in spite of two fierce looking abation dogs, made their way inside. They were met by a wall of flames. The whole kitchen - wood-work, curtains, and table - were ablaze and there was an overpowering smell of gas. In the midst of all this was a very old woman trying her utmost to extinguish the flames but without much success. The two boys first took her outside to safety and then went back to do battle with the flames by throwing water and sand on them. After about ten minutes all danger had passed and only smoke and some ashes told the tale that could have ended in disaster only for the prompt action of the two brave lads. They opened all the windows to allow the escaped gas to seep out and then Anirudha phoned the police and the fire brigade to make doubly sure that all was well and that the last vestiges of fire were quenched.

The lady thanked the boys profusely and then they made their way to College none the worse for their taste with the spreading fire, but with their uniforms smelling of the pungent gas. It was a good beginning of the day for them and they are to be congratulated on their very good deed.

Melody Pantry

9B



Harish Bhat



Anirudha

## THE PARTS OF SPEECH



Every name is called a noun,  
As field and fountain, street and town:  
In place of noun the pronoun stands,  
As he and she can clap their hands  
The Adjective describes a thing,  
An magic word or bridal ring;  
The verb means action, something done,  
To read and write, to jump and run:  
How things are done the adverbs tell,  
As quickly, slowly, badly, well:  
The preposition shows relation,  
As in the street or at the station:  
Conjunctions join, in many ways,  
Sentences, words, or phrase and phrase:  
The interjection cries out, Hark !  
I need an exclamation mark !

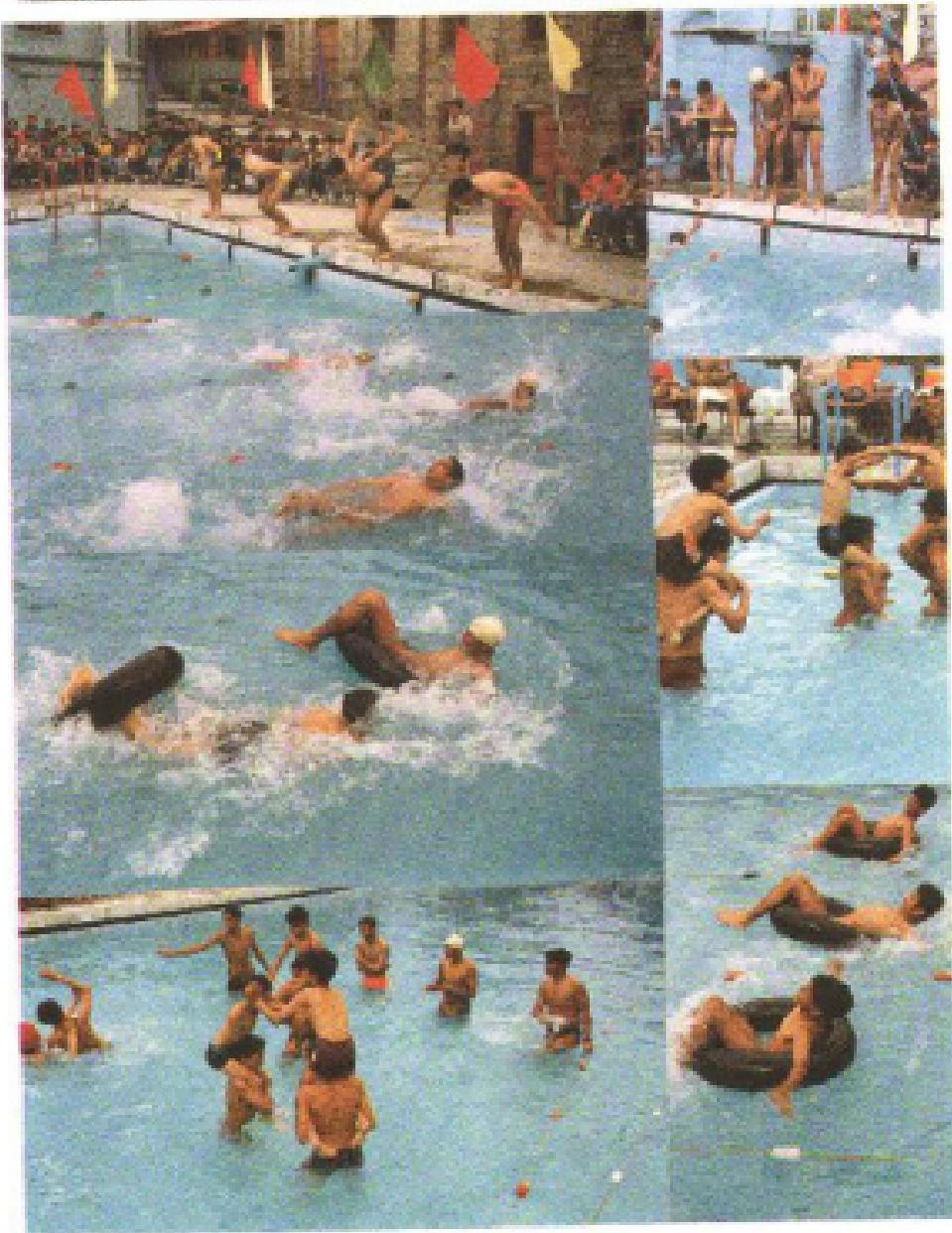
Gurwinder Singh  
G.A.

*Child ! Do not throw this book about;  
Refuse from the unholy pleasure  
Of cutting all the pictures out !  
Preserve it as your chiefest treasure*

- Belse

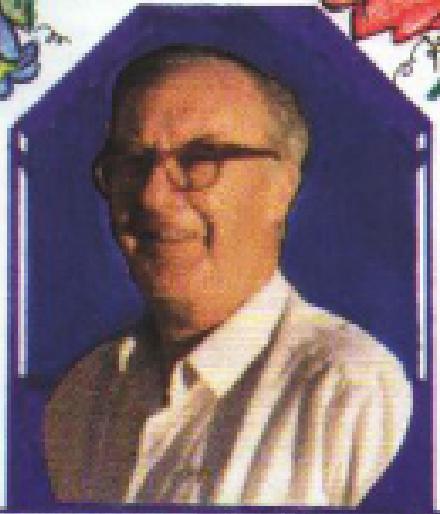


## ART EXHIBITION I.C.S.E.

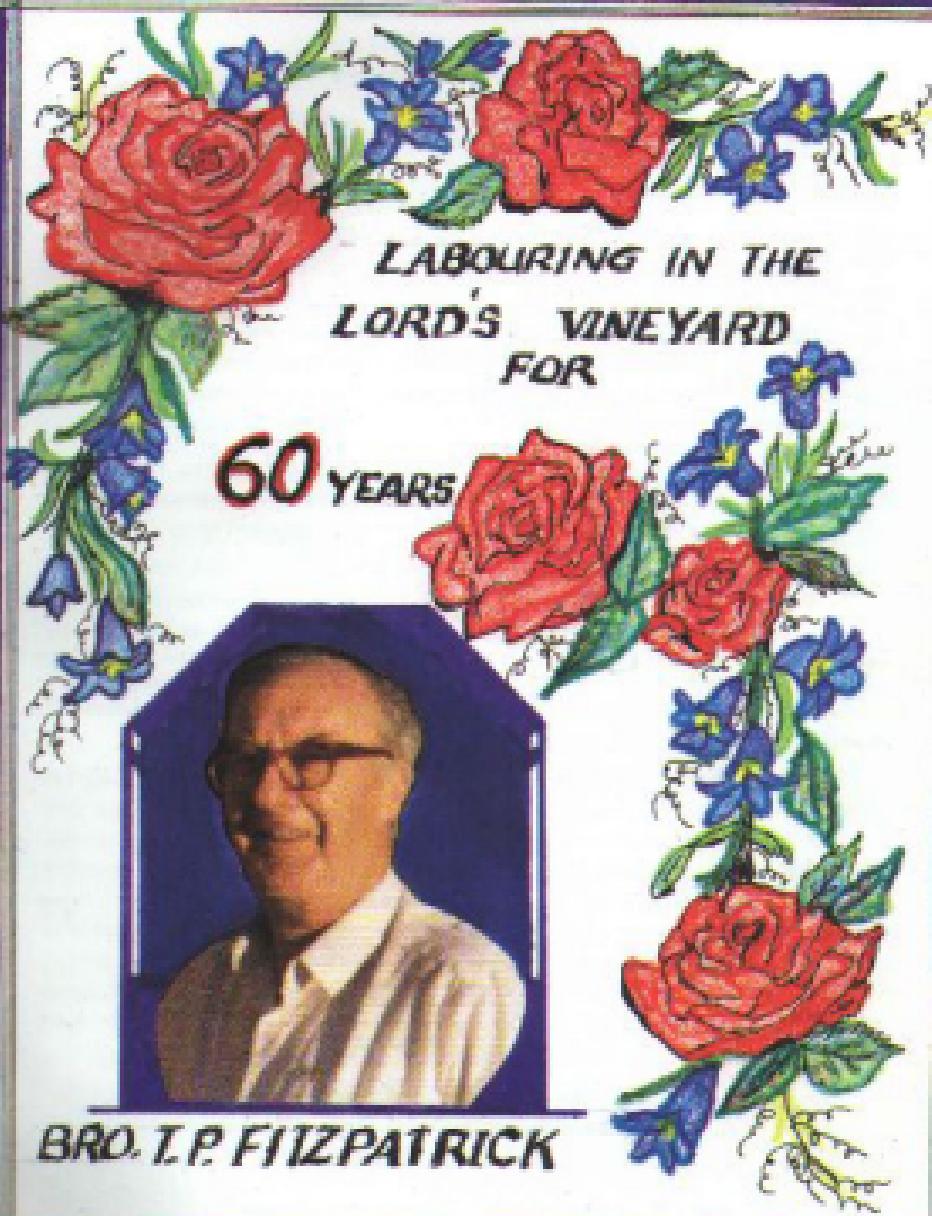


LABOURING IN THE  
LORD'S VINEYARD  
FOR

60 YEARS



BRO. J.P. FITZPATRICK



## ANNUAL AQUATIC MEET 1998



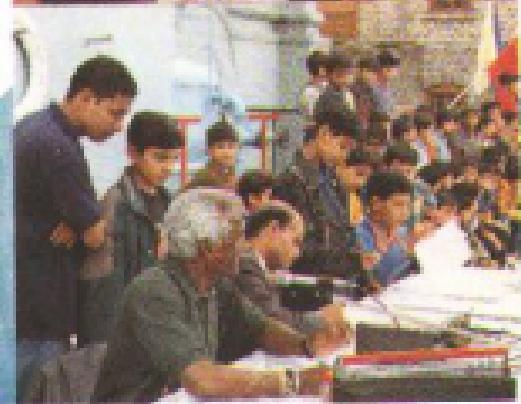
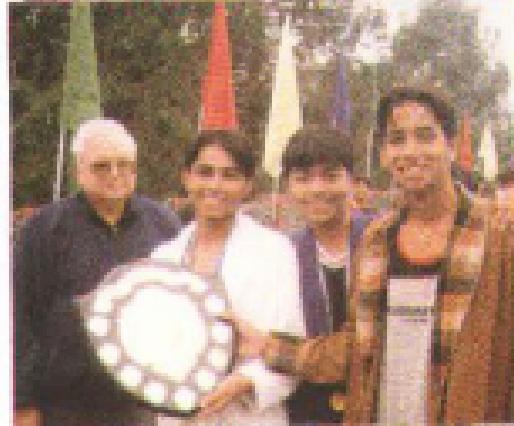
The annual aquatic meet was held on the 5th September.

The boys gathered around the swimming pool, under a beautiful blue sky. The swimming pool looked sparkling and blue, and the colourful flags and bunting around it made the atmosphere very festive. There was a nip in the air; all the participants waited impatient as well as excited, to take a plunge into the pool! The competition began at 9 a.m. and Mr. Beddoes presided over the function.

The competitors were graded according to their divisions. There was spirited cheering from the spectators encouraging each participant to put in his best effort. The atmosphere was enlivened by fun events like the tube race, musical chairs and diving for a plate under-water.

The aquatic meet ended with the prize distribution. The College colours were awarded to Colin Coelho and Paul House was declared the winning house. In his speech, Mr. Beddoes said he was very impressed with the high standard of swimming, as well as the healthy competitive spirit which pervaded right through the meet.

Ram Matlib  
6A



## L.C.S.E. EXCURSION



It is rightly said that patience always bears fruit - and so did ours. The L.C.S.E. tour of Agra and Jaipur which was postponed time and time again finally commenced on 11th September. We were escorted on this five day tour by Mr. M. C. Pandey and Mr. M. Joshi.

Filled of mirth, excitement and enthusiasm we set out for Lalbaug by bus in the evening from where we boarded a train for Agra. We reached Agra on the 12th morning and lodged ourselves at the luxurious 'Hotel Amar'. After some refreshments we visited the pride of India - The Taj Mahal and other historical monuments.

On the 13th morning we set out for the fortified town of Jaipur and enroute visited Patchpuri Sikri. In Jaipur we stayed at the 'Hotel Krishna'. While in Jaipur, on the 14th, we visited the sprawling Amber Fort, the graceful Ram Niwas Garden, the sumptuous City Palace, and Museum, the astronomical observatory Jantar Mantar and the beautiful Jal Mahal. In the evening we set out for the world - famous and stunning Raj Mandir cinema hall to attend the night show and also visited the famous Bharat Mandir. We returned to Agra on the 15th.

The tour served as a much needed break from the monotonous routine of school. It was an educational tour and we were able to gather first hand knowledge about the various historical monuments which thus enabled us to be proud of our glorious past.

Rakesh K. Patel  
10B

*The angry man always thinks he can do more than he can.*

- Albert Einstein

X

X

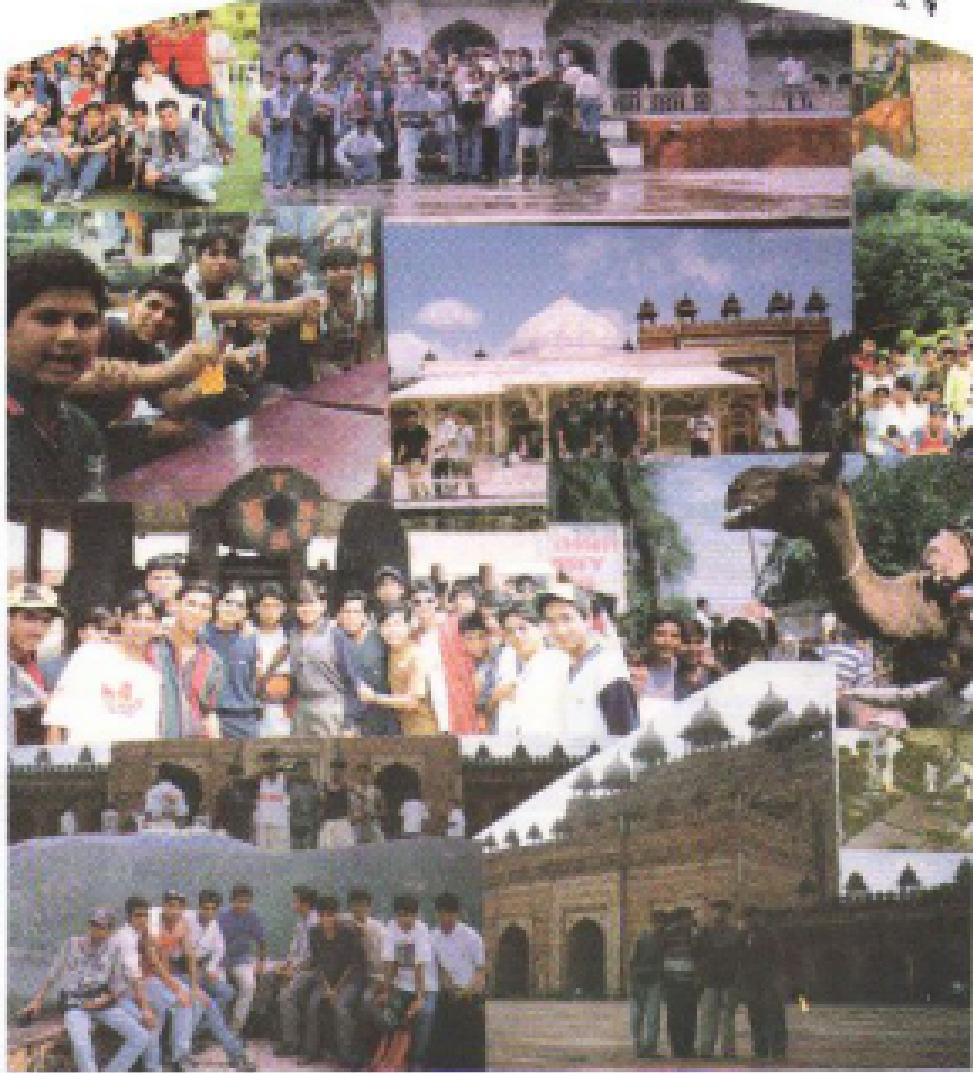
X

X

*To Youth I have but three words of counsel - work, work, work.*

- R.K. Patel

# ICSE EXCURSION



## JUNIOR SCHOOL ENGLISH ELOCUTION



The elocution contest is always one of the highlights of the academic year. The Juniors School inter class elocution was held on the 3rd August, 1998. The judges for the competition were Mrs. Sen (All Saints College), Mrs. L. Shah (St. Mary's Convent) and Brother Reha.

Every class had been preparing for the elocution competition for weeks. There was a healthy spirit of competition in the air.

Soon the day dawned and we lined up in front of the auditorium, smartly turned out in neat uniforms. The prefects ushered us into the auditorium. We started with the individual recitation. Khadir A. Khan of class I began with "I Love Little Pussy". The competition was between class 2 and 3 and Alibay Park of class II secured the first place in this category.

In the second category (classes 4 and 5), Ritesh Joshi of class 5A stood first.

The choral section was judged in two categories. Each class put in the best effort. In the first category (class 3 and 5) class 5B secured the first place with their beautiful interpretation of the poem "Writing".

In the second category (classes 4 and 6) class 5B secured the first place with their poem "The Rock".

While the judges tabulated their results two boys from class 3 danced beautifully to the popular song "Barbie Girl". They were given a standing ovation.

Mr. U.Ramji announced the results amidst great excitement. Dr. Beddie said the standard of elocution had been very high.

West Ward  
SA

## JUNIOR INTER CLASS HINDI ELOCUTION



The Hindi Elocution Competition was held on the 12th September, 1998. The boys of the junior school were filled with excitement and everyone had hopes of winning. Our Hindi teacher Mrs. K. Pant had been working hard with us for weeks.

The judges for this competition were Mrs. D. Bhatt (St. Mary's Convent), Mr. R. Bharia (E. P. T. Teacher) and Mrs. Singh (All Saints College).

The competition was divided into two categories - with class 2 and 3 competing against each other and classes 4 and 5 competing against each other.

The competition was very keen and each class recited their piece with enthusiasm. In the choral events classes 9B and 5B won first place in their respective categories.

In the individual events Kaustub Kaushik (3B) and Saunabh Agarwal (5A) won the first place.

There was spirited cheering from the boys of each class as the results were announced.

Piyush Doshi

5B

## THE SINGING COMPETITION



On the evening of 2nd May, classes 5-10 had the opportunity to be present at the singing competition along with staff members and invited guests.

The competitors for this event had worked very hard on their songs and were hoping to make a favourable impression on the judges.

The competition began with classes 5 & 6 competing for a position. When the competitors for this section had done their part, the show proceeded with classes 7 & 8 and then moved onto classes 9 & 10. All the competitors were greatly encouraged by vocal support from their classmates.

At last, the results were declared with Mudit Gussain (6A), Jatin Jethi (7B) and Aditya Saan (10A) winning the awards for the best singers of the 5 & 6, 7 & 8 and 9 & 10 sections respectively. The announcement of the winners' names was greeted by rounds of sincere applause from the audience.

With the results declared, the competition came to an end with everyone singing the College Anthem. The competition was of a very high standard and was so exciting and interesting that it kept us glued to our seats till the very end, without a break!

Mayan Roy

5A

## THE COMPUTER EXHIBITION - 1998



This year, the Computer Exhibition was organised together with the Boarders' Parent - Teachers Meeting, on the 7th of August. We were thrilled, but at the same time, nervous of the fact that this time, we had an opportunity to display our skills and talents before many parents.

This exhibition was organised simultaneously in the auditorium and in the Computer Lab. The class nine boys displayed their models and charts in the auditorium. Class ten boys displayed their theory as well as practical projects in the Junior Computer Lab. Classes VI to VIII participated in the Collage and Chart Competition. The inauguration of the new computer machines was also done on this occasion.

A lot of effort was put in by the boys and a great deal of encouragement, guidance and help by the Computer Teachers, did much to make the venture a success. The exhibition, as remarked on by the parents, teachers and the Principal himself, was of a very high standard. I hope that this tradition initiated by us will continue for many years to come and that Computer Literacy will reach new heights in SJC.

Nagesh Patwardhan

108

*Don't keep doing the wrong things over and over.*

*Learn from your mistakes and take another approach.*

*X            X            X            X*

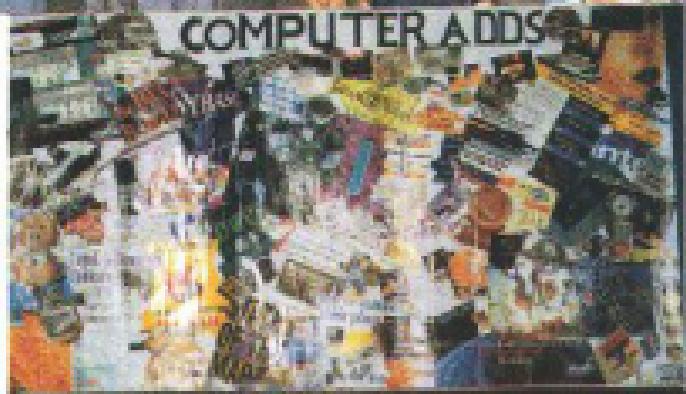
*Aim high. You normally hit what you aim for.*

*X            X            X            X*

*Skip, listen, and think before you respond.*



# COMPUTER



# EXHIBITION

## 'C O F A S ' 98



The seventh Annual National Computer Fair and Seminar (COFAS '98) was organised from the 17th - 19th September 1998 by the City Montessori School (CMS), Station Road Branch, Lucknow. Forty - five teams from all over the country participated in this Computer Fair and Seminar.

Our team, lead by Mr. S. Chakraborty was met at the railway station on the 18th of September, '98, and we were escorted to the venue by some CMS officials and students. It was a warm welcome.

The first event was Collage, in which our contestant missed the top slot by a narrow margin. The Quiz team lost after battling in a close contest. The jingle team and the participant for the Createk also did very well. Dhawal S. Gussain and Kanishk Jain brightened our spirits by bagging the third prize in the programming section (WHIZ KID). Padam Krishnani, through his eloquence was the second runner - up in the speech contest. The Seminar was characterised by an outstanding demonstration of Window '98 by MIIT. There was an address on Internet by Dr. Dipash Ghosh, IIM, Lucknow. Being among such immense talent from all over India was wonderful; and then being the third best team overall in the School Section, the best question team and the best disciplined team made us all ecstatic.

The facilities provided by the hosts were excellent. COFAS '98 apart from improving our computing skills, instilled immense confidence in us and prepared us for the future.

Aditya Chatur

10A

*An injury is much sooner forgotten than an insult.*

- Chakraborty

*Advice is seldom welcome : and those who want it the most always like it the least.*

- Chakraborty

## MY YEARS IN ST. JOSEPH'S

A call from St. Joseph's College for the post of a teacher ! No never. ! That was the first thought that came in mind as the thought of the steep climb and the innumerable steps one had to climb filled me with a sense of fatigue already.

Seated outside the Principal's Office for the interview I glanced around at the familiar surroundings as I had studied in St. Mary's Convent - one's curiosity at what lay on the other side of the Convent walls had been satisfied by the not too frequent trips into the school premises and once again it fortified my earlier convictions that the Convent was definitely the place for me. Not this !

However, very soon I found myself being led to what has now become a haven for me, Class 4A, which I was told I would have to take over. Looking around I found these thirty - eight odd pair of eyes looking up at me with utmost interest and curiosity as to what lay ahead for us together, not knowing that there was to be no looking back !!

Having suffered from an illness soon after school, left me with a disability in the legs and no exposure to any kind of college life, I feel God had sent this Christian Brothers' Institute into my life as a nest from where I learnt to fly once again. The love, affection, warmth and encouragement which engulfed me all the time helped me to spread out my wings once again and venture out, at first uncertainly but then more steadily, into the outside world. There was a helping hand at every step and as goes the saying, "We all need a helping hand to go".

Being from a family mainly of girls-boys were a novelty in every sense of the word, but soon came the pleasure of reaching out to the individual - the young man in each one of them and guiding each little step, just as mine had been guided by the One Above.

I distinctly remember asking a very dear friend and colleague of mine for how long she had worked in St. Joseph's and her answer of ten years had really made me wonder. As for me, two to three years was what I had in mind but today, twelve years later, as I stand in the front of the College and look up at the tall towers I feel it was just yesterday when I took my first step into this haven of a Christian Brothers' Institute.

Ms. N. Rao

*A thousand words will not leave so deep an impression as one deed.*

- Henrik Ibsen

---

FICTR - 1998

---



The annual school fete was held on Saturday - the 7th November. Mr. and Mrs. Palmer were overall in charge for organising the fete.

It had been raining the previous night, and all of us at SFM said desperate prayers - and lo ! by eight o'clock we saw glimpses of a blue sky !

Then began a flurry of activity and excitement, as we all got down to the job of decorating our stalls with colourful streamers and posters - each vying with the other to have the most attractive stall ! By 10.30 a.m. the stalls were ready and the field presented a real feast to the eyes.

The fete was declared open by Br. T. P. Fitzpatrick at 12.30 p. m. amidst loud cheering.

There was a variety of stalls spread all over the first field. All of us made a beeline for the food stalls - with burgers, ice - cream, soft drinks, bhelpuri, kebabs - not and to top it all - hot puris with mouth watering vegetables with masala tea to drown it all ! The games stalls were equally exciting - with the poster / cassette wheel and the horla stalls drawing maximum crowds.

We were happy to see students of St. Mary's, All Saints College, St. Amtul's and Sherwood College, enjoying the fete as much as we did. The request stall was kept busy throughout the morning.

Even the short shower did nothing to dampen the festive spirit of the occasion. The fun and frolic continued unabated and the tea/coffee stands did brisk business in the cold.

The results of the Lucky Draw were announced by Br. Brilios. The first two lucky winners were from the College itself.

Soon the excitement began to ebb, as the guests departed. Everyone agreed, the fete was a stupendous success this year.

The proceeds of the fete will go towards the expenses incurred for repairing the school building which was severely damaged by the storm, in May this year.

(Mrs V. S. Radke)

83

The gift of knowledge is one of the greatest gifts. Rev. Fr. T.P. Fitzpatrick, who is celebrating his sixtieth year as a Christian Brother, can look back with satisfaction on his long stint as a teacher and Principal. A teacher cannot be gauged only by his mastery of a subject or subjects, but by his skill and patience in imparting knowledge and, more important, by the motivation he provides to students to give of their best. By any standard Fr. Fitzpatrick was and is an excellent teacher.

Despite the new fangled concepts of education, discipline has to be there to teach and learn. Brother's classes have always epitomized order and discipline. This is born of respect for him as a teacher, his erudition, firmness and above all his credo of duty before self.

Teachers who have worked with Fr. Fitzpatrick and for him have found him accessible, quick to understand and tackle a problem. His meticulousness in setting deadlines and following them has made for efficiency and been an example for the teachers and students.

We in Sem are fortunate to have Fr. Fitzpatrick in our midst to guide us. His presence provides a stability which keeps in place our sense of values even when inevitable changes come in.

The staff and students of Sem wish Fr. T.P. Fitzpatrick a very happy Diamond Jubilee.

Rev. Fr. Fitzpatrick came to India in September 1945 after completing his studies at the National University of Ireland in Dublin. He was one of the first Christian Brothers to come here after the war. He was Principal in Coethals Memorial School, Kurseong (1944-1960). From 1960 to 1966 he was Principal in St. Joseph's College, Nainital, after which he spent eight years in St. Columba's School, New Delhi in charge of the junior and middle schools. After a stint in Rome he was stationed in St. Patrick's School, Assam for two years after which he was posted back to Coethals Memorial School, Kurseong where he was Principal once again until 1989. He spent a further four years in St. Columba's before coming back to Sem in 1993. We value his presence here in St. Joseph's.

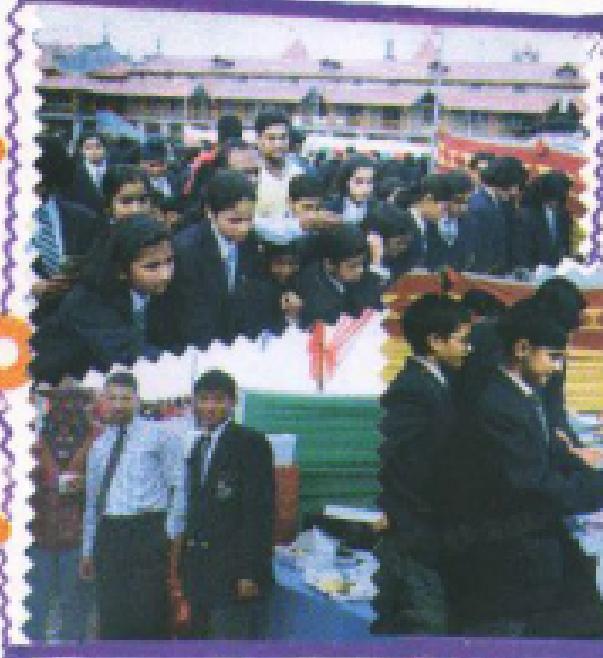
*It is the heart that makes a man rich. He is rich according to what he is, not according to what he has.*

*Henry Ward Beecher*

# Our Annual Fete



I HAVE DECLARED  
THIS FETE OPEN



RUSH  
FOR COUPONS

REMEMBER

REMEMBER

REQUEST STALL  
Not favourite!

CLASS X MISS D. SHAH  
OR D. A. GALLANTYNE.



"Over  
The Top"  
CLASS XIB



Thank you for making  
our fair  
success.

## INDEPENDENCE DAY CUP FINAL, JUVENILES

Because of the very heavy rain this final had to be postponed from the customary August 15th. to the 23rd. August.

Before a very large crowd the contestants, St. Amtul's and Sem, battled for the trophy. It was a very exciting game with little between the two teams. At full time neither team had managed a score so extra time was given. On the stroke of full time Abhay Tandon got the all important goal for Sem so the trophy was secured for another year.

The final score was 1-0 in favour of Sem.

S. Amtul  
7A

*Falleness is only the refuge of weak minds.*

- Chakras

X

X

X

X

*The foundation of every state is the education of its youth.*

- Thuggevee

X

X

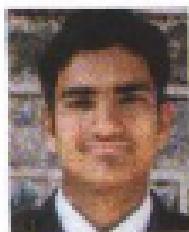
X

X

*Who rises from prayer a better man, his prayer is answered.*

- George Meredith

## FAREWELL FOR THE I. C. S. E. CLASS OF 1998



Farewell I.C.S.E.! Welcome Pre I.C.S.E. - a very memorable and rather nostalgic trend followed in Sem every year.

This year all the I.C.S.E. class were given a fabulous farewell party by the class nine students on Saturday, November 14th. This party was attended by almost the entire staff and it was considered a red letter day by all the students who are about to leave Sem at the conclusion of the I.C.S.E. examinations.

All the boys of this leaving class were attired in their best outfit - Mr. Sem 1998 contest was to take place in the course of the afternoon's proceedings - not that the choice depended on dress. The special cake was cut by the two class ten teachers, Mr. Menzies and Miss Deepa Sah, and then the Principal addressed the boys and in an inspiring talk which took us back into time and helped us recall our lovely memories of Sem where most of us had spent the last ten years.

There were several items on the programme - dances, singing, musical chairs and of course the splendid lunch which was served in the boys' dining room during the interval break. After lunch the main item of the day got under-way, the selection of Mr. Sem 1998. By a gradual process of elimination the number of contestants was whittled down to five and in the final tally Aditya Saun was adjudged the winner. He was warmly congratulated by his class mates and thus concluded for us a very enjoyable and memorable day, ending on a very happy note.

Dhara Patel  
12 B

*People ask you for criticism, but they only want praise.*

*Soren Kierkegaard*

JUDGES



MR. D. CHANDRASEKAR : JUDGE IN CHIEFLY MR. M. P. RAMESH

BEST  
ENTRIES  
CLASS



LOVE & DEVOTION  
FOR A FRIEND  
MR. D. SHIVA



SCHOOL TEAM



MR. S. S. M. 1495 ADITHYA SAHA



SEMI'S  
CHOREOGRAPHY

FOND  
REMEMBERANCE

SHOBHITA RAJ

## A TIME FOR CHOICES



"What career should I take up?" This is a question that worries most boys of our age group. Most of us spend restless days and sleepless nights thinking over this question and yet it defies solution. In what direction should we channel our lives? What profession should we opt for? So far, all our decisions have been made for us. Now, we realise we are on the threshold of ADULTHOOD. Of course it is exciting - but there are so many doubts and apprehensions which creep into our minds.

There are those lucky few among us whose minds are already made up. They are determined to take up careers in engineering, medicine, defence services, business administration, law and so on. Others are attracted by the high salaries, glitzier and glamorous of jobs offered by M. N. C.'s (Multi - National Companies). However we know the going is going to be tough. There are lakhs and lakhs of applications for every few hundred seats in the I. I. T.s, I. I. M.s and Medical Colleges in the country. The competition is mind boggling! It makes us aware of what we have in store for us. We know that for every boy who succeeds there will be hundreds who fail. There is a glut in every profession and the prospects are bleak.

Will we carve a niche for ourselves in this crazy world? May be we should move away from the crowd and start thinking afresh. We could channel our talents, initiative and enthusiasm to open a world of new avenues. We could head in the direction of self employment and create a career for ourselves. The task seems daunting, but with the dynamism of youth and the training we have received in our years at Saini, I am sure we can scale the greatest heights.

Ravi Kumar

12A

*What you keep to yourself you lose, what you give away, you keep forever.*

Anil Munshi

## MY DAYS IN SEM



To-day, when I look back I marvel at how fast time flies by. It seems only yesterday when I, a small boy of six years, commenced my schooling at SEM in 1989. I vividly remember that I felt lost and uncertain that day and nothing at all, not even the bottle of chocolate, could tempt me to enter the classroom. The school appeared too big and the seemingly forbidding teachers and intimidating big boys struck fear into me everytime I came face to face with them. With time, however, my timidity faded, my fears subsided and I was as mischievous as a six year old boy can be.

Now, when I face my surprisingly uncracked mirror, I wonder why the seniors found me cute when I was in the junior classes. They pulled my cheeks so hard I was scared they would come apart. Looking at my present 5 feet 8 inches slimy frame, who would believe that I was once a plump kid with layers of fat all over my body and was nicknamed the all too common 'atty'?

Being a good student, I received frequent praise from the teachers; nonetheless, rightly deserved admonitions shook me back to my senses. The selfless devotion and guidance of teachers stood me in good stead over the years and transformed me from an unkempt boy to a civilized teenager.

I was fond of games, although our Physical Instructor was in tears when he saw me play. During the P. E. classes, I learnt the three Ds: Desire, Dedication and Determination, and I have tried to keep to them, though many times unsuccessfully. I actively participated in the extra curricular activities. Almost every year we went through the same routine of sports, concerts, quiz and games, and yet, I couldn't help but enjoy the feeling of satisfaction in these activities.

In 1998, my last year in SEM, I was entrusted the duty of a day scholar prefect. This was an overwhelming experience and not only meant wearing my crest with pride and carrying the Olympic flag aloft on Sports Day but also keeping upholding the trust reposed in me by the Staff and students and living up to their expectations. One very important thing I learnt during my term of captaincy was that obligations always counter - balance privilages; keeping up to the standards to-day maintained by the former day scholar prefects is a daunting task and a learning experience.

To-day, the thought of leaving Sem makes me sad and I wonder how it will be after a few years when I see boys in St. Joseph's uniform - a uniform which clung to my body for ten long years - climbing up the hill to school. As I leave, I do so with sadness but also I take with me wonderful memories of SEM to cherish throughout my life. +

Thank you SEM ..... for everything.

Padma Krishnam

103

## OVERSEAS VISITORS TO THEIR ALMA MATER 1998

Mr. Tony Drake '45 from the U.K.

Dr. Ronald Thompson '45 from The U.S.

Dr. Harish Ch. Prasad '49 from Germany

Mr. Douglas Baptist '48 from The U.K.

Mr. Timothy Hine '61 from Australia.

Dr. Patrick Murphy whose grand uncle, Br. T. A. Murphy was in charge of The Specials in St. Joseph's for many years.

Mr. Morrow from Dublin whose father attended St. Joseph's from 1908 to 1945

## OBITUARY 1998

Mr. B. N. Joshi, father of Ankur Joshi class 5A

Mrs. Urmila Birla, mother of Ram Singh. Officer peon.  
Modan, College tailor for many years.

Kishan Ram, long - serving College bearer.

Kishan Ram, College Incumbent bearer for over thirty years.

Mr. Govind Singh Bohra, father of Sandeep Bohra  
class 5B.

The College staff extends sincere sympathy to the relatives of the departed ones.

हिन्दी खण्ड



## द्रवता घर्याचरण



बिरादिल विजान ने बनुष्य को बहुत आगे पहुँचा दिया है लेकिन बनुष्य ने विजान की प्रकृति के लिए पर्यावरण का शोषण अधिक किया है। आगे आगजाने में प्रकृति का फिरे जाने वाले प्रहार भावय पाति के लिए आगे जलकर पहलावे का लकरण बनेंगे। जब प्रकृति के सब की जीवा समाप्त हो जाएंगी तब प्रकृति अपने जीवों के विशेष में कोई न कोई कष्ट उत्पन्न नहीं होंगी। अपने बच्चा में प्रकृति हुआ उठाये गये थे यद्यपि मानव के लिए अत्यधिक खातरनाक समिल हो सकते हैं।

अभी हाल ही में हुए कुछांगु मंडल में विद्यार्थियों जिनके पालना गीव, गद्दाबल मण्डल के कल्यामठ में हुए भूस्तान और कुई लाल प्रदेश में आखी बाड़ इसका मतभव प्रमाण है। इन प्राकृतिक आपदाओं से यह लिख ही चुका है कि प्रकृति अजीव है और मानव उन पर विजय नहीं कर सकता है। ये प्राकृतिक आपदाएँ ऐसी हुए भाव जागरूक की दी जाने वाली योग्यतियाँ हैं। ये कहती हैं ‘हे बनुष्य साक्षात् तथ बारी हमारी है’।

पर्वती शास्त्री  
१.४

## दृष्टिपक्षपाता भोटा शहद



अपनी प्राकृतिक सून्दरता एवं स्वच्छता के लिए अतिंद्रिया ज्ञाति से भी पूर्व से प्रतिष्ठा पैदा होते रैतीताल आज कौशल रहा है। 25 जुलाई 1995 को लगावग झाड़ कर्जे टाटि से और १० रुपये १० रुपये परिसर रैतीताल के स्कॉल राजमन्दिर ताकु जाती पहाड़ पर सून्दरतान् प्रत्यक्ष हुआ। इस सून्दरतान् में शायामवन साकु लगभग ज्वाल ही गई और कई हज़र मुख गतवे के साथ रैतीताल झील में सुना गए। पहाड़ी की एक बहुत बड़े भाग के विशालने से रैतीताल के किनारे बढ़ी उच्ची राहत लगवग जातीस रैटा नतवे में दब गई। यह सून्दरतान् इतना जबर्दस्त था कि बड़े-बड़े वर्षार्ता के जिसकने से काढ़ी छातवनी आवाजे ज़ रही थी जिससे भद्रीता रैतीतालवासी अपने-अपने परों से बाहर दौड़ पड़े। लगभग शातार सून्दरतान् का यह अव्याकृ दौर पहला रहा। मैं भी अपने परिज्ञाने एवं निजी के साथ असहाय, साज्जा हुआ अपने विष बहर की इस सुर्दिशा को काढ़ी दें तक देखता रहा। जल काल पता चला कि ऐसे शहर की एक और प्रतिष्ठा पहाड़ी ‘कैमिल्स बैक’ पर भी

## A FLOOD OF WIND

On calm clear nights the ground surface cools by radiational losses and the air in contact with the ground also cools. Then it is possible to detect a gentle downhill movement of the air at night. Meteorologists refer to this chilling, unexpected breeze as a 'katabatic wind'.

A 'katabatic wind' occurs when the ground loses heat by radiation after sunset in quiet clear conditions, causing the air in contact with it to cool rapidly.

The cooling air contracts in volume and thus becomes more dense and heavier than its surroundings: where the ground has a slope to it, the heavy air begins to slide, flowing gently downhill like a cold invisible river.

In some countries, where mountains are high and may be snow-covered, and temperature contrasts are extreme, katabatic winds can achieve very high speeds. This phenomenon is sometimes very aptly called a 'drainage' wind. In the right atmospheric conditions, and given a suitable topography, the air behaves very much like water in a large river valley.

As it seeks a lower level it flows downhill from little channels into larger gullies, thence down ravines, and often ends by flooding down a deep valley to form a 'lake' in some low-lying plain.

The flow is gentle where the slope is slight: sometimes, however, the air may plunge headlong over a precipice in the form of a turbulent cataract of wind-as it does, for example, from the snow-covered coasts of Iceland and Cleveland in the winter-time.

More commonly, with a moderate terrestrial gradient, the air ripples along seeking the lowest point in the vicinity, like a silent version of Terayson's babbling brook:

By thirty hills I hurry down,  
Or slip between the ridges.  
By twenty thorps, a little town,  
And half a hundred bridges.

The opposite effect, 'an anabatic wind', may often be experienced in summer, when, on a warm and sunny afternoon in otherwise calm conditions, a breeze may suddenly begin to blow uphill.

This time the movement of the air can be traced to the heating by the sun of a stretch of sloping ground, causing the air immediately above it to become lighter than the surrounding atmosphere.

The air thus heated begins to drift steadily up the incline, and its movement can be felt as a warm breeze blowing gently up the slope. It is most often noticed on a calm, hot day by someone standing on the south-facing side of a deep mountain valley.

लगातार छाड़ी रहते का भूलभूल हुआ है। इस से आज तक लगातार उच्चिक नीने पहाड़ियों से होने वाले गूँजबलन से में जहां दिन-रात बहिरात रहा है।

वहां में अपनी दीनी के वर्षों की ओर से आपने अधिगच्छाएँ, शहरवालियों एवं सम्बोधित अधिकारियों से इह लोक के जीवन से दूर राखा हूँ कि ऐसे विषय शहर की इस दुर्दशा के लिए जीन उत्तरदायी है तथा क्या ऐसी हक्कानाकला व गुणावस्था एक ऐसे विषय शहर का अधिकार रखेगा या नहीं?

अनुवाद देखा  
५४

## समाचार परिचय द्वारी जाहिरा



इस व्यक्ति को ही अपने अप को खुशनाशील रामबुगा जाहिर जिसी समाचार-पत्र पढ़ना जानी एक आदत ही ज्ञा जाती है। समाचार-पत्र संघर्ष-साधन का एक उत्तम उद्योग है। समाचार एवं उनकी नीति लाई एवं अन्वास्तुटीय जिहाजी में एक महत्वपूर्ण नुसिका मिलता है। वे शूचना, ज्ञान, सुन्दर एवं शिक्षा के स्रोत होते हैं।

आदर्शी के लिए समाचार-पत्र नान्दिक आहुम का बोर्ड करता है। वे ही समाचार को विचारी हुए प्रस्तुतित करते हैं। वे इन्हर, ज्ञान और नुसिके नदियों हैं। समाचार-पत्रों से हम दुनिया को बढ़े ने करकी है ताक जान से है। समाचार-पत्र अनुग्रहीक दृष्टि की हर ताका द्वारे व्यापार, अद्व्यापाल, जननीयों एवं विज्ञान से बहुत उपयोगी है। वे बाहर के विद्यार, लौकिक एवं जीवनाद समाचार प्रकाशित करती हैं।

समाचार-पत्र सामाजिक सुरक्षक का कर्त्ता करते हैं। वे जाही को शोल्वालिंग करते हैं और गलत को हतोत्साहित।

ऐसा लोकतंत्र की जीवनी सम्बोधि है। समाचार-पत्र का हमारे जैसे लोकतंत्रात्मक भारत के लोकों में एक महत्वपूर्ण रूप है। वे ज्ञान सौनारी की जनता की सुन बनाकर उन्हें नह दिलाते हैं।

बहुत बदलावी है यह आदर्शी जो समाचार-पत्र नहीं बढ़ाता। समनुग उत्तरदायी जो बहुत महुआ है। निरचय ही कलाग तत्त्वात्मक हो कर्त्ता समिक बहुताली जैसी है। अब इने निर सनाचार-पत्र पढ़ना चाहीए।

लेखक जाहिरा  
५५

## सीर सपाटे तडे दिन आये



तब बच्चे गल में छोटे।  
सीर सपाटे ले दिन आये ॥

होम यर्क से नहा रुदा  
आठ-चारवाँ बजा रुटा  
ग्रन्टर जी भी दौट बढ़े न  
हिंसी रहावे के दिन आये।

लुटे, छीन गवाह रुदे  
बम्पी-धामा जा दर छीन  
फूंधारके के दिन आये।

गुल्फ लियला का भन्हूरी  
पाया-पानी की गजाही  
मदुर कहानी सुनाने को अन  
नाना जी जी नाद रहाने।  
सीर-सपाटे के दिन आये ॥

हरनेस दूरी  
८.८

## ओर दिन दिन में जीता जीता



जीता दिव लोल कुट्टील है, पुड़ी की लुटी दुड़े जब मै अपनी कहूल  
जी (१) टीम में रोटि लिया गया। हमारा पहला मैच 'खादार फाइनल'  
समाज स्पूल के साथ दुआ, पहले हम जीते वे मुकाबले तीन गोल मै  
जीते। हमारी टीम लोली फलइनल में पहुंच गयी। हमारा दूसरा मैच  
हरावी विहार के साथ दुआ। उस मैच में हम एक के मुकाबले चार गोल  
मै जीते। हमारे पाप हम फाइनल में दूरी गये। हमारा फाइनल मैच  
लोल कानपुल के साथ दुआ। यह मैच कहा लंपर्पूर्ण हुआ, पर्योक्त दोनों  
टीमों के खिलाड़ी बहुत झटके थे। मिर जम्मू समाज ही गया था। उसमें दोनों टीमें के गोल  
जीती थे। मिर ही दस मिनट का अतिरिक्त समय भित्ता। लोल के अन्तिम समय पर हमारी टीम  
ने एक गोल से बहल हासिल कर ली। हमारी टीम जीत गयी। हम लोग राज लुटी

तो पानी ही नहीं और एक दूसरे के लिये तिकट नहीं। शोषे समय बढ़ा मुख्य अधिकारी द्वारा इनाम खोटे गये। हमें विनाश कर मिला और दूसरी टीम जो रवान कर मिला उसके अलावा अन्य इनाम भी मिले। यह निच जीतने वाले नुस्खे जो सुनी का अनुचय हुआ, उक्तका उत्तम मैं जाली में गही बन रखता।

लक्ष्मी नाथ  
६०

## बृक्षारोपण का महत्व



बृक्षिति ने हमारे जलयोग को लिये फलना-चूलना बनावरी लंगत बनाया है। हम बनावरी का कोई भी पेहँ-पीछा ऐसा नहीं जो हमारे लिये काम न हो। यह सदा से ही नगुण्य को मित्र रखते हैं। वे बृक्षिति की उपयोग गाड़ना को इकट्ठ करते हैं वे भानव जीवन के आवश्यक ढंग हैं। हसरिये भावीन काल से हमारे यहीं बृक्षारोपण की बड़ी विधि रही है। देश में वृक्षों का अधिक होना उसके मुख्य-भौमाय और समृद्धि की निशानी है।

आज पेहँ-पीछो जो हम सोचा कहा जाता है। बृक्षारोपण को एक नुच्छ छापे भाना जाता है तक युक्त लगाना और उसका मंत्रज्ञ करना उतना ही महत्वपूर्ण है, जिसना दिन-दी रातानान को नीद लेना और उसका पालन-पोषण और दिलास करना। पुराणों में तो कहा गया है कि जो युक्त लगाता है, वो अपने लौस छुड़ार पूँछों का लदाई करता है।

बृक्षारोपण से बहुत की अनेक लाभ हैं। विशिष्ट प्रकार के युवा और उनमें विद्यार्थी विशेषज्ञ हमारी विशिष्ट आवश्यकताओं की सुरक्षा करते हैं। उनका फलना-चूलना और हरियाली बन में उत्तमात्मा लाती है तात्त्वी बायकर एकली परिवर्ती की झालती है और सोसियों भी गुनाही हैं। वे वर्षी नवाये में भी साहायता करते हैं, पेहँ की परिवर्ती दें जारा बाष्प-कर्म तायुगमन में घोड़ती है जिससे हवा छम्दी होती है और वर्षा लाती है छेत्रों के बारे और युक्त लगाने से वर्षा में उनकी शिर्ही वर्षा संस्करण होता है और अगाज का उपयोग होता है। वृक्षों से इमारती लकड़ियाँ, बालू, हीमन, दियामलादू, गोद, रेत एवं भाजी-भाजी की दबाईयाँ मिलती हैं। वे अनेक ज्ञान वाले भी कम करते हैं।

वैज्ञानिक और भौगोलिक दृष्टि से भी बृक्षारोपण महत्वपूर्ण है वृक्षों से वायुमण्डल शीतल और शुद्ध बनता है। यह ही जमी प्रतिकों की लीकन के लाभार और उसे बदाने वाले हैं यह वी परिवर्ती हवा में व्याप्त कर्वन-हाई-ऑक्सीजन को सोख लेती है और शुद्ध की विस्तरी की अवधिता ही इसे भौगोलिक ने उपयोगित कर देती है इही शुद्ध हवा लींगों को व्याप्त बनाती है।

कृष्णारोपण हमारा एक सामाजिक कर्तव्य है। कृष्ण को देखकर यदि हमारी जीवंत चुनावी है और जिस प्रकृतिलिख ही जाता है तो मन में सदसृजितिवी का विकास भी होता है। कृष्णारोपण जीवन की वस्त्र, सून्दर और सुखी बनाने की एक योजना है। प्रति वर्ष हमें इस बोकाना में योगद राहबोन देना चाहिये।

हमें गदा पाव रखना चाहिये कि कृष्ण हमारे जिव है — जगत् जगदा के विदिकाल है कृष्ण ने आश्रय, आहार और वस्त्र हमारी तीन आगश्मकताओं की पुरी थी है।

गदा रखना

70

## बदक्षा हो तो ऐसी-साता ज्ञ जैसी



साता ज्ञ जैसी नहीं कोई कथा,  
हर बालक है तैयार करने की एक-दूजे की रक्षा।  
लड़िया पिटा, जनान की बुलबुला,  
लोहो की भेड़कर धीटने वाली को बिलबाया॥  
मुकुल हमारी कथा ज्ञ बन्धुटा,  
हर कर्त्ता ज्ञ ऐसे जैसे बजाज का स्कूटर।  
आमुलीय से अन्य जलोटा के भजन सुन सें,  
जौली भाई के युठललों से का भर सें॥  
जिव आरी है भासन की कथा,  
तुमिए अवनीश वी खट्टी-मीरी भारी।  
तुमीप ही कीलिंग और लोहो की बीलिंग,  
तुम नू जिल सो खुफ दिक्केज कालिंग॥  
जनान और जनपनेल हमारी कथा के पैश और गोश,  
इतने लकड़ी कान ही जायेंगे लड़े आपके कंडा।  
अवसर देखने ही अपनी साहसी को उपिलायी या शेर,  
जनोज से लिखावायुक्त कुछ वाक्य और उन्हें पढ़कर ही जाइए हैं॥  
अभिमेष और शहदार हमारी कथा बही है जैसे बनारसी फूल॥

गदा रखना

71

## हमारे विद्यालय और व्यायाम



व्यायाम की साथ व्यायाम की बहुत आवश्यकता है इसलिए हमारे विद्यालय में पढ़ने के साथ व्यायाम को भी महत्व दिया जाता है फिर याहे यो खेलकूद के लिए ये ही का फिर "पैलेन्ट"।

आजकल के व्यस्त होने की व्यायाम की जापी आवश्यकता है बड़ी यदि लौटे रवायत नहीं होगा तो आजकल के जीवन में यह चलना चरित्रम नहीं कर सकता जिसकी भी जाम में सकार रहने में करने की आवश्यकता है।

व्यायाम की जरूरी की साथ बच्चों को भी अवश्यकता है। आजकल विद्यार्थियों की सिर पर पढ़ने का शोषण कह रहा है फिर याहे वह बच्चों का शोषण ही या गृह कांव का व्यायाम से शरीर में ताजानी और फुर्ती आती है जो लोग बहस्तर में व्यायाम के अभाव से मोटे हो जाते हैं, जिन्हें हम प्यास से गम्भीर बुखार होना बोकर तुरील होना चुरिकल पहला है।

व्यायाम करने से शारीरिक और नामिलिक लाभ उभयं ही जाता है। जो लोग व्यायाम नहीं करते हैं फिरनी बार तो यह अपने जीवन से ही हाथ छों नेतरों है। वैज्ञानिक तो यहीं इक बाजी है कि व्यायाम करने से दिन के दौरे की संभावना बन हो जाती है। रामानुजन व्यायाम करने वाले लोगों की उम्र काफी हाथी होती है।

व्यायाम से नानु ऐसे विद्यालय उत्तम होता है। शरीर एवं नरीन की उत्तम है फिर प्रकाश हम यदि जिसी मरीन वा प्रतीन न करे तो वह उत्तम ही जाती है और हमें उत्तम की बोकर -होलिंग करनी पड़ती है उसी प्रकार यदि हम व्यायाम न करे तो नानव लरीर में भी उत्तमियों देखा हो जाती है। नानु शरीर के 'बोकर-होलिंग' के बाद भी उत्तमियों दूरी तरह दीक नहीं हो पाती है।

इन शरीरी उत्तमों को ज्ञान में रखने कुए हमारे विद्यालय में व्यायाम कराया जाता है। हमारे बच्चों में लाभ उत्तम होता है और उनमें ताजानी और फुर्ती आती है। व्यायाम बहुत जरूरी है।

## वैज्ञानिक जै असरवलन



तबदीलियों में कर्मी-कर्मी कुछ ऐसी घटनाएँ घट जाती हैं जो हमारे जीवन में बहाव को लिह एक अधिक ऊपर प्रोड जाती है। अद्यत ऐसी ही एक घटना का दर्शन में आकर्षण सुनाया है।

बात कुछ दिनों पहले भी है। वर्षी जल्दु का आगमन हुआ ही था, लोग खुशियों बना रहे थे, पर फिलों ज्ञान का फि कल का हीने बाला है। लोग जब युवक उठने कर अस्तवार पढ़ने लगे हो दे यह जागकर दंग रह गए कि दीर्घी जात में 'ऐमलस बैल' नामक बहावी का एक बड़ा नाम शील में लगा। कुछ दिनों बाद दिन, पहाड़ी का एक और हिस्सा इलास में समा गया। इस तरह से पश्चात जल दूर्दानी-गिरने के बल एक ही बात बची रहा था, और वह या — गृह्यवलन। कुछ लम्बा बाद इन घटनों का विवरन जल्द बन चमा। नामारिकों ने चहल की सीस ली। पर दूसरे ही दिन दिल्ली कालेज परिसर की तरफ से यद्युतने विशाक ने दूर्दानी-गिरने लगी। यह सब छोड़कर एक लापाह तक चला और किंव इन दूर्दानों के विसर्जने में एक अविकर मृत्युवलन का रूप ले लिया। दूर्दानी नारी पूरी दररु धारना हो गया और हजारी टांग बल्का शील में राखा गया। एक बड़ी घटनाल विसर्जने के ठड़ी सङ्क्रम भारी पूर्णता अवलम्ब हो गया। राजमयन भारी व 'खेड़ी लालड़' गायों की समस्त हेतीकोन, विजली और पांची की लालड़ने दूर नहीं। इस गृह्यवलन से पहाड़ी में जगह-जगह बदल जा गई और गहु के पेंड दूरकर लिय गय।

घटना की रूच कोई भी नामारिक नैन से सो नहीं पाया। बात गह बहों के निराने की भी आवाजों आती रही। सारे शहर में दहसत का मारील पैदा हो चमा। जो लोग आवाजों सुनकर बाल जा गए हो वे अंतरे के बावजूद भी गूल के गुवार जड़ते हुए देख रहे थे। मृत्युवलन के बापते ही एक पुतिस दस और वितारिकारी लहीं जा पहुंचे और बहन कार्पी में बद्र बरने लगे।

इस घटनाहों सभीयों की दासि के पीछे कंबल कुछ ही जातन थे — पैदों का जन्मानुष कटना, वैनीहाला में विल्ली हार अनीवीमित एवं अनीवीजित मवन निर्माण, बदनों के निर्माण में गहरी-गहरी नींव योद्धना लक्ष जगह-जगह निर्माण केन्द्र आवानामाइट का इस्तेमाल करना और बदनों के निर्माण में जालवार छस न बनाकर भारी छह्हीट 'सूखवर' का निर्माण करना।

दूसरी समय रहते पापोंक वरदणी वी रोकथान हेतु कठोर जादन नहीं राखा गये तथा वैनीहाल के नामारिक इस ओर जागकर नहीं हुए तो आने वाले कुछ ही बर्ची में वैनीहाल अपने समस्त जाकृष्णिक शैन्दर्य की खी बैठेगा।

## योग्यता में रहा वाया एक नया इतिहास



इस वर्ष नवले 11 मई को और पिर 13 मई को राजसभान के एक द्वीपे से लकड़ीखाड़ा में कुल चौंच चूमिंग परमाणु परीक्षण करके हमारे देश में अपनी ऐस्ट्रेंज शक्ति और अद्भुत वैज्ञानिक छन्दों का एक बार पिर से प्रदर्शन कर, सम्पूर्ण विश्व को हैला में ताज़ दिया है।

योग्यता में 11 मई को योग्यता 3 बजकर 21 मिनट पर 55 किलोटन टी०१० टी० हमला याले तीन चूमिंग परमाणु परीक्षण किए गये। उनमें परमाणु गौणिकी को दी गयी चूमिंग शिवाइन - नामिकीय विलोटन और नामिकीय संलयन-टी० ही लाभित है। नामिकीय विलोटन के तहत चूमु बम और नामिकीय संलयन प्रक्रिया के अंतर्गत हुक्काहूलन बन बनाने की कक्षा इनिल जनन के साथ-साथ एक अन्य 'सीमित शक्ति' संबंध - यानी 'लोईफल डिवाइस' का परीक्षण, हमारे प्रत्येकात्म उभि' के लिये बहुत ही उपयोगी है, ज्याकि इस फिल्म का परमाणु आनुवा, अग्नि वर आसानी से निट करके कृतिषु बनान तक प्रक्षेपित किया जा सकता है।

13 मई को योग्यता 12 बजकर 21 मिनट पर लाभान् एक फिलोटन टी०१० टी० कक्षा याले परमाणु वरीदान हे राख ही वह श्रेष्ठता समाप्त ही गयी। इस विघ्न को 'हालि' ७८ का नाम दिया गया।

18 मई, तन 1974 को योग्यता में ही, विष्वपूर्ण प्रक्रिया हुआ, भारत ने परमाणु चूमिंग किया था। उस पूरी संवेदी, सफल परीक्षण के पश्चात, उत्तमतीन प्रायानंदी, शीघ्रती इंटिरा नांदी को एक पूर्ण संदेश, "लाई चुहा हैज स्पाइलर" भेजा गया था। हाँगांवका, 18 मई, 24 और 11 मई ७४ दोनों ही दिन चुहा चूमिंग ही।

मैं यह कामना करता हूँ कि भारत का यह परमाणु कार्यक्रम उभाम अंतर्राष्ट्रीय प्रतिवेदी के बादकूद, राष्ट्रजना के सीधे तक पहुँचे और हानुअंती का दबाव करते हुए, विवरा का नहीं, बल्कि चूजन और जाति का एक नवा इतिहास रखे।



नैनीताल पहाड़ियों से दिशा एक मनमोहक नगर है। यहाँ पर्वटों के आवरण का प्रशुल कारण है यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य यहाँ की चोटियों से दिखने वाला हिमालय की चोटीयों और टिप्पों का विहंगम दृश्य लोगों की नैनीताल यात्रा की एक अविस्मरणीय दृश्य बनाता है। ऐसे तो हमने यह जगतपद नैनीताल ही है लेकिन मेरे लिया की तैनाती दिल्ली में रही। दिल्ली ही हम नैनीताल आने का सबस्य लिकाल ही लेते थे। बहवन से ही भी यहाँ होती थी कि मैं इन चोटियों पर चढ़ूँ और प्रकृति का भव्यतम आनंद लूँ। संदेश से भी यिता का स्थाननिराश नैनीताल में ही हो गया। श्रीम अदकला में एक दिन हमने यहाँ की सरसों और धोटी, धीना पीक, पर पहुँचने का यितीय लिया। यह मेरे लिए एक दीर्घचक्र दृश्य था। उसने घर से टोकी गकड़े अपने नाक-पित्ता के राश यात्री में बना। यहाँ प्लॉटी बहन भर में ही रहती। शायद पहले लिम्बात न थी। यात्री ने उत्तरों के बाद हमें नीन किलोमीटर की ऊंची चढ़ाई पहुँची थी। लगाकर यात्रावाल वही हमने पर यात्रा प्रारम्भ करी। गुरुआल में मैंने जरूर उत्तमहित होकर लैटी से छट्टम बहाने गुरु छिपे परन्तु तुम्हे मेरे पिलाई ने दीर्घ-दीर्घ चलने की सलाह दी। यह नुस्खे गूरी चढ़ाई चढ़ाने में जहाजता करती। हम पाताली, चमक-छाकड़ परवानी में यात्रा कर रहे थे। इसी तात में पर्यटक चोटी पर जा रहे थे। तुम्हे सभा कि हम यदवाजा का जास्ती आनंद हम ही प्राप्त कर रहे हैं। रातों में हमने कई अद्युत नजारे देते। मेरे पिलाई नाथे हुए कदमों से आगे बढ़ रहे हो जबकि बैरी मी ने कई बार यकान नहवाल करी इसलिए पैर धो-धोय में बैठ जा रही थी तथा मैं उन्हें सहायता देते हुए अपने नंतरी की ओर झटकर हो रहा था। यात्रा चाहनुव अग्रीयी थी। बोली की दृष्टि से पत्ताली से निकलती आयाज से धीक कर कई बार यांत्री नुरियों आजाज देखत अपनी नाराजी व्यक्त करती थी दिल्ली। एक बार तो हिरन का एक प्यासा स्वावलम्बी को कुलाची बपता हुआ हमारे पास से गुरुतः। बुरांना, बौज तथा देवदार के पाने धूलों के बीच से गुजरती हुए बहना सचमुच बहुत अस्त लग रहा था नुस्खे। रातों में कई जगह नीव की छोटें-छोटे (लगभग आठ से बारह बर्ष की) बच्चे लड़की बैनकल उनका गद्दा बनाते हुए दिखे कई जगह तो अनेक बच्चों ने लकड़ी हरे सूखी बरियों बलाजन जंगल में बगाल छाते को चरितार्थ किया। श्रीम महिलाएं अपने बड़े-बड़ी के लिए यात्रा से जाती हुई देखती रहीं। यह सब देखकर मुझे लगा कि हम तो लेकर धूमने आए हैं लेकिन पायीयों के लिए यहाँ की चारहें, पहाड़ियों, पलवर रखे गेह-पीथे निहित ही परबनिक होते हैं। यह लगभग छह घण्टे वाली यात्रा के दूकानदार को जास्ती से तीन बाप बनाने की कहा। दुकान में कई लड़की के बहुं घिरे हुए हो जाकर-हारे हम उन पर निकाल होकर बैठ गए। उस दीर्घी-बोटी पर

पौरीताकर हमने मंत्रालय वापस कर लाया दिया। उस दुकान से सौ जटाम आने चलते ही हम नैगीताल की दोषी और बोली पर चढ़ूंचे। वहाँ से आते और दूर-दूर का जवाब दिल रहा कि । एक तरफ डिग्गलट की बातिली बोलियाँ थीं तो दूसरी तरफ या तराई-भागर का गै-गांवी शूलाका और गौत्र थी दूबकरह नेहीं बीज खिलने लैसी नारे बहुत सुन्दर पिराहं दे रही थीं। यह दो देखकर ऐसी दुर्सी का गिरावना न रहा। मैंने निर्भय लिया कि भौतिक खिलने पर मैं फिर इस पदलाला पर आड़ीगा। आदे थाटे कम्पोरी के बीच हिमालय के डिलगम सूखा देशाने के बाद इस रोटी नींथे चलते। मैं लगालर चोपां रहा कि हम लिखत करे और उत्तमित बग ले जब तो कहीं भी घटूंचना कठिन नहीं है।

दिल्ली भौतिक  
१८

## इन्होंने जलाला विवरण



हुआ जान हमारे विद्यालय में कलाकार दिवस अनोखे रूप से नवाया गया। जामानाहः हमारे प्रधान अध्यक्षका हस भीमारिंग गान्धीह का प्रशंसन लक्ष्य के परंतु हुए जाल पानीने गक्का दस के बड़ी योग स्वाक्षरता दिल्ली जलालीह का प्रयोगक बनाया। भीता कल की जलालाप ली लेहन नंदा पर भाषण देने तक की लिंगेवारी गक्का दस पर थी। बहुत हिंगी भी कैपारी कम्पे के बाब आहिंसकार वह बहा दिन आ, यिस दिन 52 वाल पहले जालजालियों ने विदित सरकार से झागना देता, जलाना गया जापान का नियम। यह हमारे लिए जलाल गीरम का दिन था।

जनवाह जलाला सन् 1998 एक भीना दिन था। जल कान बारिल लूह थी और वह कुछ गीता था। जीते ही भड़ी मैं नी बजे, हमारा जगारीह बहुत हुआ। जलालर लाली जल्यामक गैल्लूट थे और दाढ़ के ऊपर चूल्हारा लग रहे थे। जलम कृष्णनानी के जावन से भीनवारिंग जलारोह बहुत हुआ। भारत की विदित बाधाएँ उन्होंने आज्ञे राखियों और जिती थे दूसरे से दूसरी और देता लगा कि आज ये हमारे देत में समझौति जीवित है। हमने आजारी जी जलाई में नहींनिटों बाले हर भैंसिया, हर जली, हर मारी दरोक की आज्ञा की जाति के लिए बार्वना थी। जलारोह का अन्य एक देश-जगति गौत गा कर हुआ। हन लब बालों की जान में रखकर हम जलार गह रहने हैं कि पह दिन सिंक इन्होंने लिए नहीं परन्तु हर गारीब के लिए दूसरी और गीरम का दिन था।

भौतिक विवरण

१९

## छात्र जीवन और अनुशासन



अनुशासन यों तो संकृत मानव जीवन का एक अधिकार होता है, परन्तु अनुशासन वह सबसे अधिक नकार लात-जीवन में होता है। लातवाकाल मनुष्य का अधिकारित रूप होता है, और वह अवस्था तूल ली तो कोई लाभ की कमी नहीं होती है जिसे आजनी से सही दिशा में गोड़ा जा सकता है, और यिर वह जीवनार बढ़ी रखती है। उसी बत जीवन के सब है। आप विद्यार्थी योग्यता से ही आप को अनुशासन में रखा जाए तो वह आपे चलाकूर सफल होता है, और अनुशासनहीन छात्र आपने जपनों को दूर करने में आपने को जराफ़त पाता है।

अनुशासन का साधिकार यह होता है जातन के दोषों कलाना, यानि आपने गुलजानों और हितोपेयों हाता दिखाए गए उसी रासी पर घलना और नियन्त्रण जीवन यापन करना। जातवाकाल में न हुए वरिष्ठता होती है और न विद्यार इसलिए अनुशासन में रहना विद्यार्थी जीवन में सफलता नहीं कुंजती है। अनुशासनहीन छात्र न तो गाढ़ का लादनी नामित बन जाकरा है, और न ही आपने अतिगत जीवन में सफल हो जाता है।

अनुशासनहीनता आप देख में कफी बरन सीमा पर है। जिन टिकट यात्रा, बीच सदक विनी को पिट्ठा देना, कठायों में न आना आदि जो विद्यार्थी अपना गौरव लगाते हैं। जात जीवन में फैलती हुस कनूशासनहीनता के कई कारण हैं। इन कारणों में मुख्य है याता-पिता और विद्या संस्थानों द्वारा अनुशासन में डिमार्ड। हमसे विद्यार्थी रखते ही अनुशासनहीन बनता ही है, आपने संघर्ष में आपने याते विद्यार्थी को भी अनुशासनहीन बना देता है। इतना एकमात्र राष्ट्र है जहाँ जित हाता आपने बच्चे नह कही निगरानी रखना, और उसे कर्तव्यों और अकर्तव्यों का ज्ञान कराना। विद्यार्थी की अवधान ने तो रखना चाहिए। इनसे वह पूरे कर्म बहार कर आपसे अंक लाकर माता-पिता को ड्रेसन करता है।

इत में यह तथ्य जापने चाहा है कि अनुशासन के दिना देता रहने वाली जह लकड़ा। देश की चालाहे के लिए बहुत्य पश्चात्ता और लम्ब नामितों की जरूरत होती है, जो केवल अनुशासन के माध्यम से ही जाते हैं देश के इन अर्थात् का निर्माण हमारे जी गुलजान, माता-पिता और डिलीपी करते हैं, उनकी हमारा जह शर्त: नगर।